संकलित परीक्षा प्रथम

पाठ - सूची

विषय - हिंदी

कक्षा - दसवीं

1. पाठ्यक्रम
2. अपठित गद्यांश
3. अपठित काव्यांश
4. पद परिचय
5. वाक्य भेद - रचना के आधार पर
6. रस
7. सार लेखन
8. नेताजी का चश्मा - स्वयं प्रकाश
9. बालगोबिन भगत - रामबृक्ष बेनीपुरी
10. पद - सूरदास
11. सवैया - देव
12. माता का आँचल - शिवपूजन सहाय
13. लखनवी अंदाज -यशपाल
14. मानवीय करुणा की दिव्य चमक - सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
15. आत्मकथ्य - जयशंकर प्रसाद
16. उत्साह - निराला
17. यह दंतुरित मुस्कान - नागार्जुन
18. फसल - नागार्जुन
19. जार्ज पंचम की नाक - कमलेश्वर
20. आदर्श प्रश्न

हिन्दी पाठ्यक्रम-अ कोड संख्या (002)

कक्षा दसवी हिन्दी 'अ'- संकलित परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

2015-2016

संकलित परीक्षा 1 (भार 30%) (अप्रैल - सितम्बर) तथा संकलित परीक्षा 2 (भार 30%)

(अक्टूबर से मार्च) हेतु भार विभाजन

			विषयवस्तु	उप भार	कुल भार
1	**पठन कौशल गधांस व काव्यांश पर शीर्षक का चुनाव, विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु / संरचना आदि पर बहुविकल्पी प्रश्न**				20
	(अ)		दो अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
	(ब)		दो अपठित काव्यांश (100 से 150 शब्दों के)	10	
2	**व्याकरण के लिए निर्धारित विषयों पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/संरचना आदि पर प्रश्न**			15	15
3	**पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग -2व पूरकपाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-2**				35
	(अ)	**गद्यांश खण्ड**		15	
		1	क्षितिज से निर्धारित पाठों में से गद्यांश के आधार पर विषय-वस्तु का बोध, भाषिक बिंदु/ संरचना आदि पर प्रश्न |	05	
		2	क्षितिज से निर्धारित गद्य पाठों में से गद्यांश के आधार विद्यार्थियों की उच्च चिंतन व मनन क्षमताओं का आकलन करने हेतु प्रश्न।	10	
	(ब)	काव्य खण्ड		15	
		1	काव्यबोध व काव्य पर स्वंय की सोच की परख करने हेतु क्षितिज से निर्धरित कविताओं में से काव्यांश के आधार पर प्रश्न |	05	
		2	क्षितिज से निर्धारित कविताओं के आधार पर विद्यार्थियों का काव्यबोध परखने हेतु प्रश्न |	10	
	(स)	पूरक पाठ्यपुस्तक कृतिका भाग-2 पूरक पुस्तिका 'कृतिका' के निर्धारित पाठों पर आधारित एक **मूल्य परक** प्रश्न पूछा जाएगा | इस प्रश्न का कुल भार पाँच अंक होगा | ये प्रश्न विद्यार्थियों के पाठ पर आधारित मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को परखने के लिए होगा |		05	35

4		लेखन		20
	(अ)	विभिन्न विषयों और संदर्भो पर विद्यार्थियों के तर्कसंगत विचार प्रकट करने की क्षमता को परखने के लिए संकेत बिन्दुयों पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए विषयों पर 200 से 250 शब्दों में किसी एक विषय प् निबंध |	10	
	(ब)	अभिव्यक्ति की क्षमता पर केन्द्रित औपचारिक अथवा अनौपचारिक विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र|	5	10
	(स)	दिए गए गद्यांश का 'सार लेखन ' |	5	
		कुल		90

संकलित परीक्षा I	30%
संकलित परीक्षा II	30%
फॉरमेटिव परीक्षा ऍफ़.ए.-I (भार 10%), समयस्या समाधान आकलन (भार 10%) एफ.ए.-३ (भार 10%) एफ.ए.-4 (भार 10%)	40%
कुल भार	100%

(मूल्यपरक प्रशन पूर्वक पाठ्य पुस्तक पे आधारित होगा । इसके लिए पांच अंक निर्धारित है।)

टिप्पणी :- 1. संकलित परीक्षाओं का कुल भार ६०% तथा फॉरमेंटिव परीक्षाओं का कुल भार ४० प्रतिशत होगा । फॉरमेंटिव परीक्षाओं के ४० प्रतिशत में से प्रत्येक सत्रमें 5 प्रतिशत में से प्रत्येकभाग (सम्पूर्ण वर्ष में 10 प्रतिशत) श्रवण व वाचन कौशलों के परीक्षण हेतु आरक्षित होगा । शेष 30 प्रतिशत फॉरमेंटिव मूल्यांकन, पाठ्यचर्या के अन्य अंगों; जैसे-पठन, लेखन, व्याकरण,पाठ्यपुस्तक व पूरक पाठ्यपुस्तक पर आधारित होगा । इसमें बोलने, सुनने, लिखने व बोध पे आधारित मौखिक, लिखित अथवा कार्यकलापों पर आधारित परीक्षण किया जा सकता है ।

2. संकलित परीक्षा एक (एस-1) 90 अंकों की होगी । 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात् ३० अंकों में से परिवर्तित कर लिया जाएगा तदुपरांत ग्रेड निर्धारण किया जाएगा तथा संकलित परीक्षा दो (एस-2) 90 अंकों की होगी व 90 अंकों को मूल्यांकन के पश्चात् 30 अंकों में से परिवर्तित करने के उपरांत ग्रेड का निर्धारण किया जाएगा ।

कक्षा दसवीं हिंदी अ - संकलित एवं फॉरमेटिव परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम का विभाजन

क्रम सं	पाठयपुस्तक	प्रथम सत्र (अप्रैल से सितम्बर)			द्वितीय सत्र (अक्टूबर से मार्च)		
	क्षितिज भाग-2	**FA-1**	**FA-2**	**SA-I**	**FA-3**	**FA-4**	**SA-2**
	गद्य खंड						
10	स्वयं प्रकाश -नेताजी का चश्मा	✓		✓			
11	रामवृक्ष बेनीपुरी -बालगोबिन भगत	✓		✓			
12	यशपाल -लखनवी अंदाज			✓			
13	सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - मानवीय करुणा की दिव्य चमक			✓			
14	मन्नू भंडारी - एक कहानी यह भी				✓		✓
15	महावीर प्रसाद द्विवेदी - स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतको का खंडन				✓		✓
16	यतीन्द्र मिश्र - नौबत खाने में इबादत						✓
17	भदंत आनंद कौसल्यायन - संस्कृति						✓
	काव्य खंड						
1.	सूरदास- उधौ तुम हौ अति बडभागी ..	✓		✓			✓
2.	तुलसीदास - राम - लक्ष्मण - परशुराम संवाद				✓		✓
3.	देव - पाण्यानी नुपुर मंजू बजै ...	✓		✓			
4.	जयशंकर प्रसाद- आत्मकथ्य	✓		✓			

5	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' - उत्साह ,अट नहीं रही है		✓	✓			
6	नागार्जुन -यह दंतुरित मुस्कान ,फसल		✓	✓			
7.	गिरिजा कुमार माथुर - छाया मत छूना				✓		✓
8.	ऋतुराज -कन्यादान						✓
9.	मंगलेश डबराल - संगतकार						✓
	कृतिका भाग -2	**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA 1 30**	**FA 3 10**	**FA 4 / PSA 10**	**SA 2 30**
1.	शिवपूजन सहाय - माता का आँचल	✓		✓			
2.	कमलेश्वर - जार्ज पंचम की नाक		✓	✓			
3.	मधु कांकरिया- साना-साना **जोड़ि**				✓		✓
4	शिव प्रसाद मिश्र 'रुद्र' एही ठयाँझुलनी हेरानी हो रामा						✓
5	अज्ञेय- मैं क्यों लिखता हूँ						✓
	व्याकरण	**FA 1 10**	**FA2 10**	**SA 1 30**	**FA 3 10**	**FA 4 / PSA 10**	**SA 2 30**
1	रचना के आधार पर वाक्य-भेद (3अंक)	✓	✓	✓			✓
2	वाच्य (4अंक)	✓	✓	✓	✓		✓
3	पद-परिचय (4अंक)	✓	✓	✓	✓		✓
4	रस (4अंक)	✓	✓	✓	✓		✓
5	अपठित गद्यांश' (5+5=10)			✓			✓
6	अपठित काव्यांश (5+5=10)			✓			✓
7	पत्र-लेखन (5 अंक)	✓		✓			✓
8	निबंध-लेखन (10अंक)			✓			✓
9	सार-लेखन(5 अंक)			✓			✓

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, पटना संभाग

विषय-हिन्दी

सामान्य निर्देश :

अपठित का अर्थ होता है जो पढ़ा नहीं गया अर्थात् जो पाठ्यक्रम की पुस्तिका से नहीं लिया जाता है | गद्यांश व पद्यांश पर आधारित प्रश्नों पूछे जाते हैं | इससे छात्रों का मानसिक व्यायाम होता है | उनके साहित्यिक ज्ञान क्षेत्र का विस्तार भी होता है, साथ ही छात्रों की व्यक्तिगत योग्यता एवं अभिव्यक्ति की क्षमता भी बढ़ती है।

विधि :

अपठित गद्यांश व पद्यांश पर आधारित प्रश्नों को हल करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए |

1. दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़े |
2. पढ़तें समय मुख्य बातों को रेखांकित करें |
3. प्रश्नों के उत्तर देते समय भाषा सरल होनी चाहिए |
4. उत्तर सरल, संक्षिप्त व सहज होने चाहिए |
5. उत्तर में जितना पूछा जाय उतना ही लिखना चाहिए |
6. शीर्षक सम्बन्धी प्रश्नों का गद्यांश व पद्यांश के केन्द्रीय भाव को ध्यान में रखकर उत्तर दीजिए |
7. उत्तर सदैव पूर्ण वाक्य में दें |

प्रथम सत्र अप्रैल से सितम्बर

खण्ड-(क)

अपठित गद्यांश

1. निम्लिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छाँटकर लिखिए |

(अ) एक बाप ने बेटे को भी मूर्तिकला सिखाई | दोनों हाट से जाते और अपनी-अपनी मूर्तियाँ बेचकर आते| बाप की मूर्ति डेढ़ दो रूपये में बिकती पर बेटे की मूर्तियों का मूल्य केवल आठ दस आने से अधिक न मिलता | हाट से लौटने पर बेटे के पास बैठकर बाप उसकी मूर्तियों में रही त्रुटियों को समझाता और अगले दिन उन्हें सुधारने के लिए कहता | यह क्रम वर्षों से चलता रहा | लड़का समझदार था | उसने पिता की बातों को ध्यान से सुनी और अपनी कला में सुधार करने का प्रयत्न करता रहा कुछ समय बाद लड़के की मूर्तियाँ भी डेढ़ रूपये की बिकने लगी | बाप भी उसी तरह समझाता और मूर्तियों में होने वाले दोषों की तरफ उसका ध्यान खींचता | बेटे ने और अधिक ध्यान दिया तो कला भी और अधिक निखरी | मूर्तियां पांच-पांच रूपये की बिकने लगी | सुधार के लिए समझने का क्रम बाप ने तब भी बंद न किया | एक दिन बेटे ने झुझलाकर कहा आप तो दोष निकालने की बात बंद ही नहीं करते | मेरी कला अब तो आप से भी अच्छी है | मुझे मूर्ति के पांच रूपये मिलते हैं जबकि आपको दो ही रूपये | बाप ने कहा बेटा, जब मैं तुम्हारी उम्र का था तब मुझे अपनी कला की पूर्णता का अहंकार हो गया और फिर सुधार की बात सोचना छोड़ दिया | तब से मेरी प्रगति रुक गई और दो रुपये से अधिक की मूर्तियां न बना सका | मैं चाहता हूँ वह भूल तुम न करो | अपनी त्रुटियों को समझने और सुधारने का क्रम सदा जारी रखो ताकि बहुमूल्य मूर्तियां बनाने वाले श्रेणी में पहुँच सको |

1. बाप और बेटे क्या बनाते थे?

   (क) मूर्तियाँ   (ख) मूर्तिकला

   (ग) रूपये   (घ) कुछ नहीं

2. हाट से लौटकर बाप अपने बेटे को क्या समझाता था ?

   (क) मूर्तियों   (ख) मूर्तियों की त्रुटियों को

   (ग) मूर्तियों की कला को   (घ) मूर्तियों की बिक्री को

3. प्रारम्भ में बेटे की मूर्तियों का मूल्य कितना मिलता था?

(क) आठ-दस आने (ख) दस- बारह आने

(ग) छः-सात आने (घ) चार- छः आने

4. बेटा बाप से क्यों झुँझला गया?

(क) बाप द्वारा बेटे की मूर्तियों में निरंतर दोष निकालने के कारण

(ख) बाप द्वारा बेटे की मूर्तियों की प्रशंसा

(ग) बेटे की मूर्तियों की कीमत पांच रूपये मिलने के कारण

(घ) बेटे में घमंड होने के कारण

5. आपकीमूर्तियाँ हमेशा डेढ़ दो रूपये में ही क्यों बिकती रहीं ?

(क) बाप में कला की पूर्णता का अहंकार हो गया था |

(ख) बाप की मूर्तियाँ कच्ची मिट्टी की थी |

(ग) बाप सस्ता बेचने का आदी हो गया था |

(घ) बाप से देहाती लोग ही मूर्तियों खरीदते थे |

उत्तर -1. (क) 2.(ख) 3.(क) 4.(क) 5.(क)

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए |

(ब) अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत के प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है | इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि कर्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव, सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्वपूर्ण माने गये हैं | इन सभी गुणों का विकास एक बालक में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है | वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है, किन्तु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है | जिस प्रकार एक व्यक्ति को समाज में रहकर अपने व्यवहार से कर्तव्य और अधिकार की भावना से भावुक रहना चाहिए | उसका कर्तव्य हो जाता है कि न तो वह स्वयं कोई ऐसा काम करें और न ही दूसरों को करने दें, जिससे देश के सम्मान, सम्पत्ति और स्वाभिमान को ठेस **पहुँचें** |

1. अच्छे नागरिक बनने के गुणों का विकास मनुष्य में कब से करना चाहिए ?

(क) बाल्यावस्था से (ख) किशोरावस्था से

(ग) युवावस्था से (घ) किसी भी अवस्था से

2. किसकी मधुरता सबके लिए सुखदायी होती है ?

(क) खान-पान की (ख) पहनने ओढ़ने की

(ग) वाणी व्यवहार की (घ) घर- बाहर की

3. कैसा व्यक्ति स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग करता है ?

(क) अवसरवादी (ख) अहंकारी

(ग) विनीत (घ) अलमस्त

4. सहयोग और सेवा की भावना से आशय है ?

(क) सेवा भावना (ख) सहकारिता

(ग) सहिष्णुता (घ) सद्भावना

5. इस गधांश के लिए उपर्युक्त शीर्षक होगा :

(क) अधिकार और कर्तव्य (ख) अच्छा नागरिक

(ग) आदर्श जीवन (घ) सामाजिक जीवन

उत्तर -1.(क) 2.(ग) 3.(ग) 4.(ख) 5.(ख)

3. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छाँटकर लिखिए |

(स) आज हम एक स्वतंत्र राष्ट्र की स्थिति पा चुके हैं | राष्ट्र की अनिवार्य विशेषताओं में दो हमारे पास हैं -भौगोलिक अखंडता और सांस्कृतिक एकता परन्तु अभी तक हम उस वाणी को प्राप्त नहीं कर सके हैं जिसमें एक स्वतंत्र राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के निकट अपना परिचय देता हैं | जहां तक बहुभाषा भाषी होने का प्रश्न है ऐसे देशों की संख्या कम नहीं है, जिनके भिन्न भागों में भिन्न भाषाओं की स्थिति है | पर उनकी अविच्छिन्न स्वतंत्रता की परंपरा ने उन्हें विषम स्वरों से एक राग रच लेने की क्षमता दे दी है | हमारे देश की कथा कुछ दूसरी है | हमारी परतंत्रता आंधी तूफान की तरह नहीं आई जिसका आकस्मिक संपर्क तीव्र अनुभूति से अस्तित्व को कंपित कर देता है | वह तो रोग के कीटाणु लाने वाले मंद समीर के समान साँस में समाकर शरीर में व्याप्त हो गई है | हमने अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से उसके भार को दुर्वह नहीं अनुभव किया और हमें यह ऐतिहासिक सत्य भी विस्मृत हो गायकी की कोई भी विजेता विजित कर राजनैतिक प्रभुत्व पाकर ही संतुष्ट नहीं होता क्योकि सांस्कृतिक प्रभुत्व के बिना राजनैतिक विजय न पूर्ण है न स्थायी | घटनाएँ संस्कारों में चिरजीवन पाती है और संस्कार के अक्षय वाहक शिक्षा, साहित्य कला आदि है | दीर्घकाल से विदेशी भाषा हमारे विचार विनिमय और शिक्षा का माध्यम ही नहीं रही वह हमारे विद्वान और संस्कृत होने का

प्रमाण भी मानी जाती रही है | ऐसी स्थिति में यदि हममें से अनेक उसके अभाव में तो चिकित्सा संभव नहीं होती | राष्ट्र जीवन की पूर्णता के लिए उसके मनोजगत को मुक्त करना होगा और यह कार्य विशेष प्रयत्न साध्य है क्योंकि शरीर को बांधने वाली श्रृंखला को जकड़ने वाली श्रृंखला अधिक ê< होती हैं |

1. स्वतंत्रता प्राप्त करने के पश्चात् भी राष्ट्रभाषा के रूप में हम अब तक ठीक प्रकार के क्या प्राप्त नहीं कर पाए हैं ?

(क) वाणी (ख) विचार

(ग) भाव (घ) सोच-समझ

2. हमारे यहाँ परतंत्रता आई

(क) आंधी के समान (ख) तूफान के समान

(ग) रोग के कीटाणु लाने वाले मंद समीर के समान (घ) वर्षा के समान

3. शिक्षा, कला, साहित्य आदि किसके वाहक हैं ?

(क) परिवार (ख) व्यक्ति

(ग) समाज (घ) संस्कार

4. हम किसके अभाव में जीवित रहने की कल्पना से सिहर उठते हैं ?

(क) लोक भाषा (ख) मातृभाषा

(ग) विदेश भाषा (घ) राजभाषा

5. जीवन की पूर्णता के लिए आवश्यक है ?

(क) सुख सुविधाओं का होना (ख) उसके मनोजगत को मुक्त करना

(ग) अपनी वाणी का होना (घ) स्वतंत्र

4. निम्लिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए |

(द) समस्त ग्रंथों एवं ज्ञानी अनुभवी जनों का कहना है की जीवन एक कर्मक्षेत्र है | हमें कर्म के लिए जीवन मिला है | कठिनाइयों एवं दुःख और कष्ट हमारे शत्रु हैं जिनका हमें सामना करना है और उनके विरुद्ध संघर्ष करके हमे विजयी बनाना है वृद्धा दुःख अंग्रेज़ी के यशस्वी नाटककार शेक्सपियर ने ठीक ही कहा है कि “ कायर अपनी मृत्यु से पूर्ण अनेक बार मृत्यु का अनुभव कर चुके हैं | किन्तु वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते” |

विश्व के प्रायः समस्त महापुरुषों के जीवन वृत अमरीका के निर्माता जार्ज वाशिंगटन और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन से लेकर भारत के राष्ट्रपति महात्मा गाँधी और भारत के प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के जीवन चरित्र हमें यह शिक्षा देते हैं की महानता का रहस्य संघर्ष शीलता, अपराजेय व्यक्तित्व है | इन महापुरुषों को जीवन में अनेक संकटों का सामना करना

पड़ता था | परन्तु वे घबराए नहीं संघर्ष करते रहे और अंत में सफल हुए संघर्ष के मार्ग में अकेला ही चलना पड़ता है | कोई बाहरी शक्ति आपको सहायता नहीं करती हैं | परिश्रम, दृढ़ इच्छाशक्ति व लगन आदि मानवीय गुण व्यक्ति को संघर्ष करने और जीवन में सफलता प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं 1. इस अनुच्छेद का उपयुक्त शीर्षक दीजिए :

(क)जीवन एक कर्मक्षेत्र (ख) सफलता का रहस्स्य

(ग) संघर्ष और सफलता (घ) बढ़ते चलो

2. अपराजेय का विलोम है :

(क) पराजेय (ख) पराजित

(ग) अजय (घ) अजेय

3. अनुभवी जनों का कहना है की जीवन कर्मक्षेत्र है रचना की दृष्टि से कैसा वाक्य है ?

(क) सरल (ख) संयुक्त

(ग) मिश्र (घ) साधारण

4. यह पाठ आपको क्या प्रेरणा देता है ?

(क) संघर्ष की (ख) कर्म की

(ग) शक्ति की (घ) मौज मस्ती की

5. वीर एक से अधिक बार कभी नहीं मरते का आशय है :

(क) वीर एक बार ही मरते है (ख) वीर पहली बार मर जाते हैं

(ग) वीर मर-मरकर नहीं जीते (घ) वीर अमर हो जाते है

अपठित बोध- काव्यांश

1. निम्लिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के विकल्प चुनकर लिखिए -

(अ) चले गाँव की ओर जहाँ पर हरे खेत लहराते,
मेड़ो पर है कृषक घूमते सुख से गीत गाते |
गेहूँ बना मटर जौ लेकर सिर पर भार खरे हैं ,
बीज-बीज में प्रहरी जैसे दिखते वृक्ष अड़े हैं |
चले गाँव की ओर झोंपड़ी जहाँ झुके धरती में,
तरु के नीचे खेल रहे हैं बच्चे निज मस्ती में |
कटी पर लिए गगरिया गोरी आती है बलखाती,
देख किसी गुरुजन को सम्मुख सहसा शरमा जाती |

1. खेतों में गेहूँ चना मटर कैसे दिखाई देते हैं ?
(क) लहराते (ख) गाते हुए
(ग) अड़े हुए (घ) बोझ लिए खड़े हुए

2. कवि ने प्रहरी किन्हें कहा है ?
(क) गेहूँ चना मटर (ख) कृषकों
(ग) खेतों (घ) वृक्षों

3. बच्चे कहाँ खेल रहे हैं ?
(क) तरु के नीचे (ख) खेत
(ग) छांव (घ) घर

4. गोरी क्यों शरमा जाती हैं ?
(क) उसके किसी ने बलखाते देख लिया है (ख) उसके सिर पर भारी गगरिया है
(ग) छोटे बच्चों को देखकर (घ) सहसा किसी गुरुजन के सम्मुख आ जाने पर

5. वृक्ष शब्द का पर्यायवाची है :
(क) वट (ख) पौधा
(ग) तरु (घ) पुष्प

उत्तर : 1.(घ) 2.(घ) 3.(क) 4.(घ) 5.(ग)

2. निम्लिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए |

(ब) बहुत नाज था अपने सुख पर
पर न टिक दो दिन सुख वैभव
एक बूंद भी नहीं रहा वह
देखाँ जब दिन रात चीरवन
नित कराह आहें भरता है
मैंने दुःख कातर हो होकर
जब जब दर- दर कर फैलाया
सुख के अभिलाषी मन मेरे

तब तब सदा निरादार पाया
ठोकर खा-खाकर पाया है
दुःख का कारण कायरता है |

1. कवि को किस पर नाज था?

(क) दुःख पर (ख) सुख पर
(ग) कविता पर (घ) लेखन पर

2. कवि किसको सागर समझ बैठा?

(क) क्षणिक सुख को (ख) सुख दुःख को
(ग) कविता पर (घ) कायरता को

3.सुख और दुख कैसे हैं ?

(क) बहुत अच्छे (ख) क्षणभंगुर
(ग) धूप छांव (घ) वैभव संपन्न

4. कवि ने सुख का अभिलाषा में क्या पाया ?

(क) निरादर (ख) सुख का सागर
(ग) मान (घ) भौतिक सुख

5. कवि ने दुख का कारण किसे माना है ?

(क) सुख को (ख) सुख दुःख को
(ग) वीरता को (घ) कायरता को

उत्तर : 1.(ख) 2.(ख) 3.(ख) 4.(क) 5.(घ)

3. निम्लिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर में सही उत्तर छांटकर लिखिए |

(स) संकटों से वीर घबराते नहीं,

आपदाएं देख छिप जाते नहीं |
लग गए जिस काम में पूरा किया |
काम करके व्यर्थ पछताते नहीं
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता,
कर्मवीर को न इससे वास्ता |
बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ चले,
कठिनतर गिरिश्रृंग ऊपर चढ़ चले |
कठिन पथ को देख मुस्कुराते सदा,
संकटों के बीच वे गाते सदा |
है असम्भव कुछ नही उनके लिए
सरल संभव कर दिखाते वे सदा |
यह असंभव कायरों का शब्द है
कहा था नेपोलियन ने एक
दिन | सच बताऊँ जिंदगी ही
व्यर्थ है, दर्प बिन उत्साह बिन और
शक्ति बिना |

1.कर्मवीरों को किसकी परवाह नहीं होती ?

(क) संकटों की (ख) कठिन रास्तों की

(ग) आपदाओं की (घ) इन सभी की

2. कर्मवीर संकट को देखकर क्या करते है ?

(क) घबरा जाते हैं (ख) गीत गाते हैं

(ग) दूर हट जाते हैं (घ) काम नहीं करते

3. असंभव शब्द का प्रयोग कौन करता है ?

(क) हिम्मत वाले (ख) कायर

(ग) लोभी (घ) कर्मवीर

4. असंभव कायरों का शब्द है - किसने कहा था ?

(क) कवि ने (ख) नेताजी ने

(ग) गाँधी जी ने (घ) नेपोलियन ने

5. कविता में कौन सा समास रस प्रवाहित है?

(क) करुण रस (ख) वीर रस (ग) रौद्र रस (घ) हास्य रस

उत्तर : 1.(घ) 2.(ख) 3.(ख) 4.(घ) 5.(ख)

संकलित परीक्षा – FA -1 के लिए सहायक सामग्री

3. पद- परिचय

शब्दों और पद में अंतर -‘ शब्द ‘ भाषा की स्वतंत्र इकाई है | जब शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता हैं, तो पद कहलाता है |

जैसे - ‘ लड़का ‘ एक स्वतंत्र शब्द है |
लड़का घर जाता है |

पद - परिचय -वाक्य में प्रयुक्त पदों का विस्तृत व्याकरणिक परिचय देना ‘ पद-परिचय ‘ कहलाता है|

जैसे - लड़का घर जाता हैं |

‘लड़का ‘ पद काव्याकरणिक परिचय-जातिवाचक, संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक ‘जाता है ’ क्रिया का कर्ता |

पद -परिचय देते समय बातों की जानकारी होनी आवश्यक है , वे हैं -

संज्ञा -संज्ञा के तीन भेद हैं -1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा 3. भाववाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा लिंग-पुल्लिग़, स्त्रीलिंग |

वचन - एकवचन या बहुवचन | कारक – कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदाय कारक, अपादान |

सर्वनाम- सर्वनाम के छः भेद होते हैं- पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम, अनिश्चयवाचक सर्वनाम, सम्बम्ध्वाचक, प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम | इनका लिंग, वचन, कारक, क्रिया के साथ संबंध बताना |

क्रिया -क्रिया के दो भेद होते हैं | अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया | लिंग, वचन, धातु, काल, वाच्य, प्रयोग आदि |

क्रिया-विशेषण -क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं | कालवाच्य क्रिया विशेषण, स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, परिणामवाचक क्रिया विशेषण, तथा उस क्रिया का उल्लेख करना जिसकी विशेषण बता रहा हैं |

समुच्चय बोधक अव्यय- इसके को भेद होते हैं - समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय, व्यधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय | यह जिन शब्दों को मिला रहा है, उनका उल्लेख करना |

संबंधबोधक अव्यय-जिन संज्ञा या सर्वनाम में संबंध बताया जा रहा है उसका उल्लेख करना | विस्मयादिबोधक अव्यय-जो भाव प्रकट हो रहा है उसका उल्लेख करना |

उदाहरण स्वरूप कुछ पदों का परिचय दिया जा रहा है|
(क) मैं कल बीमार था, इसलिए विदयालय नहीं आया |

मैं - सर्वनाम, पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, था ओर 'आया' क्रिया का कर्ता |
विद्यालय- संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग , एकवचन, कर्मकारक, 'आया' क्रिया का अधिकारण |
(ख) यह घड़ी मेरे बड़े भाई ने दी है |
यह - विशेषण, गुणवाचक विशेषण ,स्त्रीलिंग , एकवचन, 'घड़ी' विशेष्य |
बड़े - विशेषण, गुणवाचक विशेषण , पुल्लिंग एकवचन, 'भाई' विशेष्य |
(ग) नितिन दसवीं कक्षा में पढ़ता है |
कक्षा- संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन , अधिकरण कारक,'पढ़ता ' है | क्रिया का अधिकरण (स्थान) |
(घ) बच्चों ने अपना काम कर लिया था |
बच्चों ने - संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन, कर्ताकारक,' कर लिया था ' क्रिया का कर्ता |
कर लिया था- क्रिया, सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग बहुवचन, 'कर - धातु ' भूतकाल, कर्तृवाच्य, कर्तृरि प्रयोग |
रेखांकित पदों के पद परिचय दीजिए-

1. मीरा घर में रहती है |

उत्तर - व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्ताकारक, 'रहती है' क्रिया का कर्ता |

2. यह किताब मेरी है |

उत्तर - विशेषण, सर्वनामिक विशेषण, एकवचन , स्त्रीलिंग |

3. मैं धीरे-धीरे चलता हूँ |

उत्तर - क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण, 'चलता हूँ' विशेष्य |

4. मैं उसे आगरा में मिलूँगा |

उत्तर - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवाचक, अधिकरण कारक, 'मिलूँगा' क्रिया का अधिकरण (स्थान)|

5. वह कक्षा में बैठा रहता है |

उत्तर - पुरुषवाचक सर्वनाम, अन्यपुरुष, पुल्लिंग, एकवचन कर्ताकारक , 'बैठा रहता हैं 'क्रिया विशेष्य

6. मनोहर दसवीं कक्षा में पढ़ता हैं |

उत्तर - विशेषण, संख्यावाचक विशेषण, कर्मसूचक ,स्त्रीलिंग, एकवचन,'कक्षा' विशेष्य |

अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न -वाक्यों में रखांकित पदों का पद परिचय लिखिए |

1. तोता पिंजरे में बैठकर आम खा रहा है |

2. छोटी बच्ची हँस रही है |

3. भारत अनेक संस्कृतियों वाला देश है |

4. वह प्रत्येक बच्चे को पहचानता है |

5. कविता सुन्दर है |

वाक्य-भेद

मनुष्य के विचारों को पूर्णता से प्रकट करने वाला पद समूह, जो व्यवस्थित हो वाक्य कहलाता है | वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है |

वाक्य में आकांक्षा, योग्यता और आसक्ति का होना आवश्यक है |

आकांक्षा - वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने की जो स्वाभाविक उत्कंठ जागती है, उसे आकांक्षा कहते हैं | जैसे - दिन में काम करते हैं |

इस वाक्य को सुनकर हम प्रश्न करते हैं- कौन लोग काम करते हैं ? यदि हम कहें कि ' दिन में सभी काम करते हैं, तो 'सभी' कह देने के प्रश्न का उत्तर मिल जाता है और वाक्य ठीक हो जाता हैं | अतः इस वाक्य में 'सभी' शब्द की आकांक्षा थी जिसकी पूर्ति से वाक्य पूरा हो गया |

योग्यता - योग्यता से तात्पर्य है- पदों के अर्थबोधन की सामर्थ्य | जैसे- किसान लाठी से खेत जोतता है |

उस वाक्य में 'लाठी' के स्थान पर 'हल' का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि 'हल खेत जोतने के प्रसंग में अर्थबोधक की क्षमता सामर्थ्य रखता हैं |

सन्निधि - वाक्य के शब्दों को बोलने या लिखने में निकटता होना आवश्यक हैं |

रुक - रुककर बोले गए शब्द या लिखते समय ठहराव दिखने के लिए विराम चिन्हों का प्रयोग न करने से अर्थ में बाधाती है | इस प्रकार अर्थ तभी निकलता है, जब अंश समुचित समय-सीमा में ही बोले जाएँ |

इस शर्त को सन्निधि कहते हैं |

वाक्य के घटक

वाक्य के मूल और अनिवार्य घटक हैं - 1. कर्ता 2. क्रिया

इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं- विशेषण, क्रिया- विशेषण, कारक आदि इन्हें एच्छिक कहा जाता है |

1. उद्देश्य   2.विधेय

1. उद्देश्य - जिसके विषय में कुछ कहा जाए | (1. कर्ता   2. कर्ता का विस्तार)

2.विधेय - उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाय। (1. क्रिया, 2. क्रिया का पूरक , 3. कर्म/पूरक, 4. कर्म/पूरक का विस्तार , 5. अन्य कारकीय पद और उनका विस्तार)

उद्देश्य और विधेय को इस प्रकार समझा जा सकता है |

रचना की दृष्टि से वाक्य - भेद

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं -

1. सरल या साधारण वाक्य
2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र या जटिल वाक्य

1. सरल या साधारण वाक्य - इसमें एक या एक से अधिक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं | जैसे -

1. वह जोर-जोर से <u>रोया</u> |

2.मैं और मेरा भाई दिल्ली <u>जाएँगे</u> |

3. वे हर दिन दूध <u>पीते</u> हैं |

4. मोहन घर <u>जा</u> रहा होगा |

5. वह अत्याचार <u>किए</u> जा रहा था

6.पाकिस्तान वर्षों से आतंकवाद <u>फैलाए</u> जा रहा हैं |

उक्त वाक्यों में रेखांकित क्रियाएँ मुख्य क्रियाएँ हैं |
ध्यान दें - स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य भी सरल वाक्य होता है |

2. संयुक्त वाक्य - दो या दो से अधिक सामान स्तरीय (समानाधिकरण) उपवाक्य किसी समानाधिकर समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं - वे संयुक्त वाक्य कहलाते है| जैसे -

1. हमलोग पूणे घूमने गए और वहाँ चार दिन रहे |
2. यहाँ आप रह सकते हैं या आपका भाई रह सकता है |
3. वे बीमार हैं, अतः आने में असमर्थ है |

ध्यान दें -1 समानाधिकरण उपवाक्य आश्रित न होकर एक- दूसरे के पूरक होते हैं |

2. इन उपवाक्यों का स्वतंत्र रूप से भी प्रयोग हो सकता है |

नोट - जिन समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों पदों और वाक्यों को परस्पर

जोड़ा जाता है | उन्हें समानाधिकारण समुच्चयबोधक कहते हैं |

जैसे - सुनंदा खड़ी थी और अलका बैठी थी |

इस वाक्य में 'और' समुच्चयबोधक शब्द द्वारा दो समान वाक्य परस्पर जुड़े हैं |

समानाधिकरण समुच्चयबोधक के भेद - समानाधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के होते हैं

(क) संयोजक- जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं | जैसे - और, तथा , एवं व आदि संयोजक शब्द हैं |

(ख) विभाजक- शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करने वाले शब्द विभाजन या विकल्पक कहलाते हैं | जैसे- या, चाहे अथवा, अन्यथा आदि |

(ग) विरोध- दो परस्पर विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं | जैसे - परन्तु, पर, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि |

(घ) परिणामसूचक - दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर परिणाम को दर्शाने वाले शब्द परिणामसूचक कहलाते हैं|

जैसे - फलतः , परिणामस्वरूप,इसलिए अतः अतएव फलस्वरूप, अन्यथा आदि |

3. मिश्र वाक्य - मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र (प्रधान) होता है | और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं | मिश्र वाक्य के उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं | जैसे-मैंने देखाँकि बाज़ार में चहल- पहल है |

इस वाक्य में दो उपवाक्य हैं - मैंने देखा, बाज़ार में चहल-पहल थी | ये दोनों उपवाक्य 'कि' व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं | इनमें -

मुख्य उपवाक्य हैं - मैंने देखाँ|

आश्रित उपवाक्य है -बाज़ार में चहल-पहल है |

(मिश्र वाक्य के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जब, जहाँ, जिसने, ज्योंही , जिधर-उधर , जैसे-वैसे , जितना-उतना , क्योंकि , यदि तो, ताकि , यद्‌यपि -तथापि , अर्थात् मानो आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं |

नोट - किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं |

व्यधिकरण समुच्चा बोधक के भेद -व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद होते हैं -

(क) **कारण सूचक -**दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को **कारण** सूचक कहते हैं | जैसे- कि, क्योंकि, इसलिए, चूँकि , ताकि आदि |

(ख) **संकेत सूचक -**जो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं; उन्हें संकेतसूचक कहते हैं | जैसे -यदि तो , जा तो , यद्‌यपि -तथापि, यद्‌यपि; परन्तु आदि |

(ग) **उद्देश्य सूचक -**दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्य सूचक कहलाते हैं | जैसे- इसलिए कि , ताकि, जिससे की आदि |

(घ) **स्वरूप सूचक -**मुख्य उपवाक्य अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं | जैसे-यानि, मनो , की अर्थात् आदि |

प्रधान व आश्रित उपवाक्य की पहचान -

1. प्रधान उपवाक्य वह होता है, जिसकी क्रिया मुख्य होती है |
2. मिश्र वाक्य की मुख्य क्रिया जानने के लिए मिश्र वाक्य को एक सरल वाक्य में रूपांतरित करते हैं | जो क्रिया रूपांतरित होने वाली क्रिया होगी वही क्रिया होगी | मुख्य क्रिया वाला यह उपवाक्य प्रधान उपवाक्य होगा |

   रूपांतरित होने वाली क्रिया वाला उपवाक्य आश्रित होगा | जैसे ' तुम परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते| '

   सरल वाक्य में रूपांतरण-तुम परिश्रम करने पर अवश्य सफल होते | स्पष्ट है - यहाँ 'परिश्रम करते ' क्रिया और वाक्यांश में ही है, अतः प्रधान उपवाक्य है| ' अवश्य सफल होते |'

   मिश्र उपवाक्य में आनेवाले आश्रित उपवाक्य के भेद - ये आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते है -

   (क)संज्ञा उपवाक्य

   (ख) विशेषण उपवाक्य

   (ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य

   (क)संज्ञा उपवाक्य - प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा पदबंध के स्थान पर आनेवाला उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य कहलाता है |

   जैसे - गुरूजी ने कहा कि आज पुस्तक पढ़ाएँगे |

पहचान- यहाँ ‘आज पुस्तक पढ़ाएँगे |’ उपवाक्य ‘गुरूजी ने कहा ‘ उपवाक्य के कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ है | सामान्यतः मुख्य उपवाक्य पर क्या प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वही संज्ञा उपवाक्य होता है | उक्त वाक्य में - गुरूजी ने क्या कहा है ? उत्तर मिलेगा- ‘आज पुस्तक पढ़ाएँगे ‘ यही संज्ञा उपवाक्य हैं | ये प्रायः कि से आरंभ करते हैं |

संज्ञा उपवाक्य के अन्य उदहारण :

1. सचिन बोला कि मै मुंबई जा रहा है | (‘बोला‘ क्रिया का कार्य)

2. जान पड़ता है कि पिताजी कुछ बीमार है |(‘जान पड़ता है’ - क्रिया का उद्देश्य)

3. इनसे पूछिए कि ये कौन हैं ? (‘यह’ का पूरक)

4. मुझे विश्वास है कि आज अवश्य आएँगे | (विश्वास का समानाधिकारण)

यहाँ रेखांकित उपवाक्य संज्ञा (आश्रित)उपवाक्य है , शेष प्रधान उपवाक्य है |

(ख) **विशेषण उपवाक्य -** मुख्य (प्रधान) उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला उपवाक्य विशेषण उपवाक्य कहलाता है |

जैसे -1. जो दूसरे की निंदा करते हैं, वे लोग अच्छे नहीं होते |

2. वह किताब कहाँ है, जो आप कल लाए थे |

3. यह वही बालक है, जिसे मैंने कल शहर में देखा था |

पहचान - मुख्य उपवाक्य पर ‘कौन ‘ ‘किसे ‘ किन्हें ‘ प्रश्न करने पर जो उत्तर आता है, वही विशेषण उपवाक्य होता है | अथवा वाक्य के प्रारंभ, मध्य या अंत कही भी आ सकता है |

(ग) **क्रिया - विशेषण उपवाक्य -**मुख्य (प्रधान) उपवाक्य की क्रिया के संबंध में किसी प्रकार की सूचना देने वाला उपवाक्य क्रिया - विशेषण उपवाक्य कहलाता है | जैसे -

1. तुम वहाँ चले जाओ, बस खड़ी है|

2.जहाँ-जहाँ हम गए, हमारा स्वागत हुआ |

क्रिया विशेषण उपवाक्य पाँच प्रकार के होते हैं -

(क) कालवाचक उपवाक्य

1. ज्योंती मैं स्टेशन पहुँचा, गाड़ी ने सीटी बजा दी |

2. जब मैं घर पहुँचा तो वर्षा हो रही थी |

(ख)स्थानवाचक उपवाक्य

1. जहाँ तुम पढ़ते थे, मेरा भाई भी वहीँ पढ़ता हैं |
2. तुम जिधर जा रहे हो, उधर आगे रास्ता बंद है |
3. वहां इस वर्ष अकाल पड़ सकता है, जहाँ वर्षा नहीं हुई |

(ग) रीतिवाचक उपवाक्य

1. आपको वैसा ही करता है, जैसा मैं कहता हूँ |

2. वह उसी तरह खेलेगा, जैसा उसने सिखाँहै |

(घ) परिमाणवाचक उपवाक्य

1. जितना तुम पढ़ोगे, उतना समझ आएगा |

2. वह उतना ही अधिक थकेगा, जितना अधिक दौड़ेगा |

3. जैसे-जैसे आमदनी बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे आवश्यकताएं बढ़ती जाती हैं |

(ड़) परिणाम (कार्य-कारण) वाची उपवाक्य :

1. वह आएगा जरुर क्योंकि उसको नौकरी की जरूरत है |

2. यही वह आएगा तो कम बन गाएगा |

3. यद्यपि तू पहलवान है, तथापि (फिर भी) मुझसे नहीं जीत सकता|

वाक्य रूपांतरण :

1. सरल वाक्य-मोहन हिन्दी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया है|
   संयुक्त वाक्य- मोहन को हिन्दी पढ़ना है इसलिए वह शास्त्री के यहाँ गया है|
   मिश्र वाक्य-मोहन शास्त्री जी के यहाँ गया है, क्योंकि उसे हिन्दी पढ़ना है|
2. सरल वाक्य - मोहन बहुत कम खिलाड़ी होने पर भी कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता|
   संयुक्त वाक्य - मोहन बहुत कम खिलाड़ी है, किन्तु कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता |
   मिश्र वाक्य -यद्यपि मोहन बहुत खिलाड़ी है फिर भी कभी अनुतीर्ण नहीं होता |
3. सरल वाक्य- गड्ढा खोदकर मजदूर चले गए|
   संयुक्त वाक्य- जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया, तब चले गए|
   मिश्र वाक्य-मजदूरों ने गड्ढा खोदा और चले गए |

प्रश्न :

1. सीमा यहाँ आई और रेखाँबहार गई| रचना के आधार पर सही वाक्य भेद है|

(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य

2. उद्देश्य में सम्मिलित नहीं है :

(क) कर्ता का विस्तार (ख) कर्ता

(ग) जिसके बारे में कहा जाए (घ) कर्म का विस्तार

3. विधेय के अंतर्गत नही आता :

(क) पूरक (ख) कर्म

(ग) क्रिया का विस्तार (घ) जिसके बारे में कहा जाए]

4. सरल वाक्य में नही होता :

(क) एक मुख्य क्रिया (ख) एक कर्ता

(ग) एक विधेय (घ) एक या एक से अधिक कर्ता

5. रचना की दृष्टि से वाक्य भेद है :

(क) दो (ख) तीन

(ग) चार (घ) पांच

6. समानाधिकरण उपवाक्य होते है :

(क) सरल वाक्य में (ख)संयुक्त वाक्य में

(ग) जटिल वाक्य में (घ) इनमें से कोई नहीं

7. एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते है :

(क) संयुक्त वाक्य में (ख) विशेषण वाक्य में

(ग) मिश्र वाक्य में (घ) लघु वाक्य में

8. स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य होता है:

(क) सरल वाक्य (ख) संज्ञा उपवाक्य

(ग) जटिल वाक्य (घ) विशेषण उपवाक्य

9. रेखा ज्योंही घर पहुँची वर्षा शुरू हो गई |

(क) संज्ञा आश्रित वाक्य (ख) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(ग) समानाधिकरण उपवाक्य (घ) क्रिया विशेषण उपवाक्य

10. मैंने खाना नहीं खाया, इसलिए फल नहीं खाया | यह रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार है

(क) जटिल वाक्य (ख) संकेतवाचक वाक्य

(ग) साधारण वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

11. कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कलकत्ता | रचना की दृष्टि से वाक्य है :

(क) मिश्र वाक्य (ख) सरल वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) इनमे से कोई नहीं

12. कालवाची क्रिया-विशेषण (आश्रित) उपवाक्य किस वाक्य मैं है :

(क) जब आपका आदमी आया, मैं नहा रहा था (ख) जैसा वह गाती है, कोई नहीं गा सकता|

(ग) तुम जितना जानते हो, उतना काम करो (घ) यदि मेरी बात मानोगे तो सुखी रहोगी

13. वाक्य का सही अर्थ तभी निकलता है जब अंश एक समुचित समय सीमा में ही बोले जाएँ | इस शर्त को कहते हैं:

(क) योग्यता (ख) संविधि

(ग) आकांक्षा (घ) पदक्रम

14. वाक्य के प्रमुख घटक हैं :

(क) चार (ख) तीन

(ग) पांच (घ) इनमें से कोई नहीं

15. वे वहां जाकर भाषण देंगे इसका संयुक्त वाक्य में स्थान्तरण होगा :

(क) वे वहाँ जाएँगे और भाषण देंगे (ख) वे यहाँ से जाकर भाषण देने लगेंगे

(ग) यहाँ से वहां जाकर भाषण देंगे (घ) वे वहाँ जाएँगे या भाषण देंगे

16. नींचे लिखे वाक्यों में कुछ साधारण वाक्य, कुछ मिश्रित वाक्य और कुछ संयुक्त वाक्य है| सामने कोष्ठकों में उनको ठीक-ठीक नाम लिखिए|

1. जो विधान होता है, उसे सभी आदर करते हैं|
2. मैं चाहता हूं कि तुम परिश्रम करो |
3. वह आदमी पागल हो गया है|
4. जब राजा नगर में आया, तब उत्सव मनाया गया|
5. अपना काम देखों या शांत बैठे रहो|
6. जो पत्र मिला है, उसे शीला ने लिखा होगा |
7. ऑस्ट्रेलिया से आए हुए खिलाड़ियों को प्रथम तल पर ठहराया गया है |
8. मैं उसके पास जा रहा हूं ताकि कुछ योजना बन सके |
9. आपको वह कुर्सी कहाँ है, जो आप कलकत्ता से लाए थे |
10. हमारे मित्र कल यहाँ से जाएँगे ओर आगरा पहुँच कर ताजमहल देखेंगे |

उत्तर संकेत - (1) ग,(2) घ,(3) घ,(4) ख , (5) ख , (6) ख,
(7) ग, (8) क, (9) घ, (10) क , (11) ग, , (12) क, (13) ख, (14) घ, (15) क
(16) (1) मिश्र वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3) सरल वाक्य (4) मिश्र वाक्य (5) संयुक्त वाक्य
(6) मिश्र वाक्य (7) साधारण (8) मिश्र वाक्य (9) मिश्र वाक्य (10) संयुक्त वाक्य

अभ्यास प्रश्न:

1. रचना के आधार पर वाक्य का सही प्रकार लिखिए:
   1. वह पुस्तक खरीदने के लिए दुकान पर गया |
   2. वह बाजार गया और फल खरीदकर लाया |
   3. उस बालक को बुलाओ, जिसने गिलास तोड़ा है |
   4. गीता नृत्य कर रही है |
   5. गुरूजी ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी |
2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :
   1. माता जी ने आँटा गूंथकर रोटी बनाई |
   2. अचानक पुलिस आ गयी और गली में सन्नाटा छा गया | (सरल वाक्य में बदलिए)
   3. सूरज ने कपड़े पहने, पर वह संतुष्ट नहीं है | (मिश्र वाक्य में बदलिए)

रस

काव्य (कविता, नाटक आदि) के पढ़ने ,सुनने अथवा देखने से जो अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त होता है,वहीं **'रस'** कहा गया है।

रस को साहित्य के आचार्यों ने काव्य की आत्मा माना है। जैसे आत्मा के बिना शरीर निर्जीव और निष्क्रिय होता है ,उसी प्रकार से 'रस' के बिना काव्य भी प्रभावहीन और निर्जीव होता है। आचार्य 'विश्वनाथ' ने इसी कारणा 'काव्य' की परिभाषा **'वाक्यं रसात्माकं काव्यम्'** दी है।

रस का अनुभव -'काव्य' के सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने रस के प्रकट होने की प्रक्रिया इस प्रकार बतायी है "विभाव ,अनुभाव और संचारी (व्यभिचारी) भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है"। **"विभावानुभाव-व्यभिचारि-संयोगाद्रसनिष्पत्ति:"।** रस की संख्या दस मानी जाती है।

रस के अंग

रस के चार अंग हैं- स्थायी भाव,विभाव,अनुभाव,और संचारी भाव ।

(i) **स्थायी भाव**-मनोवैज्ञानिक एवं काव्य-शास्त्रियों ने मानव-मन में स्थायी रुप से निवास करने वाले कुछ भाव या विकार माने हैं। जब इनमें से किसी एक के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वह मनुष्य के मन पर पूर्णत: छा जाता है। उस समय हम कहा करते हैं कि अमुक मनुष्य क्रोध में है अथवा करुणा से पूर्ण है अथवा घृणा से भरा हुआ है।

स्थायी भावों का परिचय -काव्य के आचार्यों ने स्थायी भाव नौ माने हैं -

1. रति 2. हास 3. शोक 4. क्रोध 5. उत्साह 6. भय 7. जुगुप्सा 8. विस्मय 9. निर्वेद। कुछ विद्वानों वात्सल्य नामक दसवाँ स्थायी भाव भी मानते हैं।

(ii) विभाव-स्थायी भाव को जगाने वाले व्यक्ति,वस्तु या परिस्थितियाँ विभाव कहे जाते हैं।

विभाव के दो प्रकार हैं - 1. आलम्बन और 2. उद्दीपन।

- **आलम्बन विभाव** -स्थायी भाव जागृत करने वाले कारण (व्यक्ति,वस्तु,परिस्थिति) आलम्बन होते हैं। यथा लक्ष्मण को देखकर परशुराम को क्रोध तो लक्ष्मण क्रोध का आलम्बन है।

आलम्बन के दो प्रकार हैं -1. आश्रय 2. और विषय।

जिसके मन में स्थायी भाव जागता है और जिस कारण से जागता है ,उसे विषय कहते हैं। परशुराम आश्रय और लक्ष्मण विषय है।

- **उद्दीपन विभाव -** स्थायी भाव को तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन कहे जाते हैं। लक्ष्मण का मुस्काना,व्यंग्य-वचन कहना उद्दीपन है।

(iii)**अनुभाव -** आश्रय की चेष्टाएँ अनुभाव कही जाती हैं। उपर्युक्त उदाहरण में परशुराम का क्रोधपूर्ण वचन बोलना ,फरसे को सम्भालना ,दाँत पीसना ,आँखें लाल करना आदि अनुभाव होंगे।

(iv) **संचारी भाव -**रस के अनुभव होते समय आश्रय के मन में जो भाव बार-बार उत्पन्न होते और मिटते रहते हैं ,वे संचारी या व्यभिचारी भाव कहे जाते हैं। इनकी संख्या तैतीस मानी गयी है।

स्थायी भाव और रस

रति-स्त्री और पुरुष के बीच उत्पन्न होने वाला प्रेम-भाव रति कहा जाता है।

हास -किसी की विकृत वेश-भूषा,वाणी तथा अंग आदि को देखने-सुनने से जो प्रफुल्लता उत्पन्न होती है,वह हास है।

शोक -प्रिय या इच्छित वस्तु के नष्ट होने पर अथवा किसी अनिष्ट की आशंका से मन में जो कष्ट होता है,वह शोक है।

क्रोध -अपराधी,शत्रु तथा किसी के प्रतिकूल आचरण को देखकर उत्पन्न होने वाली उत्तेजना क्रोध है।

उत्साह -कठिन कार्य को सम्पन्न करने की सक्रीय उमंग का नाम उत्साह है।

भय -महान् शारीरिक या मानसिक हानि की सम्भावना से उत्पन्न व्याकुलता भय है।

जुगुप्सा -घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य,वस्तु या व्यक्ति के दर्शन से या सम्बन्ध से उत्पन्न होने वाला विकार जुगुप्सा है।

विस्मय -असाधारणया अभूतपूर्व वस्तु के,दृश्य के या व्यक्ति के दर्शन से मन का चकित होना ही विस्मय है।

निर्वेद -काम, क्रोध,लोभ,मोह आदि का परित्याग और शान्ति का अनुभव निर्वेद है।

वात्सल्य -संतान के प्रति स्नेह-भाव ही वात्सल्य है।

ये ही स्थायी भाव विभिन्न विभाव ,अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होते हैं। विभिन्न स्थायी भावों से उत्पन्न रसों के नाम क्रमशः इस प्रकार हैं -

1. रति - श्रृंगार रस
2. हास - हास्य रस
3. शोक - करुण रस
4. क्रोध - रौद्र रस
5. उत्साह - वीर रस
6. भय - भयानक रस
7. जुगुप्सा - वीभत्स रस
8. विस्मय - अद्‌भुत रस
9. निर्वेद - शांत रस
10. वात्सल्य - वत्सल रस

1. श्रृंगार रस -

जहाँ काव्य में रति नामक स्थायी भाव ,विभाव,अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर रस में परिणत होता है,वहाँ श्रृंगार रस होता है।

श्रृंगार रस के दो पक्ष होते हैं –**संयोग श्रृंगार** और **वियोग श्रृंगार**। जहाँ नायक और नायिका के मिलन का वर्णन हो ,वहाँ संयोग श्रृंगार और जहाँ दोनों के वियोग का वर्णन हो वहाँ वियोग श्रृंगार कहा जाता है।

1. उदाहरण : - संयोग श्रृंगार

कंज नयनि,मज्जनु किएँ,बैठी ब्यौरति बार।
कच- अँगुरी-बिच दीठि दै,कितवति नंदकुमार। **(बिहारी)**

यहाँ राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। दोनों साथ हैं ,अत: संयोग श्रृंगार की योजना है। कमल जैसे नेत्र वाली राधा स्नान करके बाल काढ़ रही हैं परंतु बाल और अँगुली के बीच से श्रीकृष्ण के सुंदर रुप को देखती जा रही हैं। यहाँ कृष्ण **आलम्बन** हैं। राधा **आश्रय**हैं। कृष्ण कारुप **उद्दीपन** है तथा बालों की ओट से देखना आदि कायिक **अनुभाव** हैं। लज्जा ,औत्सुक्य आदि **संचारी** हैं। अत: यहाँ संयोग श्रृंगार का वर्णन है।

2. उदाहरण :- वियोग श्रृंगार

सुनि-सुनि ऊधव की अकह कहानी कान,
कोऊ थहरानी,कोऊ थानहिं थिरानी हैं।
x x x
कोऊ स्याम-स्याम कै बहकि बिललानी,
कोऊ कोमल करेजौ थामि सहमि सुखानी हैं।

यहाँ गोपियों के श्रीकृष्ण से वियोग की स्थिति का वर्णन है। श्रीकृष्ण **आलम्बन** हैं,**आश्रय** हैं। ऊधव की अकह कहानी **उद्दीपन** है। काँपना,श्याम-श्याम पुकारना,व्याकुल होना, हृदय को थाम लेना आदि **अनुभाव** हैंऔर जड़ता,प्रलाप,उन्माद आदि **संचारीभाव** हैं। इस प्रकार यहाँ वियोग श्रृंगार का वर्णन है।

2. हास्य रस

जहाँ कवि किसी की विचित्र वेश-भूषा,चेष्टा तथा कथन का वर्णन करके 'हास' नामक स्थायी भाव जगाता है और विभाव आदि से पुष्ट कर देता है वहाँ हास्य रस कहा जाता है।

उदाहरण - सिर घोर मोर पर,चुटिया थी लहराती।
थी तोंद लटक कर घुटनों को छू जाती।
जब मटक मटक कर चले,हँसी थी भारी।
हो गये देखकर,लोट-पोट नर नारी॥

यहाँ विचित्र स्वरुप वाले किसी पात्र का वर्णन है।यह पात्र **आलम्बन** है। दर्शक **आश्रय** हैं। मटक-मटककर चलना **उद्दीपन** है। हँसना,लोटपोट होना **अनुभाव** हैं तथा हर्ष,औत्सुक्य आदि **संचारी भाव** हैं। इस प्रकार यहाँ हास्य रस की व्यंजना हुई है।

3. करुण रस

जहाँ 'शोक' नामक स्थायी भाव,विभाव आदि से संयुक्त होकर रस-दशा को प्राप्त होता है,वहाँ करुण रस खाँजाता है।

जैसे : - सोक विकल सब रोबहिं रानी। रुप,सील ,बल,तेज बखानी।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमि तल बारहिं बारा।।

यहाँ महाराज दशरथ के मरण पर रानियों के शोक का वर्णन है ; अत: **स्थायी भाव** शोक है। **आलम्बन** मृत दशरथ है। **आश्रय** रानियाँ हैं। रोना ,राजा के बल ,प्रताप आदि का वर्णन करना,बार-बार भूमि पर गिरना **अनुभाव** हैं। स्मृति ,चिंता,प्रलाप,विषाद आदि संचारी भाव हैं। अत: इन काव्य-पंक्तियों से करुण रस की व्यंजना हुई है।

4. रौद्र रस

जब 'क्रोध' नामक स्थायी भाव,विभावादि से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है तो वहाँ रौद्र रस माना जाता है। जैसे : -

भाखे लखन,कुटिल भईं भौंहें। रद-पुट फरकत नयन रिसौंहें॥

यहाँ लक्ष्मण के क्रुद्ध होने का वर्णन है। **स्थायी भाव** क्रोध है। **आलम्बन**जनक के वाक्य हैं। **आश्रय लक्ष्मण** हैं।सभा में उपस्थित राजा ,धनुष का दर्शन आदि **उद्दीपन** हैं। भौंहों का कुटिल होना,होठों का फड़कना ,नेत्रों का क्रोधपूर्ण होना कायिक **अनुभाव** हैं,आवेश,चपलता,उग्रता आदि संचारी भाव हैं। अत: यहाँ रौद्र रस की व्यंजना हुई है।

5. वीर रस

जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव,विभाव आदि के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होता है तो वह वीर रस कहा जाता है। जैसे : -

“जब दहक उठा सीमांत, पुकारा माँ ने शीश चढ़ाने को।
नौजवाँ लहू तब तड़प उठा, हाँसते-हाँसते बलि जाने को॥
गरजे थे लाखों कण्ठ ,”आज दुश्मन को मजा चखाएँगे।
भारत-धरणी के पानी का,जौहर जग को दिखलाएँगे॥’’

यहाँ भारत की सीमा पर आक्रमण होने पर भारतीय युवकों की वीर-भावना का वर्णन है।**आलम्बन** शत्रु है। माँ की पुकार,शत्रुओं का आक्रमण आदि **उद्दीपन** हैं।भारतीय युवक **आश्रय** हैं। गरजना,शत्रुओं को चुनौती देना आदि **अनुभाव** हैं। उग्रता, चपलता, धृति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ वीर रस की व्यंजना हुई है।

6. भयानक रस

जब ‘भय’ नामक स्थायी भाव,विभाव, अनुभाव आदि के संयोग से रस-दशा को पहुँचाता है तो वह भयानक रस कहा जाता है। जैसे : -

हाट, बाट, कोट, ओट, अटनि, अगार, पौरि, खोरि-खोरि दौरि-दौरि दीनि अति आगि है।
आरत, पुकारत, सम्हारत न कोऊ काहू, व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि हैं॥

यहाँ हनुमान द्वारा लंका जलाये जाने से भयभीत हो रहे राक्षसों का वर्णन है। **स्थायी भाव** भय है। **आलम्बन** हनुमान और जलती हुई लंका है। **आश्रय** राक्षस-राक्षसियाँ हैं। हनुमान का विकराल रूप,अग्नि की बढ़ती हुई ज्वालाएँ और उनका दौड़-दौड़कर आग लगाना आदि **उद्दीपन** हैं तथा त्रास ,चिंता, शंक , प्रलाप आदि **संचारी भाव** हैं। इस प्रकार यहाँ भयानक रस की व्यंजना हुई है।

7. वीभत्स रस

जहाँ‘जुगुप्सा’ नामक स्थायी भाव विभाव,अनुभाव एवं संचारी भाव से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है,वहाँ वीभत्स रस होता है। जैसे : -

घर में लाशें,बाहर लाशें,जनपथ पर सड़ती हैं लाशें।
आँखें नृशंस यह दृश्य देख मुँद जातीं,घुटती हैं श्वासें।

यहाँ बंगलादेश में पाकिस्तानी अत्याचार का वर्णन है। **स्थायी भाव** ‘जुगुप्सा’ (घृणा) है। **आलम्बन** सड़ती हुई लाशें और **आश्रय** जन समुदाय या दर्शन हैं। घृणात्मक दृश्य ही **उद्दीपन** है और आँखें मूँदना,श्वास घुटना आदि अनुभाव हैं। ग्लानि, दैन्य, निर्वेद आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार विभावादि से पुष्ट होता हुआ जुगुप्सा भाव वीभत्स रस में परिणत हो रहा है।

8. अद्‌भुत रस

जहाँ विस्मय नामक स्थायी भाव विभाव आदि से पुष्ट होकर रस-दशा को प्राप्त होता है ,वहाँ अद्‌भुत रस माना जाता है। यथा–

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखाँ। मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा।

तन पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूँदि चरनन सिर नाव॥

यहाँ कौशल्या द्वारा भगवान राम के दो बालरूप देखकर चकित होने का वर्णन है। स्थायी भाव विस्मय है। आलम्बन राम के दो बाला स्वरूप हैं और आश्रय कौशल्या है। शरीर का पुलकित होना ,मुख से वचन ननिकलना,नेत्र बंद कर लेना , सिर झुकाना आदि अनुभाव हैं। वितर्क ,जड़ता इत्यादि,संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ अद्भुत रस का परिपाक हो रहा है।

9. शांत रस

जहाँ 'निर्वेद' नामक स्थायीभाव विभाव,अनुभाव आदि से पुष्ट होता हुआ रस- दशा को प्राप्त होता है, वहाँ शांत रस माना जाता है। यथा -

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।

राम कृपा भवनिसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं।

X X X

परबस जानि हाँस्यों इन इंद्रिन निज बस है न हाँसैहौं॥

मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौं॥

यहाँ तुलसी अपने ह्रदय की स्थिरता और संसार की व्यर्थता आदि का वर्णन कर रहे हैं। **स्थायी भाव** निर्वेद है। **आलम्बन** आयु का व्यर्थ जाना है। इंद्रियों द्‌वारा उपहास **उद्दीपन** है। ज्ञान-प्राप्ति,संसार की असारता एवं मन को राम के चरणों में लगाने आदि के कथन **अनुभाव** हैं। धृति,वितर्क,मति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ शांत रस का निरुपण है।

10. वात्सल्य रस

जहाँ 'वात्सल्य' नामक स्थायी भाव विभाव,अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होकर रसत्व को प्राप्त होता है,वहाँ वात्सल रस होता है। इसके संयोग और वियोग दो भेद माने गये हैं। जैसे :-

1. **संयोग वात्सल्य :-** जसोदा हरि पालने झुलावैं

हलरावै दुलराइ मल्हावैं जोइ सोइ कछु गावै।

Xx x

कबहुँ पलक हरि मूँद लेत हैं,कबहुँ अधर फरकावैं।

सोवत जानि मौन हौ रहि करि करि सैन बतावैं।

X X X

जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ,सो नँद भामिनि पावैं॥

यहाँ यशोदा का शिशु कृष्ण के प्रति प्रेम वर्णित है। **स्थायी भाव** वात्सल्य है। **आलम्बन** शिशु कृष्ण हैं। **आश्रय** यशोदा हैं। **उद्दीपन** कृष्ण की चेष्टाएँ हैं यथा पलक मूँदना ,अधर फड़काना आदि। हिलाना,दुलार करना,गाना,संकेत करना आदि **अनुभाव** हैं। हर्ष आदि **संचारी भाव** हैं।इस प्रकार यहाँ संयोग वत्सल रस की सफल योजना हुई है।

2. **वियोग वात्सल्य :-** जसोदा बार-बार यौं भाखैं।

है कोउ ब्रज में हितूं हमारौ चलत गुपालहिं राखै ॥

X X X

कमल नयन गुन टेरत-टेरत अधर बदन कुम्हिलानी।

'सूर' कहाँ लगि प्रगटि जनाऊँ दुखित नंद जू की रानी॥

यहाँ कृष्ण -बलराम के मथुरा-गमन पर यशोदा के वियोग-दुख: का वर्णन है। **आलम्बन** कृष्ण का मथुरा गमन है। **आश्रय** यशोदा हैं। श्रीकृष्ण की लीला आदि का स्मरण **उद्दीपन** है। गुण-कथन,अधर-बदन का कुम्हलाना आदि अनुभाव हैं। चिंता ,वितर्क,स्मृति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार वियोग वात्सल्य की सफल व्यंजना हुई है।

अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रस की निष्पत्ति किनके संयोग से होती है?

उत्तर :- विभाव,अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न 2. काव्य की आत्मा किसे माना गया है?

उत्तर :- रस को काव्य की आत्मा माना गया है।

प्रश्न 3. अनुभाव किसे कहते हैं?

उत्तर :- आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहा जाता है।

प्रश्न 4. किसी की वेशभूषा,वाणी,अंग-विकार या चेष्टाओं को देखकर प्रफुल्लित होने पर किस रस की व्यंजना होती है?

उत्तर :- हास्य रस की व्यंजना होती है।

प्रश्न 5. रोना,छाती पीटना,पछाड़ खाकर गिरना आदि अनुभावों से कौन-सा रस व्यंजित होता है?

उत्तर :- उक्त अनुभावों से 'करुण रस' व्यंजित होता है।

प्रश्न 6. चकित,थकित,विस्फारित दृग से देखाँब्रज नर-नारी ने।
इंद्रमान- मर्दित कर गिरिको धारण किया मुरारी ने।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :-रस-अद्भुत,**स्थायी भाव-** आश्चर्य।

प्रश्न 7.काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी,तेरे ही नालि सरोवर पानी।
जल में उत्पति जल में बास,जल में नलिनी तोर निवास।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :-**रस – शांत, स्थायी भाव - निर्वेद ।**

प्रश्न 8.जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलरवै,मल्हावै,जोइ-सोइ कछु गावै।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर:- **रस – वासल्य, स्थायी भाव - वत्सल ।**

प्रश्न 9. कंज नयनि मज्जनु किएँ, बैठी ब्यौरति बार।
कच- अँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार॥

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- **रस – संयोग श्रृंगार, स्थायी भाव - रति ।**

प्रश्न 10. अधीरता देख जगत की आप, शून्य भरता समीर नि:श्वास।
डालता पातों पर चुपचाप,ओस के आँसू नीलाकाश ॥

उत्तर :- **रस – करूण , स्थायी भाव - शोक ।**

प्रश्न 11.पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने वीर, तेरी बरछीने हैं खलन के।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- **रस – वीर रस , स्थायी भाव - उत्साह् ।**

प्रश्न 12.घोट मोट सिर,भूगोल-सा पेट, चाल में भूचाल, मुख किचन का हो गेट।
हाल में फूट गया हँसईका गुब्बारा, कहने लगे दर्शक दुबार॥

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- **रस – हास्य , स्थायी भाव - हास्य ।**

प्रश्न 13. भाखे लखन, कुटिल भई भौंहें। रद-पुट फरकत नयन रिसौंहें।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- **रस – रौंद्र , स्थायी भाव - क्रोध ।**

प्रश्न 14. घर में लाशें, बाहर लाशें, सड़ती लाशें, चुनती लाशें।
दुर्गंध से घुटती हैं साँसें, इंसान हुआ लाशें, लाशें ॥

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- **रस – वीभत्स , स्थायी भाव - जुगुप्सा ।**

सार-लेखन

सार लेख क्या हैं?

'सार' शब्द का अर्थ है- तत्व या निचोड़ | अर्थात् किसी गद्यांश को इस प्रकार संक्षेप में लिखना, जिससे कि उसका मूल भाव या मूल विचार छूटने न पाए तथा कम महत्वपूर्ण अंश को छोड़ दिया जाए |

अच्छा सार लिखन कैसे करें?

सार- लेखन करते समय निम्नलिखित बातोँ का ध्यान रखना चाहिए-

1. दिए गए गद्यांश को अत्यंत सावधानीपूर्वक पढ़ना चाहिए ताकि उसका भावसमझ में आ जाए|
2. जो अंश, वाक्यों अथवा महत्वपूर्ण लगे उन्हें रेखांकित कर लेना चाहिए|
3. सार लेखन करते समय गद्यांश में आए मुहावरे, सूक्तियों और कहावतों को छोड़ देना चाहिए|
4. सार लेखन करते समय अपनी तरफ से कुछ भी नहीं जोड़ना चाहिए|
5. सार लेखन में पुनरुक्ति नहीं करनी चाहिए |
6. यह ध्यान रखना चाहिए की कोई महत्वपूर्ण अंश या विचार न छूटने न पाए |
7. सार लेखन में विचारों की क्रमबद्धता, पूर्णता तथा स्पष्टता उसी प्रकार रखना चाहिए जैसा पूर्ण गद्यांश में दिया गया हो |
8. अंत में इसे एक बार अवश्य पढ़ लेना चाहिए, जिससे कुछ छुटा हो तो उसे लिखा जा सके |
9. सार लेखन मूल गद्यांश के तिहाई अंश में करना चाहिए |

11. नेताजी का चश्मा- स्वयं प्रकाश

12.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1. हबलदार साहब को पान वाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उराया जाना अच्छा नहीं लगा|

मुड़कर देखाँतो अवाक रह गए | एक बेहद बूढ़ा मरियल सा लंगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगे एक हाथ में एक छोटी सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बांस में टंगे बहुत से चश्मे लिए अभी अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बांस टिका रहा था | तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं | फेरी लगता है | हालदार साहब चक्कर में पड़ गए | पूछना चाहते थे इसे कैप्टन क्यों कहते हैं? क्या यही इसका वास्तविक नाम है ? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और करने को तैयार नहीं ड्राइवर भी बेचैन हो रहा था | हालदार साहब जीप में बैठकर चले गए|

(क) कैप्टन का मजाक किसने उड़ाया और बुरा किसे लगा ?

1. चाय बाले ने और ड्राइवर को   2. पानेवाले ने और हालदार साहव को

3. पानवाले ने और ड्राइवर   4. चाय वाले ने और हालदार साहब को

(ख) सामने से आते हुए व्यक्ति का रूप कैसा था ?

1.बेहद बूढ़ा मरियल सा चश्मा लगाए   2. सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला

3. हाथ में छोटी संदुकची और बांस पर टंगेचश्मे   4. उपयुक्त सभी

(ग) वह चश्मे किस तरह बेचता था?

1. दुकान लगाकर   2. घर पर

3. फेरी लगाकर   4. उपयुक्त में से कोई नहीं

(घ) उस बूढ़े व्यक्ति का नाम कैप्टन क्यों रखा गया था?

1. उसका मजाक उड़ाने के लिए   2. वह फौज में था

3. माता पिता ने यही नाम रखा था   4. देशभक्ति भावना के कारण

(ड़) हालदार साहब पान वाले के क्या पूछना चाहते थे ?

1. कैप्टन के नाम के बारे में   2. वस्ती के बारे में

3. कैप्टन के काम के बारे में

उत्तर - (क) 2   (ख) 4 (ग) 3   (घ) 4   (ड़) 2

2. बार-बार सोचते क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर गृहस्थी जवानी जिंदगी सव कुछ होमकर देनेवालों पर भी हंसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूढ़ती है | दुखी हो गए| पंद्रह दिन बाद फिर उसी कस्बे से गुजरे | कस्बे में घूसने से पहले ही खयाल आया की कस्बे की हृदयस्थली में सुभाष की प्रतिमा अवश्य ही प्रतिष्ठापित होगी | लेकिन सुभाष की आँखों पर चश्मा नहीं होगा | क्योंकि मास्टर बनाना भूल गया और कैप्टन मर गया | सोचा वहाँ रुकेगे नहीं , पानी भी नही खाएँगे | मूर्ति की तरफ देखेंगे भी नहीं सीधे निकल जाएगे ड्राइवर से कह दिया चौराहे पर रुकना नहीं आज बहुत काम है पान आगे कहीं खा लेगे | लेकिन आदत से मजबूत आँखे चौराहे आते ही मूर्ति की तरफ उठ गई | कुछ ऐसा देखाँकि चीखें रोको | जीप स्पीड में थी | ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे | रास्ता चलते लोग देखने लगे| जीप रुकते हालदार साहब जीप से कूदकर तेज तेज कदमों से मूर्ति की तरफ लपके और उसके ठीक सामने जाकर स्टेशन में खड़े हो गए | मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रखा हुआ था, जैसा बच्चे बना लेते हैं | हालदार साहब भावुक हैं| इतनी सी बात पर उनकी आँखें भर आई|

(क)हालदार साहब स्वभाव में :

1. सनकी थे 2. पागल हैं
3. प्रेमी भावुक हैं 4. भावुक देशभक्त हैं

(ख)लोगों ने किसकी हंसी उड़ाई थी ?

1. हालदार की 2. पानेवाले की
3. लेखक की 4. चश्मेवाले की

(ग) हालदार साहब ने कस्बे से गुजरते हुए आदतन क्या देखा?

1. पानवाले को 2. चौराहे को
3. नेताजी की मूर्ति को 4. कैप्टन को

(घ) सुभाष की मूर्ति को देखकर उनकी आँखों क्यों भर आई ?

1. पानवाले ने चश्मा लगा दिया था |
2. कैप्टन अपना काम चायवाले को सौप गया
3. बच्चों के हाथो से बना सरकंडे का चश्मा मूर्ति पर लगा था
4. उपयुक्त में से कोई नहीं

(ड़) होम देने का अर्थ है ?

1. घर देना 2. पूजा देना
3. बलिदान देना 4. नष्ट करना

उत्तर - (क) 4 (ख) 3 (ग) 3 (घ) 3 (ड़) 3

3. अब हालदार साहब को बात कुछ कुछ समझ में आई मे एक चश्मेवाला है जिसका नाम कैप्टन है| उसे नेताजी की बगैर चश्मे बुरी लगती है मानो चश्मे के बगैर नेताजी को असुविधा हो रही हो| इसलिए वह अपनी छोटी सी दुकान में उपलब्ध गिने चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है| लेकिन जब कोई ग्रहक आता है और उसे वैसे ही फ्रेस की दरकार होती है जैसा मूर्ति पर लगा है तो कैप्टन चश्मेवाला मूर्ति पर लगा फ्रेम संभवतः नेताजी से क्षमा मागते हुए है जैसा मूर्ति पर है और बाद में नेताजी को दूसरा फ्रेम लौटा देता| वाह ! भाई खूब ! क्या आइडिया है|

1. हालदार साहब को पहले कौन सी बात समझ में नहीं आती है?
(क) नेताजी का चश्मा क्यों नही है ? (ख) नेताजी का चश्मा किसने उतार लिया? (ग) नेताजी का चश्मा बार बार बदलता क्यों है ? (घ) नेताजी की मूर्ति के साथ कौन छेड़खानी करता हैं |

2. चश्मे वाला नेताजी की मूर्ति पर चश्मा क्यों लगा देता हैं ?
(क) नेताजी के कारण (ख) चश्मे के विज्ञापन के कारण
(ग) अपने नेताजी के प्रति सम्मान के कारण (घ) लोगों का मन रखने के लिए

3. चश्मे वाला को नेताजी की बगैर चश्मा वाली मूर्ति बुरी क्यों लगती हैं ?
(क) देशभक्ति के कारण (ख) सौन्दर्य के कारण
(ग) खालीपन के कारण (घ) नगर पालिका की कोताही के कारण

4. वाह क्या खूब आइडिया है यह विचार किसके मन में आया ?
(क) जनता के (ख) देशवासियों के
(ग) लेखक के (घ) हालदार के

5. आहत का अर्थ है :
(क) घायल (ख) चोटग्रस्त
(ग) व्यथित (घ) परेशान

उत्तर- 1. (ग) 2. (ग) 3.(क) 4.(घ) 5. (ग)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

1. **पानवाले का एक रेखांकित कीजिए |**

   उत्तर- पानवाला स्वभाव से बहुत ही रसिया हंसोड़ और मजाकिया था | वह शरीर से मोटा था | उसकी तोंद निकली रहती थी | उसके मुंह में पान ठुंसा रहता था | पान के कारण वह ठीक से बात तक नहीं कर पाता था और हंसने पर उसके लाल काले दन्त खिल उठते थे | वह बातें बनाने में उस्ताद था | उसकी बोली में हसी और वयंग्य का पूट बना रहता था |

2. **जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखाँनहीं था | तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए|**

उत्तर- जब तक हालदार साहब ने अपने आखें से चश्मे कैप्टन को देखा नहीं था तब उनके मन में कैप्टन की मूर्ति कुछ और थी उन्होंने सोचा था कि कैप्टन शरीर से हटटा-कट्टा मजबूत होगा | वह जरुर सिर पर फौजी टोपी पहनता होगा | वह रौबदार अनुशासित और दबंग मनुष्य होगा | उसकी वाणी में भारीपन होगा |

3. कैप्टन मूर्ति का चश्मा बार-बार क्यों बदल देता था ?

उत्तर –सुभाष चन्द्र बोस की मूर्ति पर चश्मा नहीं था | इसी कमी की पूर्ति चश्मेवाला कैप्टन किया करता था |

वह चश्मे बेच करता था | अतः वह कोई-कोई चश्मा नेताजी की आँखों पर लगा देता था | अगर कोई ग्राहक मूर्ति पर लगा फ्रेम माँग लेता तो कैप्टन वह फ्रेम उतारकर उसकी जगत कोई अन्यश फ्रेम लगा देता था | इस प्रकार मूर्ति पर चश्मे बदलते रहते थे |

4. नेताजी का चश्मा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए की देशप्रेम किम तरह प्रकट होता है

उत्तर- देशप्रेम प्रकट करने के लिए बारे-बारे नारों की आवश्यकता नहीं है | न ही जवान बलिष्ठ या सैनिक होने की जरूरत है | देशप्रेम तो छोटी-छोटी बातों से प्रकट हो सकता है | यदि हमारे मन में देश के प्रति प्रेम है तो हम देश की हर छोटी से छोटी कमी को पूरा करने के लिए प्रयत्न कर सकते हैं | नेताजी का चश्मा में कैप्टन ने नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाकर ही अपनी भावना का परिचय दे दिया |

11. **बालगोबिन भगत - रामवृक्ष बेनीपुरी**

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर के विकल्प में से सही छांटकरलिखिए |

1. बालगोबिन भगत साधु थे | साधु की सब परिभाषा में खरे उतरने वाले | कबीर को साहब मानते थे उन्हीं के गीतों को गाते उन्हीं के आदेशों पर चलते| कभी झूठ नहीं बोलते, खरा व्यवहार रखते | किसी से भी दो टूक बात करने में संकोच नहीं करते न किसी से खामखाह झगड़ा मोल लेते | किसी की चीज नहीं छूटे न बिना पूछे व्यवहार में लाते | इस नियम को कभी कभी इतनी बारीकी तक ले जाते की लोगों को कौतूहल होता | कभी बह दूसरे के खेत में शौच के लिए भी नहीं बैठते | वह गृहस्थ थे लेकिन उनकी सब चीज साहब की थी | जो कुछ खेत में पैदा होता सिर पर लादकर पहले उसे साहब के दरबार में ले जाते जो उनके घर से चार कोस दूर पर था एक कबीर पंथी मठ से मतलब वह दरबार में भेट स्वरूप रख दिया जाकर प्रसाद के रूप में जो उन्हें मिलता, उसे घर लाते और उसी से गुजर चलते |

1. बालगोविन भगत का व्यवसाय था |
 (क) भक्ति (ख) गायन
 (ग) साधु (घ) खेतीबारी

2. बालगोबिन अपनी फासले किसके दरबार में ले जाते थे ?
 (क) कबीर (ख) कबीर पंथी मठ में
 (ग) ईश्वर (घ) हाकिम के

3. बालगोबिन का स्वभाव कैसा था ?
 (क) झगड़ालू (ख) सरल
 (ग) सनकी (घ) मस्त

4. लोगो को कौतुहल क्यों होता था ?
 (क) भगत जैसे साधु को खेतीबारी करते देखाकर (ख) भगत की गृहस्थी देख
 (ग) उनके सच्चाई देखकर (घ) नियमों का अत्यंत बारीकी से पालन करते देख

5. दो टूक का तात्पर्य है :
 (क) थोड़ी सी (ख) संकोच से
 (ग) साफ-साफ (घ) गुस्से से

उत्तर- 1. (ग) 2. (ख) 3. (ख) 4. (घ) 5. (ग)

2. कबीर के वे सीधे सादे पद जो उनके कंठ से निकल कर सजीव हो उठते | आषाढ़ की रिमझिम है| समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है | कहीं हलचल रहे हैं कही रोपनी हो रही है | धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं | औरत कलेवा लेकर मेड पर बैठी है | आसमान बादल से घिरा धूप का नाम नहीं ठंडी पुरबाई चल रही है | ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर तरंग झंकार सी कर उठी | यह क्या है यह कौन हैं यह पूछना न पड़ेगा | बाल गोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं | उनकी अंगुली एक-एक ढंके पीछे को पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है | उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़कर कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कान की ओर |

1. हल चलाकर रोपनी का काम किस महीने में हो रहा है ?

(क) फाल्गुन (ख) माघ

(ग) कार्तिक (घ) आषाढ़

2. बालगोबिन भगत किसके पद गया करते है ?

(क) तुलसीदास के (ख) कबीर के

(ग) सूर के (घ) अपने

3. बालगोबिन भगत अपने खेत में क्या कर रहे हैं?

(क) हल चला रहे हैं (ख) रोपनी करते हुए गा रहे हैं

(ग) खाली खड़े है (घ) धान अगोर रहे हैं

4. उनका कंठ स्वर एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढाकर कहाँ भेज रहा है ?

(क) स्वर्ग की ओर (ख) गॉव के लोगों के कान की ओर

(ग) ईश्वर की ओर (घ) (क) और (ख) दोनों

5. मुग्ध का अर्थ है :

(क) गुमसुम (ख) उदास

(ग) परेशान (घ) प्रसन्न

उत्तर- 1. (घ) 2.(ग) 3.(ख) 4.(घ) 5.(घ)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर (2 अंक)

1. बालगोबिन भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर -भगत की पुत्रबधू जानती थी कि भगत जी संसार में अकेले है | उनका एकमात्र पुत्र मर चुका है वे बूढ़े हैं और भक्त हैं | उन्हें घर बार और संसार में कोई रूचि नहीं है | अंत वे अपने खाने पीने और स्वास्थ्य की ओर भी ध्यान नहीं दे पाएंगे | इसलिए वह सेवा भाव से

उनके चरणों में अपने दिन बिताना चाहती थी | वह उनके लिए भोजन और दवा का प्रबंध करना चाहती थी |

2. बालगोविन भगत की दिनचर्या लोगो के अचरज का कारण क्यों थी ?

उत्तर- बालगोविन भगत की दिनचर्या लोगों को हैरान कर देती थी | वे भगत जी की सरलता, सादगी और निस्वार्थता पर हैरान होते थे| भगत जी भूलकर भी किसी के कुछ नहीं लेते थे | वे बिना पूछे किसी भी चीज को छूटे भी नहीं थे | यहाँ तक की किसी दूसरे के खेत में शौच भी नहीं करते थे | लोग उनके इस व्यवहार पर मुग्ध थे | लोग भगत जी पर तब और भी आश्चर्य करते थे जब वे भोर काल में उठकर दो तीन मिल दूर स्थित नदी में स्नान कर आते थे | वापसी पर वे गाँव के बाहर स्थित पोखर के किनारे प्रभु भक्ति के गीत टेरा रहते थे | उनके इन गानों को सुनकर लोग सच्चमुच हैरान हो जाते थे |

3. गाँव का सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है ?

उत्तर- भारत कृषि प्रधान देश है | यहाँ के गाँव कृषि पर आधारित है | कृषि वर्षा पर आधारित है | वर्षा आषढ़ मास में शुरू होता है | इसलिए आषाढ़ में गाँव वासी प्रसन्न नजर आते हैं वे साल भर आषाढ़ मास का इंतजार करते हैं ताकि खेतों में धान रोप सके उन दिनों बच्चे भी खेतों के गिली मिट्टी में लथपथ होकर आनन्द क्रीड़ा करते हैं | किसान हल जोतते हैं तथा दिन भर खेतों की बुवाई करते हैं | सांस्कृतिक रंगों से ओत-प्रोत हो उठता हैं |

4.बालगोविन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है ?

उत्तर -बालगोविन भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा थी | वे कबीर को अपना साहब मानते थे और उन्हीं की दी गई शिक्षाओं को पालन करते थे| उनका सब कुछ साहब का था | खेत में जो फसल होती उसे सिर पर लादकर पहले चार कोस दूर कबीर के दरबार में ले जाते और वहाँ प्रसाद स्वरूप जो कुछ मिलता उसी से गुजर करते | कबीर पर भगत की श्रद्धा का सभवतः यही कारण रहा होगा कि भगत के विचार कबीर की शिक्षाओं से मिलते होगे और इन्हें इनमें आनंद मिलता होगा | भगत भी कबीर की भांति ही परमात्मा में विश्वास रखते थे | इसलिए कबीर के विचारों पर उनकी अगाध श्रद्धा थी |

पद-सूरदास

निम्नलिखित पद को पढ़कर पूछे गए प्रश्न के उत्तर लिखिए |

1. उधौ तुम हो अति बड़भागी |
    अपरस सहत सनेह तगा तै नाहिन मन अनुरागी |
    पुरइनि पात रहत जल भीतर ता रस देह न दागी |
    ज्यो जल मांह तेल की गागरि बूंद न ताकौं लगी |
    प्रीति नदी में पाऊ, न बोरयों दृष्टि न रूप परागी |
    सूरदास अबला हम भोरी गुर चींटी ज्यौ पागी |

(क) गोपियाँ उद्धव को भगवान क्यों कहती है ?

उत्तर - अनुराग न होने के कारण उन्हें कैसी की विरह वेदना नहीं झेलनी पड़ी |

(ख) उद्धव के व्यवहार की तुलना किस किससे की गई है ?

उत्तर- उद्धव के व्यापार के व्यवहार की तुलना पानी में पड़े रहने वाले कमल के पत्ते से की गई हैं | जल में पड़ी तेल की गागर से की गई हैं |

(ग) गुर चांटी ज्यौं पागी में कौन किसका प्रतीक है ?

उत्तर- गुड़ कृष्ण का चीटियाँ गोपियों की |

(घ) प्रस्तुत पद में रूपक एवं उत्प्रेक्षा अलंकार छांटकर लिखिए |

उत्तर- प्रीति दिन रूपक/ ज्यो जल मांह -उत्प्रेक्षा/गुर चांटी ज्यौं पागी- उत्प्रेक्षा

(ड) इस पद में गोपियाँ अप्रत्यक्ष रूप से उद्धव से क्या कहना चाहती हैं ?

उत्तर- उद्धव तुम ज्ञानी हो नीतिज्ञ हो किन्तु तुम्हारे सामान भाग्यहीन कोई नहीं है क्योंकि प्रेम के सागर कृष्ण के पास रहकर भी तुम प्रेम से बिमुख हैं |

2. मन की मन नहीं मांझ रही।
    कहिए जाए कौन पै ऊधौ नाही परत कही |
    अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही |
    अब इस जोग संदेसनि सुनि सुनि विरहिनि बिरह दही |
    चाहति हुती गुहारि जितहिं तैं उत तै धार बही |
    सूरदास अब धीर धरही क्यों मरजादा न |

(क)अनुप्रास अलंकर का उदाहरण छाँटकर लिखिए |

उत्तर- मन की मन नहीं मांझ रही
    कहिए जाए कौन पै ऊधौ नाहीं परत कही |
    अवधि अधार आस आवन की तन मन व्यथा सही |
    अब इस जोग संदेसनि सुनि सुनि बिरहिनी बिरह दही |

(ख)सुनि सुनि मैं कौन सा अलंकार हैं ?

उत्तर- पुनरुक्ति अलंकार |

(ग) गोपियों अब धैर्य धरने को तैयार क्यों नहीं है ?

उत्तर- गोपियों कहती हैं की कृष्ण ने हे अपनी मर्यादा नहीं रखी तो वे अब किसके सहारे धैर्य धारण करें | जिस पर हमें विश्वास था उसी ने हमें धोखा दे दिया |

(घ) उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहानि में घी का काम कैसे किया ?

उत्तर- गोपियों के मन में कृष्ण के आगमन की आस विद्यमान थी इसी के बल पर वह वियोग की वेदना सह रही थी पर उद्धव के सन्देश ने उस आशा को नष्ट कर दिया जिससे उनका रहा सहा धैर्य भी जाता रहा और

उनकी विरह व्यथा और भी बढ़ गई |

(ड) गोपियों के मन की बात मन में ही क्यों रह गई ?

उत्तर - कृष्ण स्वयं नहीं आए उद्धव को भेजा, उद्धव ने उनके दुख को समझा नही योग सन्देश दे दिया |

3. हमारै हरि हरिल की लकरी |

मन क्रम वचन नन्द नन्दन उर यह दृढ़ करि पकरि |
जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि कान्ह कान्ह जकरी |
सुनत जोग लागत है ऐसो ज्यों करुई ककरी |
सु तौ व्याधि हमकौ लै आए देखि सुनी न करि |
यह तौ सूर तिन्हीं लै सौपो जिनके मन चकरी |

(क) कृष्ण को हारिल की लकड़ी क्यों कहा गया है?

उत्तर- हारिल पक्षी की विशेषता होती है कि वह दिन रत अपने पंजों में एक लकड़ी को थामे रहता है उसे कभी नहीं छोड़ता | इसी प्रकार गोपियाँ दिन रात कृष्ण को अपने मन में बसाए हुए है | वे किसी भी सूरत में उन्हें नहीं भूलती है |

(ख) योग और गोपियों ने कड़वी ककड़ी क्यों कहा है ?

उत्तर- जिस प्रकार मनुष्य कड़वी ककड़ी को अपने मुंह में एक क्षण के लिए भी नहीं रखता और तुरंत ही उसे त्याग देता है उसी प्रकार गोपियाँ भी एक क्षण के लिए भी योग को नहीं अपनाना चाहती है |

(ग) उद्धव गोपियों के लिए किस तरह की व्याध लेकर आए हैं ?

उत्तर- उद्धव योग रूपी व्याधि लेकर आए हैं | योग रुखाँ तथा उन्हें कृष्ण से अलग करने वाला है इसलिए वे इसे व्याधि कहती हैं |

(घ) अनुप्रास अलंकार के दो उदहारण लिखिए |

उत्तर - 1. हमारे हरि हारिल की लकड़ी |
2. ज्यौ करुई ककरी |

लघू उत्तरिय पश्नोत्तर :

1. उध्दव के व्यवहार की तुलना किस किससे की गई है?

उत्तर- उध्दव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित से की गई है -

कमल के पत्ते से जो जल में रहकर भी उससे प्रभावित नहीं होते | जल मे पड़ी तेल की बूंद से जो जल में धुलती मिलती रहती है |

2. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है ?

उत्तर- यह व्यंग्य निहित है कि उध्दव कृष्ण के निकट रहकर भी उनके प्रभाव से सर्वथा अछूते हैं उनके मन में अनुराग भाव उत्पन्न नहीं हुआ है | यह स्थिति उद्धव के लिए भाग्यशाली हो सकती है गोपियों के लिए नहीं |

3. गोपियों ने उध्दव से योग की शिक्षा कैसे लोगो को देने के लिए कही है ?

उत्तर- गोपियों ने उध्दव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कही है जिनके मन चकरि के समान घूमते रहते हैं उन्हें ही योग के द्वारा मन एकाग्र करने की आवश्यकता हैं |

4. सूरदास किस मार्ग के समर्थक थे ?

उत्तर- सूरदास सगुन भक्ति मार्ग के समर्थक थे | इस मार्ग में भगवान के साकार रूप की उपासना की जाती है | इसलिए वे अपने पदों में योग मार्ग के विरुध्द अपनी बात कहते हुए दिखाई पड़ते हैं |

5. उध्दव गोपियों की मनोदश क्यों नहीं समझ सके |

उत्तर- उध्दव को निर्गुण ज्ञान पर अभिमान था | ज्ञान के दर्प में वे गोपियों के आदर्श प्रेम को नहीं समझ पाए |

6. भ्रमर गीत की विशेषताएँ लिखित |

उत्तर- भ्रमरगीत में निर्गुण ब्रह्म का विरोध, सगुन की सराहना वियोग श्रृंगार का धार्मिक चित्रण हैं इसमें गोपियों की स्पष्टता वाकपटुता, सहृदयता, व्यंग्यात्मकता, सराहनीय हैं | एकनिष्ठ प्रेम, योग का पलायन स्नेहसिक्त उपालंभ अवलोकनीय है |

7. गोपियों का राजधर्म की याद क्यों दिलाना पड़ा ?

उत्तर- प्रेम आदि की पवित्र नीतिपरक बातें कृष्ण भूलकर अनीति पर उतर आए हैं | अतः योग संदेश को भेजकर प्रेम विरुद्ध कार्य कर रहे हैं | इसलिये राजधर्म की याद दिलाकर प्रेम नीति पर लेने का प्रयास किया |

8. सूरदास के पढ़े पदों के आधार पर सूरदास की काव्यगत विशेषताए बताई |

उत्तर- (क) एकनिष्ठ प्रेम, (ख) वाकपटुता (ग) गीत शैली (घ) व्यग्यात्मक शैली का प्रयोग |

9. गोपियों के वाक् चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर- स्पष्टता व व्यंग्यात्मक प्रयोग |

10. योग संदेश का गोपियों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर- विरहाग्नि बढ़ गई उनका मन दुखी हो गया | उध्दव को उलाहने देने लगी |

सवैया-देव

1. पायनि नूपुर मं कटि जू बजैं, किंकिणि कै धुनि की मधुराई
   सांवरे अंगलसै पटपीत, हिये हुलसे बनमाल सुहाई |
   माथे किरीट बड़े दृग चंचल, मंद हंसी मुखचंद जुन्हाई |
   जै जग मंदिर दीपक , सुन्दर श्री ब्रजदूलह देव सहाई |

प्रश्न:

1. मुखचंद में कौन सा अलंकार है ?

उत्तर - रूपक अलंकार (मुख और चन्द्रमा में अभेद होने के कारण)

2. कृष्ण ने शरीर पर क्या क्या धारण किया हैं ?

उत्तर- पैरों में घुंघरू
कमर में करधनी
देह में पीताम्बर
माथे पर मुकुट
गले में बनमाल

3. बनमाल कहाँ शोभायमान है ?

उत्तर- बनमाल श्रीकृष्ण के गले में अथार्त ह्रदय पर शोभायमान है |

4. कृष्ण जी की मुस्कान कैसी लग रही है ?

उत्तर- कृष्ण की मुस्कान उनके मुखरूपी चन्द्रमा की चांदनी के सामान फैली हैं|

5. जै जग मदिर दीपक किसके लिए प्रयुक्त किया गया है तथा क्यों ?

उत्तर- जै जग मंदिर दीपक श्रीकृष्ण के लिए प्रयुक्त किया गया है क्यों वे इस संसार रूपी मंदिर में दीपक के सामान प्रकाशमान हैं |

2. डर द्रुम पालना बिछौना नव पल्लव के
सुमन झिंगोला सो-है, तब छवि भारी हैं |
पवन झुलावै केकी कीर बतरावै देव
कोकिल हलावै हुल्कावै कर तारी हैं ,
पूरित पराग सौ , उतारों करे राइ नोन
कंजकाली नायका लतान सिर सारि दें |
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि ,
प्रताही जगावत गुलाब चटकारी दें |

प्रश्न:

1. प्रस्तुत पद में किसका चित्रण किया गया है ?

उत्तर- प्रस्तुत पद में वसंत ऋतु का वर्णन किया गया है |

2. बालक के लिए पालना कहाँ पड़ा है ?

उत्तर- बालक के लिए पालना पेड़ों की डालियों पर पड़ा हैं |

3. बालक का बिछौना किसे कहा गया है ?

उत्तर- नई-नई कोमल पत्तियों से उसका बिछौना बना हैं|

4. बालक को झुला कौन झुला रही है ?

उत्तर- मंद मादक पवन बालक को झुला रही हैं |

5. बालक कैसे वस्त्र धारण किए हुए हैं ?

उत्तर- सुन्दर-सुन्दर खुशबूदार फूलो का झिंगोला बालक धारण किए हुए है |

3. फटिक सिलानी सौं सुधरयौ सुधा मंदिर
उदधि दधि सो अधिकाई उमगे अमंद |
बहार ते भीतर लौ भीति न दिखाए देव,
दूध को को फेन फैल्यो आँगन फरसबंद |
तारा सी तरुनी तामे ठाढ़ी झिलमिली होती,
आरसी से अंबर में आभा सी उजारी लगें,
प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लगत चंद |

प्रश्न :

1. उपर्युक्त पंक्तियों में किसका वर्णन किया गया है ?

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों में पूर्णिमा की रात में चंद तारो की आभा से शोभित रात्रि के सौन्दर्य का वर्णन किया गया है |

2. सुधा मंदिर किससे बना है ?

उत्तर- सुधा मंदिर स्फटिक की शिलाओं से बना है |

3. इस मंदिर को देखकर क्या लगा रहा है ?

उत्तर- इस मंदिर को देखकर ऐसा लगा रहा है मनो दही का सागर उमंग से उमड़ता चला आ रहा है |

4.बाहर से भीतर लौ भीती क्यों नहीं दिखाई दे रही है ?

उत्तर- बाहर से भीतर लौ दिखाई नहीं देती क्योंकि यह मंदिर पारदर्शी स्फटिक की शिलाओ व अमृतरूपी चांदनी से बना हुआ है |

5. मंदिर का आंगन कैसा दिखाई दे रहा है ?

उत्तर- मंदिर का आँगन देखकर लग रहा है मनो दूध का फेन चारो तरफ फैला है |

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर :

1. श्रीकृष्ण को संसार का दीपक क्यों कहा गया है ?

उत्तर- जिस प्रकार दीपक के प्रकाशित होने से मंदिर में उजाला फैल जाता है | उसी प्रकार कृष्ण के होने से समस्त ब्रज प्रदेश में उमग आनंद उल्लास प्रकाश फैल जाता है | इसी कारण उन्हें संसार रूपी मंदिर का दीपक कहा गया है |

2. दूसरे कवित्त के आधार पर स्पष्ट करें की ऋतुराज बसन के बल रूप का वर्णन परम्परागत बसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है ?

उत्तर- परंपरागत बसंत वर्णन में बसंत ऋतु को उद्दीपन के रूप में चित्रित किया जाता है | कवित्त में उसे आलम्बन के रूप में चित्रित किया है | बसंत को बालक के रूप में चित्रित कर उसके हाव भाव क्रियाकलाप आदि को चित्रित किया है जो इसे परंपरागत वर्णनों से भिन्न बनता है |

3. कवि ने चांदनी रात की उज्ज्वलता का वर्णन करने के लिए किन किन उपमानो का प्रयोग किया है ?

उत्तर - कवि ने चांदनी रात की उज्ज्वलत का वर्णन करने के लिए निम्नलिखित उपमानो का प्रयोग किया है -

स्फटिक शिला का
दही के समुद्र का
दूध के से फेन का |

देव-पायनी नुपुर मंजू बजैं.................

प्रश्न 1. चांदी रात की सुन्दरता को कविने किन किन रूपों में देखाँहै ?

उत्तर- कविने चांदनी रात की सुन्दरता को निम्न रूपों में देखाँहै |

1. स्फटिक शिलाओं से निर्मित सुधा मंदिर रूप में देखाँ है |
2. चारो ओर फैलती चांदनी को दीर्ध रूप ममुद्र की तरह देखाँहै जो चारो ओर उमड़ पद रही है|
3. आंगन में उमड़ते हुए दूध के झाग के रूप में देखाँहै |
4. अँबर रूपी दर्पण के रूप में चांदनी को देखाँ है |

माता का आँचल- शिवपूजन सहाय

1. माँ के प्रति अधिक लगाव न होते हुए भी विपत्ति के समय भोलानाथ माँ के आँचल में ही प्रेम और शांति पाता इसका इसका आप क्या कारण मानते हैं?

उत्तर -यह बात सच है कि बच्चे को अपने पिता से अधिक लगाव था | उसके लालन पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे | परन्तु विपदा के समय उसे लाड़ की जरुरत थी अत्यधिक ममता ओर माँ की गोद की जरुरत थी उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती है पिता से नहीं | यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी की याद आती है बाप या नाना की नही | माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है |

2. भोलानाथ और अपने साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किया प्रकार भिन्न है ?

उत्तर- आज जमाना बदल चुका है| आज माता पिता अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखते है वे उसे गली मोहल्ले में बेफिक्र खेलने की अनुमति नहीं देते | जब से निठारी जैसे कांड होने लगे हैं तब से बच्चे भी डरे-डरे रहने लगे हैं | न तो हुल्लड़बाजी, शरारते और तुकबन्दियाँ रही हैं न ही

नंग धड़ंग घूमते रहने की आजादी| अब तो बच्चे प्लास्टिक और इलेक्ट्रोनिक्स के महगे खिलौनों से खेलते हैं | बरसात में बच्चे बहार रह जाए तो माँ बाप की जन निकल जाती है | आज न कुएँ रहे न रहत न खेती का शौक | इसलिए आज का युग पहले की तुलना में आधुनिक बनावटी, रसहीन हो गया |

3. माता का आँचल पाठ में बच्चे की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है ?

उत्तर- इस पाठ में बच्चे की जो दुनिया रची गई वे वह 1930 के आस पास की है तब बच्चे घर के सात ? मान से साधारण सी चीजों से खेलने से काम चला लेते थे | वे प्रकृति की गोद में रहकर खुश थे | आज हमारी दुनिया पूरी तरह से भिन्न है | हमें देर सारी चीजें चाहिए | खेल सामग्री में भी बदलाव आ गया है | खाने- पीने की चीजों में भी काफी बदलाव आया है | दुनिया टी वी , कोल्ड ड्रिंक , पिजाजा , चाकलेट के इर्द- गिर्द घूमती हैं |

4. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता हैं ?

उत्तर- शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रूचि लेता हैं | उनके साथ खेलना अच्छा लगता हैं | अपनी उम्र के साथ जिस रूचि से खेलता हैं वह रूचि बड़ो के साथ नहीं होती है | दूसरा कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसककर भूल जाता है |

5. यहाँ माता पिता का बच्चे के परती जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए |

उत्तर- पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठकर झुला झुलाना कितन मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता हैं |

पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालो पर चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा मूंछे पकड़ने पर बनावटी रोना रोना का नाटक और शिशु का हँस पर्ण अत्यन्त जीवंत लगता है |

माँ के द्वारा गोरस, भात , तोता मैंना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना , शिशु का श्रृंगार करना और शिशु का सिसकना बच्चों की टोली को देखकर सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मुसन तिवारी को चिड़ना आदि अदभुत दृश्य उकेरे गए है | ये सभी दृश्य अपने शैशव की याद दिलाते हैं |

2. लखनवी अंदाज -यशपाल

1. निम्नलिखित गधांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर छाँटकर लिखिए |

आराम से सेकेण्ड क्लास में जाने के लिए दम अधिक लगते हैं | दूर तो जाना नही था | भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोच सकने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के किए टिकट सेकेण्ड क्लास का ही ले लिया | गाड़ी छूट रही थी | सेकेण्ड क्लास के एक छोटे दिव्वे को खाली समझकर जरा दौड़कर उसमे चढ़ा गए | अनुमान के प्रतिकूल डिब्बा निजरां नही था | एक बर्थ पर लखनऊ की नवाबी नस्ल के एक सफेदपोश सज्जन बहुत सुविधा से पालथी मर बैठे थे | सामने दो ताजे - चिकने खीरे तौलिए पर रखे थे | डिब्बे में हमारे सहसा कूद जाने सा सज्जन की आँखों में एकांत चिंतन में विधान का असंतोष दिखाई दिया | सोचा हो सकता है यह भी कहानी के लिए सूझ की चिंता में हो या खीरे जैसी अपदार्थ वस्तु का शौक करते देखे जाने के संकोच में हो |

1. लेखक सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में क्यों जा रहे थे ?

(क) फर्स्ट क्लास का टिकट महगा था

(ख) सेकेण्ड क्लास के डिब्बे में लेखक को एकांकी मिल सकता था |

(ग)सेकेण्ड क्लास में नबाब साहब जा रहे है |

(घ) थर्ड क्लास में जाना लेखक को अपमान लगता था

2. डिब्बे की स्थिति के बारे में प्रवेश से पूर्व लेखक का अनुमान था की :

(क) डिब्बा एकदम खाली होगा | (ख) उसे खिड़की वाली सीट मिलेगी |

(ग) वह नवाब साहब से मिल सकेगा (घ) डिब्बा बहुत सुविधाजनक होगा |

3. लेखक के डिब्बे में चढ़ने पर नवाब साहब की क्या प्रतिक्रिया हुई |

(क) नवाब साहब लेखक को देखकर प्रसन्न हो गए

(ख) नवाब साहब ने लेखक का मौन स्वागत किया

(ग)नवाब साहब को अच्छा नही लगता | (घ) नवाब साहब ने लेखक को अपमानित किया

4. लेखक ने नवाब की प्रतिक्रिया का यह कारण कल्पित किया की :

(क) नवाब साहब को संकोच था की लेखक ने उन्हें खीर खाते देख लिया |

(ख) लेखक को लगा की शायद नवाब साहब भी कहानी के विषय में सोच रहे हैं |

(ग) कोई सही नहीं हैं |

(घ) (क) और (ख) दोनों विकल्प सही है |

5. सहसा कूद जाने का क्या तात्पर्य है ?

(क) अचानक कूद जाना (ख) ऊपर से कूद पड़ना
(ग) अचानक तीव्रता से प्रवेश करना (घ) डिब्बे में कूदकर चढंना

उत्तर- 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4.(घ) 5. (ग)

(ब) खाली बैठे कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है | नवाब साहव की असुविधा और सकोच के कारण का अनुमान करने लगे | सम्भब है, नवाब साहब ने विल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकेण्ड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गंवारा न हो की शहर का कोइ सफेदपोश उन्हें मझले दर्ज में सफर करता देखे | अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे ख़रीदे होगे | और अब किसी सफेदपोश के सामने खीर कैसे खाए ? हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे | नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे | आहे नवाब साहब ने सहसा ने सहसा हमे संबोध न किया आदाब अर्ज जानबा खिरे का शौक फरमाएँ | नवाब साहब ने सहसा भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा | भांप लिया आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें की हरकत में लथेड लेना चाहते हैं | जवाब दिया शुक्रिया की बाला शौक फरमाएँ |

1. लेखक को कौन सी आदत है ?
(क) खाली बैठने की (ख) कल्पना करने की
(ग) खाली बैठकर कल्पना करने की (घ) खाली समय में होने वाली कल्पनाओं पर चिंतन की

2. लेखक ने नवाब साहब के बारे में क्या अनुमान लगाया ?
(क) वे प्रसन्नचित हैं | (ख) वे एकांत के आकांक्षी हैं |
(ग) वे मेरा साथ पाकर खुश है | (घ) ए मेरी मौज़ूदगी से नाखुश हैं |

3. नवाब साहब खिड़की से बाहर क्यों देख रहे होगे ?
(क) प्राकृतिक दृश्य देखना चाहते थे | (ख) लेखक के प्रति उदासीनता दिखने के लिए |
(ग) खीरा खाने के तरीके के विषय में सोचने के कारण (घ) चिंता मुक्ति का प्रयास करने हेतु |

4. नवाब साहब ने संवादहीनता दूर करने के लिए क्या किया ?
(क) खीरा कहने का प्रस्ताब दिया (ख) कहानी सुनाने का आग्रह किया |
(ग) अपने पास बुलाया | (घ) हालचाल पूछा |

5. यहाँ सफेदपोश से क्या तात्पर्य है ?
(क) बुरा व्यक्ति (ख) भला व्यक्ति
(ग) स्वार्थी व्यक्ति (घ) सम्पन्न व्यक्ति

उत्तर - 1. (ग) 2. (ख) 3.(ख) 4. (क) 5.(ख)

(स) लखनऊ स्टेशन पर खीर बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं | ग्राहक के लिए जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की पुड़िया भी हाजिर कर देते हैं | नावाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फकों पर जीरा मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी | उनकी प्रत्येक भाव भंगिमा और जबड़ो के स्फुरण से स्पष्ट था की उक प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसश्वादन की कलना से प्लावित हो रहा था | हम कनखियों से देखकर सोच रहे थे की मियां रईस बनते हैं | लेकिन लोगों की नजरो से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं | नवाब साहब ने फिर एक बार हमारी ओर देख लिया वल्लाह शौक कीजिए लखनऊ का बालम खीरा है | नमक मिर्च छिडक दिए जाने से ताजे खीरे की पनियते फांके देखकर मुँह में पानी जरुर आ रहा था लेकिन इंकार कर चुके थे | आत्म सम्मान विबहना ही उचित समझा उत्तर दिया शुक्रिया इस वक्त तलब महसूस नही हो रही मेदा भी जरा कमजोर है कि बाला शौक फरमाएँ |

1. लखनऊ स्टेशन पर खीर बेचने बालों की क्या विशेषता हैं ?
   (क) वे आसानी से वेच देते हैं | (ख) वे बातें बहुत बनाते हैं |
   (ग) वे चटपटा मसाला भी देते हैं | (घ) वे रूखापन दिखाते हैं |
2. नवाब साहब के हाव भावो से क्या पता चल रहा था ?
   (क) लेखक के प्रति क्रोध आ रहा था | (ख) खीरे के प्रति अरुचि |
   (ग) खीरे के स्वाद का आनन्द | (घ) मिर्च के तीखेपन के प्रति अरुचि
3. नवाब साहब ने लेखाक के प्रति अरुचि |
   (क) खीर खाना चाहेगे (ख) आपका गंतव्य क्या है ?
   (ग) क्या काम करते हैं ? (घ) इस डिब्बे में कैसे आए ?
4. लेखक ने खीरा खाने की इच्छा होते हुए भी मना क्यों कर दिया ?
   (क) क्योंकि वह मुफ्त के खीरे नही खाना चाहता था
   (ख) नवाब साहब की उदासीनता के करण |
   (ग) उसे खीरा अच्छा नही लगता था |
   (घ) पहले इंकार कर चुके थे, इकलिए अब आत्मसम्मान बचाए रखना था |
5. शौक कीजिए का तात्पर्य है :
   (क) आनंद लीजिए (ख) शौक कीजिए
   (ग) शौक ही तो लीजिए (घ) रुचिपूर्वक खी

उत्तर : 1. (ग) 2. (ग) 3. (क) 4. (घ) 5.(क)

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. नवाबो में एक विशेष पकार की नफासत और नजाकत देखने को मिलती है | लखनवी अंदाज पाठ के आधार पर उदहारण सहित स्पष्ट कीजिए |

उत्तर –नवाब सदा से एक बिशेष प्रकार की नफासत और नजाकत के लिए मशहूर है | लखनवी अंदाज पाठ में भी नबाबो की इसी नफासत और नजाकत का उदहारण मिलता है | नवाब साहब खीरे खाने के लिए यत्नपूर्वक तैयारी करते हैं | खीरे काटकर उन पर नमक मिर्च लगाते हैं किन्तु बिना खाए ही केवल सुगन्ध रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेक देते हैं और फिर इस प्रकार लेट जाते हैं जैसे इस सारी प्रक्रिया में बहुत थक गए हो ऐसी नफासत और नजाकत नवाबो में ही दिखाई देती है |

2. आपके विचार में नवाब साहव ने नमक मिर्च लगे खीरे की फांको को खिड़की से बाहर क्यों फेक दी ?

उत्तर- नवाब साहब ने खीरे की फांको को खिड़की से बाहर संभवतः इसलिए फेंक दिया होगा क्योंकि वे नवाब छोटे से लेखक से सामने खीरे जैसी सामान्य वस्तु का शौक करने में संकोच का अनुभव कर रहे होगे | अपनी रईसी और नवाबी का प्रदर्शन लगाने के लिए उन्होंने खीरे की फांके फ़ेंक दी |

3. लखनवी अंदाज पाठ में किस पर और क्या व्यंग्य किया गया है ?

उत्तर लखनवी अंदाज पाठ मर नवाब साहब के माध्यम से उस सामंती वर्ग पर व्यंग्य किया गया है, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन शैली का आदि है नवाब द्वारा अकेले में खीरे खाने का प्रबंध करना और लेखक के आ जाने पर उन खीरो को सूँन्धकर खिड़की से बहार फेंककर अपनी अदबी रईसी का गर्व अनुभव कर के इसी दिखावे का प्रतीक है | समाज में आज भी ऐसी दिखावटी संस्कृति दिखाई देती हैं |

4. बिना विचार घटना और पात्रोंके भी क्या कहानी लिखी जा सकती है ? लेखक के इस विचार के आप कहाँ तक सहमत हैं ?

उत्तर- हम लेखक के विचार से बिलकुल भी सहमत नहीं है कि बिना विचार घटना और पात्रोँ के भी कहानी लिखी जा सकती है | किसी भी कहानी के लिए उसकी आत्मा होता है कथानक | यह कथानक अनिवार्य रूप से किसी विचार अथवा घटना पर आधारित होता है जिसे पात्रो के माध्यम से ही अभिव्यक्त किया जा सकता है | ये पात्र और घटनाएँ वास्तविक भी हो सकती है और काल्पनिक भी किन्तु इनके अभाव में कहानी के स्वरूप की कल्पना नहीं की जा सकती |

प्र .1 नवाब साहव द्वारा खीरा खाने की तैयारी करने का एक चित्र प्रस्तुत किया गया है | इस पूरी प्रक्रिया को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए |

उत्तर- नवाब साहब सामने बैठे लेखक को अपने संकोच को दूर करते हुए कुछ नए अंदाज में खीरा काटने की प्रक्रिया अपनाते हैं |

1. बर्थ से नीचे रखे पानी से भरे लोटे को लेकर खिड़की के बाहर खीरो को अच्छी तरह धोते हैं और तौलिए से पोछते हैं |

2. जेब से चाकू निकाल कर खीरे के सिर को काटकर और गोदकर झाग निकलते हैं |

3. खिरो को सावधनी से छिलते हैं फांके बनाते हैं और बिछली तौलिए पर करीने से सजाकर देखते रहते हैं |

4. कटी हुई फनको जरा जीरा मिले नमक को और काली मिर्च को बुरकाते हैं |

5. खीरो सामने देखकर खीरे का रसास्वादन मन ही मन करते लगते हैं और मुँह में पानी भर आती हैं |

13.मानवीय करुणा की दिव्य चमक - सर्वेस्वद्याल सक्सेना

निम्नलिखित गधांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए |

(अ) जिसकी रंगों से दूसरे के किए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो ? यह सवाल किस ईश्वर से पूछे ? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था | वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे ? एक लम्बी पादरी के सफेद चोगे से ढकी आकृति सामने है गोरा रंग , सफेद झाई मरती भूरी दाढ़ी नीली आँखे बाँहे खोल गले लगाने को आतुर | इतनी ममता इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था |

1. फादर किसे कहा गया है ?

(क) पिताजी (ख) लिखक के पिता

(ग) चर्च के पॉप (घ) फादर कामिल बुल्के

2. फादर का स्वर्गवास किन परिस्थतियों में हुआ ?

(क) प्राकृतिक व सामान्य मृत्यु (ख) जहर देकर षड्यंत्रपूर्वक मार दिया

(ग) लम्बी बीमारी के करण कष्टप्रद मृत्यु (घ) (ख) एवं (ग) दोनों

3. फादर को साधु की संज्ञा दी क्योंकि

(क) वे सन्यासी थे (ख) वे ईश्वर की भक्ति में लींन रहते थे

(ग) वे लोगो से प्रेम सहानुभूति मैत्री व सहयोग का भाव रखते थे |

(घ) वे लम्बी दाढ़ी सफेद चोगा धारण करते थे ?

4. फादर लेखक के साथ कैसा व्यवहार करते थे ?

(क) अपनात्वपूर्ण (ख) सम्मानपूर्ण

(ग) ढोगपूर्ण (घ) औपचारिक

5. अमृत का पर्यायवाची नहीं है :

(क) अमिय (ख) पीयूष

(ग) सोम (घ) विष

उत्तर- 1. (घ) 2.(ग) 3. (ग)   4.(क)   5.(घ)

(ब)उनकी चिंता को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी | हर मंच से इसकी तकलीफ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते | बस इसी एक सवाल पर उन्हें झुंझलाते देखा है और हिन्दी वालों द्वारा ही हिन्दी की उपेक्षा पर दुःख करते उन्हें पाया है | घर परिवार के बारे में निजी दुःख तकलीफ के बारे में पूछना उनका स्वभाव था और बड़े से उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भार देता था जो किसे गहरी तपस्या से

जनमती है | हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह | मुझे अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद आ रही है और फादर के शब्दों से झरती वायरल शांति भी |

1. फादर को किस भाषा से प्रेम था ?

(क) हिन्दी भाषा से (ख) अपनी मातृभाषा से

(ग) अंग्रेजी भाषा से (घ) फ्रेंच भाषा से

2. फादर की झुंझलाहट किस कारण थी ?

(क) लोगो के सवालों के कारण (ख) घर परिवार की दुःख तकलीफों के कारण (ग) हिन्दी भाषियो द्वारा की दुःख ही हिन्दी की उपेक्षित स्थिति के कारण

(घ) हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा न दिलवा पाने के कारण

3. हर मौत दिखाती है जीवन को नयी राह का आशय है :

(क) मौत के बाद ही मुक्ति है (ख) मौत पुनर्जन्म के लिए राह बनती है

(ग) मौत शाश्वत सत्य है अन्तः मौत पर दुखी न हो

(घ) (क) एवं (ख) दोनों

4. दुःख में फादर के सांत्वना भरे शब्द सुनने वाले पर क्या प्रभाव डालते थे ?

(क) जादू सा चमत्कारी प्रभाव डालते थे

(ख) व्यक्ति को एक आशा से भर देते थे

(ग) असीम सन्ति का अनुभव करते थे

(घ) सभी विकल्प सही है

5. उपेक्षा का विलोम है :

(क) सापेक्ष (ख) अपेक्षा

(ग) परोक्ष (घ) प्रत्यक्ष

उत्तर 1. (क) 2. (ग) 3.(ग) 4.(घ) 5.(ख)

(स) " भारत जाने की बात क्यों उठी?" नही जनता बस मन में यह था | उनकी शर्त मान ली गई और वह भारत आ गए | पहले : जिसे संघ" में दो साल पादरियों के बीच धर्मचार की पढाई की | फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे | कलकत्ता से बी ए किया और फिर और फिर इलाहाबाद से एम् ए | इन दिनों डॉ धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे | शोध प्रबंध प्रयोग विश्वविध्यालय के हिन्दी बिभाग में रहकर १९५० में पूरा किया - रामकथा उत्पत्ति और विकास ' | " परिमल " में उसके अध्याय पढ़े गए थे | फादर ने मतर्लिक के प्रसिद्ध नाटक व्लू बर्ड ' का रूपांतर भी किया है | नील- पंक्षी के नाम से | बाद में वह सेंत जेवियर्स कॉलेज , रांची में हिन्दी तथा संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष हो गए और यही उन्होने अपना प्रसिद्ध अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोष तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी और

वही बीमार पड़े पटना आए | दिल्ली आए और चले गए 47 वर्ष देश में रहकर 73 वर्ष की जिंदगी जीकर |

1. फादर की किस शर्त का उल्लेख हुआ है ?

(क) संयासी धारण करने की (ख) मानव सेवा करने की

(ग) सन्यासी बनकर भारत जाने की (घ) अपनी पढ़ाई जरी रखने की

2. फादर की शिक्षा से उनकी क्या विशेषता प्रकट होती है ?

(क) वे पढने में गहन रूचि रखते थे | (ख) उन्हें हिन्दी से विशेष प्रेम था |

(ग) उनकी दृष्टि में भारतीय संस्कृति का विशेष स्थान था | (घ) सभी विकल्प सही है |

3. फादर ने इनमे से किसका अनुवाद किया ?

(क) नील पंछी (ख) रामकथा उत्पति और विकास

(ग) अंग्रेजी हिन्दी कोश (घ) ब्लू बर्ड और बाइबिल

4. फादर ने इनमें से किसका अनुवाद किया ?

(क) दार्जिलिग , कोलकत्ता, प्रयाग , रांची (ख) प्रयाग, इलाहाबाद , पटना , कोलकत्ता

(ग) इलाहाबाद, कोलकत्ता , दार्जिलिंग , प्रयाग (घ)प्रयाग, दार्जिलिंग , कलकत्ता , दिल्ली

5. परिमल किसके लिए प्रयुक्त है ?

(क) एक विश्वविध्यालय के लिए (ख) फादर की सस्ता के लिए

(ग) हिन्दी के एक बिभग का नाम (घ) लेखक और उसके मित्रो का साहित्यिक

उत्तर;1. (ग) 2.(घ) 3.(घ) 4.(ग) 5.(घ)

लघु उतरीय प्रश्नोतर

1. **फादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है | आशय स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति में फादर बुल्के के व्यक्तित्व का प्रभाव दर्शाया गया है | फादर की स्मृति को उदस शांत संगीत को सुनने जैसा कहा गया है | जिस प्रकार उदास और शांत संगीत हमारे मन में भी उदासी और शांत भाव से भर देती है | फादर का अभाव लेखक को उदास कर देता है | तो उनकी स्मृतियाँ उन्हें शांति प्रदान करती है |

2. फादर बुल्के के मन में संन्यास ग्रहण कर भारत जाने की बात क्यों उठी होगी ? अपने अनुमान से करण बताइए |

उत्तर : फादर वुल्के स्वभाव से साधु गुणों से युक्त थे | वे मानव सेवा में अपना जीवन अर्पित करना चाहते थे | इसलिए उन्होंने सन्यासी जीवन ग्रहण कर भारत आने का निश्चय किया होगा | संभवत: वे भारत की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति यहाँ के ज्ञान समाज आदि से प्रभावित रहे होगे | भारत की प्रकृति रीति रिवाज धार्मिकता , आत्मीयता , सादगी उन्हें पसंद होगी जिसके कारण उन्होंने यहाँ आने का मन बनाया होगा |

3 नाम आँखों को गिनना स्याही फैलाना है | आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से फादर कामिल

बुल्के की मृत्यु पर उपस्थित जनसमूह के दुःख को व्यक्त किया गया है | फादर की मृत्यु पर वहाँ उपस्थित अपार जनसमूह शौक संतव्त था | सभी की आँखों में आंसू भरे थे | ऐसे में उन नम आँखों की गिनती करना स्याही फैलाना ही था | अर्थात भावना या संवेदना को गिना या तोला नहीं जा सकता | उस समय भी रोने वालो की कोई कमी नहीं शोक में दूबे थे |

4. फादर बुल्के की उपस्थिति लेखक को देवदार की छाया जैसी क्यों लगती थी ?

उत्तर - फादर हर अवसर पर लेखक के पास उपस्थित रहते थे | उनके घरेलू उत्सवों संस्कारों में फादर बड़े भाई और पुरोहित की भूमिका में होते और अपने स्नेहाशीष देते | दुःख की घड़ी धूप में देवदार वृक्ष की छाया के समान शांति एवं शीतलता प्रदान करता था |

5. फादर कामिल बुल्के की चारित्रिक विशेषताए लिखिए |

उत्तर -मित्रवत व्यवहार सभी के लिए दया व् सहयोग का भाव, सदैव प्रसन्नचित रहना ईश्वर के प्रति अटूट आस्था, साथी से मेल जोल रखना, सभी के कल्याण का भाव रखना आदि विशेषताएँ हैं |

6.फादर कामिल बुल्के ने हिन्दी भाषा के लिए क्या क्या कार्य किए ?

उत्तर- 1. बी.ए. व एम.ए के माध्यम से हिन्दी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन |

2. अंग्रेज हिन्दी कोश की रचना |

3. शोध प्रबंध रामकथा उत्पत्ति और विकास |

4. ब्लू ' बर्ड ' का नील पंछी शीर्ष से हिन्दी रूपांतरण |

5. बाइबिल का हिन्दी अनुवाद |

7. फादर कामिल बुल्के के किन सद्गुणों के आधार पर उन्हें मानवीय करुना से ओतप्रोत व्यक्ति कह सकते हैं ?

उत्तर - फादर से सद्गुण करुणा, प्रेम, मित्रता का भाव सहयोगी परिचितों के साथ सत्त संपर्क रखना, सभी के प्रति शुभकामनाएँ रखना, स्वयं कष्ट सहकर दूसरो के दुःख दूर करने के लिए प्रयत्नरतरहना |

8. लेखक ने फादर कामिल बुल्के के लिए यह क्यों कहा की उन्हें जहरबाद से नही मरना चाहिएथा ?

उत्तर- फादर बुल्के ने आजीवन दूसरो के दुखो को दूर करने के लिए प्रयत्न किए | वे सभी के प्रति प्रेम सहानुभूति एवं करुणा का भाव रखते थे | अतः उनकी कष्टप्रद मौत को लेखक उनके प्रति अन्याय मानते हैं |

आत्मकथ्य- जयशंकर प्रसाद

प्र . 1. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है |

उत्तर -कविअपने बीते ही कष्टों के थपेड़ो से आहात हैं निराश है | उसकी स्थिति थके हुए पथिक की तरह है जिसका बढ़ने का उत्साह समाप्त हो गया है किन्तु जीना चाहता है और पते का उपयोग कर उत्साहित होता है |

कवि के जीने का आधार मात्र स्मृतियां है जिन्हें सँजोए रखना चाहता है | नैराश्मय स्थिति ही उसका पाथेय है |

2. अचानक पुलिस आ गई और गली में सन्नाटा छा गया | (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर -अचानक पुलिस के आते ही सन्नाटा छ गाया

3. रवि ने कपड़ें पहने , पर वह संतुष्ट नहीं है | (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर - जो कपड़ें रवि ने पहने हैं, वह सतुस्त नहीं है

आत्मकथ्य - जयशंकर प्रसाद

मूल भाव

आत्मकथ्य असहमति के तर्क से उत्पन्न हुई कविता है | 1932 में हंस पत्रिका में प्रकाशित यह कविता छायावादी शैली में लिखी गई है जीवन के यथार्थ एवं अभाव पक्ष की भार्मिक अभिव्यक्ति है , उनके जीवन की कथा एक सामान्य व्यकित की जीवन को कथा है |

पध - 1

मधुप गुन गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी ,
मुरझाये गिर रही पत्तियाँ देखो कितनी आज धनी
इस गंभीर अनंत नीलिमा में असंढय जीवन इतिहास
यह लो , करते ही रहते है अपना व्यंग्य मलिन उपहास
तब भी कहते हो कह डालूँ दुर्बलता अपनी बीती |
तुम सुनकर सुख पाओगे , देखोगे यह गागर रीती
किन्तु कही ऐसा न हो कि तुम ही खाली करने वाले
अपने को समझो, मेरा रस ले अपनी भरने वाले |
यह विडम्बना अरी सरलते तेरी हंसी उड़ाऊ मैं |
भूले अपनी या प्रवंचना औरों की दिखलाऊ मैं |

1. **गागर रीती से क्या आशय है ?**

   उत्तर -इसका अर्थ है कविके विगत जीवन में कुछ भी उल्लेखनीय नहीं हैं |

2. **मुरझाकर गिरती पत्तियों से क्या अर्थ निकलता हैं ?**

   उत्तर- मुरझाकर गिरती पत्तियां जीवन की नश्वरता का प्रतीक है |

उत्साह - सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला

पंक्ति संकेत घेर घेर .... बादल गरजो |

1. इस पद का मुख्य स्वर क्या है ?

उत्तर- प्रकृति के माध्यम से जीवन में उत्साह का संचार |

2. ललित से घुंघराले में प्रयुक्त अलंकार बताइए ?

उत्तर- मानवीकरण एवं पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार |

3. कविता में किस छंद और शैली का प्रयोग किया गया है ?

उत्तर- मुक्तक छंद और संबोधन शैली |

4. बादलो को वाल कत्पना के से पाल क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर- बादल का अस्तित्व क्षणभंगुर होता है बाल कल्पना के समान |

5. कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहा है ?

उत्तर- नया उत्साह एवं जोश भरने के लिए सुखमय जीवन के लिए |

पंक्ति संकेत - विकल .... बादल गरजो |

1. तप्त धरा से क्या आशय है ?

उत्तर- इसका प्रतीकार्थ है कि धरती के मनुष्य दुखो से पीड़ित व्याकुल है तथा वे दिन प्रतिदिन के शोषण का शिकार है |

2. इस पद से बादल का पर्यायवाची शब्द छांटकर लिखिए |

उत्तर-घन |

3. कवि ने बादल से लय प्रार्थना की है ?

उत्तर- कवि बादल से प्रार्थना करता है कि वह खूब बरसे और इस जग और धरा को शीतल कर दे अर्थात् जन के कष्टों को हर ले |

प्रश्नों-उत्तर

1. कविता में बादल किन किन अर्थो की ओर संकेत करता है ?

उत्तर- बादल प्यासों की प्यास बुझाने तथा खेतो में जल पहुँचाने वाला है | अर्थ में वह निर्माण का प्रतीक है | बादल क्रांति या संकेत लाकर शोषको का अंत करता हैं इस अर्थ में वह विनाश का प्रतीक मानता है |

2. कवि बादल से फुहार रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों करता है ?

उत्तर- कवि बादलो को क्रांति या बदलाव का प्रतीक मानता है | बदलाव हेतु तीव्र प्रहार शक्ति की आवश्यकता होती है | यह कार्य धीमे-धीमे या मृदुता से नहीं हो सकता | बादल

के गर्जन - तर्जन में ही यह शक्ति निहित है | अतः कवि से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर गरजने के लिए किया है |

3. कवि अपनी आत्मकथा क्यों नही सुनाना चाहता है ?

उत्तर- कवि के जीवन में सुख के क्षण क्षणमात्र ही है | उसके जीवन में सर्वत्र दुःख ही दुःख है अतः वह अपनी आत्मकथा नहीं सुनाना चाहता हैए |

पधांश -2

उज्ज्वल गाथा कैसे .... क्यों मेरी कथा की |

1. किसकी स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है ?

उत्तर- जो कवि का प्रिय पात्र था तथा जिसका सान्निध्य कवि को प्राप्त न हो सका उसी की स्मृति कवि के लिए पाथेय बनी है |

2. कवि अपनी कथा की सीवन क्यों नहीं उधड़ना चाहता है ?

उत्तर- कवि अपनी कथा की सीवन इसलिए नही उधड़ना चाहता क्योंकि वह अपने जीवन की पुरानी यादो को ताजा नहीं करना चाहता | ये यादें न केवल उसे दुख देगी बल्कि दूसरे लोगो के कवि के साथ किए गए बुरे व्यवहार को उद्घाटित कर देगी |

3. कवि ने अपने को थका पथिक क्यों कहा है ?

उत्तर- कवि ने उम्र के इस पड़ाव तक आने के लिए लम्बा रास्ता तय किया है तथा काफी दुख भी झेले हैं | इन सब स्थितियों को झेलकर वह काफी थक गए है |

4. यह कविता किस वाद की कविता है ?

उत्तर- छायावाद की

प्रश्न-उत्तर

1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहता है ?

उत्तर - कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहता है क्योंकि उसके जीवन में कहने या लिखने को कुछ विशेष नहीं है | साथ ही साथ वह अपने जीवन की पुरानी यादो को ताजा नहीं करता चाहता क्योंकि ये यादें न केवल उसे दुःख देगी बल्कि दूसरे लोगो के कवि के साथ किए गए बुरे व्यवहार को उद्घाटित कर देगी |

2. स्मृति को पाथेय बनाने का क्या अर्थ है ?

उत्तर - पाथेय का अर्थ होता है संबल का सहारा | स्मृति को पाथेय बनाने का अर्थ है कि कवि अपनी पुरानी मधुर यादों के सहारे ही अपनी जिन्दगी बिता रहा है क्योंकि उसके जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं जो उसे धीरज बंधा सके |

अट नहीं रही है - सूर्यकांत त्रिपाठी “निराला “

अट नहीं रही कविता एक प्रकृति सौन्दर्य वर्णन की छायाबादी कविता है जिसमें फागुन मास की मस्ती पुरानी मधुर शोभा रंग आदि का मनमोहक वर्णन किया गया है |

पंक्ति संकेत अट नही रही है ....हट नही रही है |

1. उपर्युक्त पंक्तियों में कवि किसका वर्णन कर रहा है ?

उत्तर -फाल्गुन के सौन्दर्य का |

2. अट नहीं रही है का प्रयोग यहाँ किसके लिए हुआ है और क्यों ?

उत्तर- प्रकृति सौन्दर्य का क्योंकि प्रकृति की शोभा अद्वितीय है |

3. फागुन के साँस लेते ही प्रकृति में क्या परिवर्तन दिखाई देते है ?

उत्तर- सम्पूर्ण वातावरण सुवासित हो उठा है | प्रकृति पल्लवित पुष्पित हो गई है |

4. प्रकृति के परिवर्तन का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है ?

उत्तर -कवि का मन कल्पना की उडान भरने लगता है |

5. घर घर व पर पर शब्द के द्वारा कवि क्या व्यक्त करना चाहता है ?

उत्तर - घर-घर का तात्पर्य है सम्पूर्ण धरा | पर पर कवि की अति उत्साह की मनोवृति को व्यक्त करता है |

पंक्ति संकेत पत्तों से लदी .... पट नहीं रही है |

1. पाट पाट में कौन सा अलंकर है ?

उत्तर - पुनरुक्ति प्रकास अलंकर |

2. उर में पुष्प माल पड़ने का क्या अर्थ है ?

उत्तर - कवि कहना चाहता है की फागुन के आगमन से वृक्ष पुष्पों से लद गए हैं |

3. फागुन की शोभा का वर्णन कीजिए |

उत्तर- फागुन की शोभा सर्वत्र व्याप्त हो गयी है | वृक्ष पृषपों से लद गई है | उसकी शोभा प्रकृति में समां नही रही है |

प्रश्नोत्तर

1. कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से क्यों नहीं हट रही है ?

उत्तर- फागुन की शोभा चारो ओर फैल गई है उसका सौन्दर्य फूलों, पत्तों तथा हवाओं के माध्यम से प्रकट हो रहा है | इसलिए कवि की आँख फागुन की सुन्दरता से हट नहीं रही हैं|

2. फागुन के साँस लेने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - फागुन के साँस लेने के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि फागुन में मौसम में सुगन्धित हवाएँ चल रही हैं जिससे उसकी शोभा चारो और फैल रही है |

यह दंतुरित मुस्कान (नागार्जुन)

1. तुम्हारी यह दंतुरित ....होगा कठिन पाषाण |

1. जलजात का पर्यायवाची लिखिए |

उत्तर- कमल |

2. दंतुरित मुस्कान से क्या आशय है ?

उत्तर- नन्हें बालक जिसके अभी दांत निकल रहे हैं, उस बालक के मुस्कान को दंतुरित मुस्कान कहा गया है |

3. परस का तत्सम रूप लिखिए |

उत्तर- स्पर्श |

4. बालक की मुस्कान की क्या विशेषता है ?

उत्तर- बालक की मुस्कान मृतक में भी जान डालने की क्षमता रखती है |

2. तुम मुझे पाए नहीं ....यह तुम्हारी मुस्कान |

1. शिशु द्वारा कवि को अनिमेष देखने का कारण स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- बालक ने कवि को प्रथम बार देखाँहे और उसे पहचानने के प्रयास में पलक नहीं झपक रहा हैं |

2. कवि शिशु से अपनी नजर हटाने की अनुमति क्यों चाहता हैं ?

उत्तर- कवि को लगता है कि लगातार देखने से शिशु थक जाएगा इसलिए विराम देना चाहता है |

3. माँ के माध्यम न बनने पर कवि क्यों देखने और जानने को वंचित रह जाता ?

उत्तर- माँ के माध्यम न बनने पर कवि शिशु के बाल सौन्दर्य और बाल सुलभ क्रियाओं को देखने से वंचित रह जाता है |

3. धन्य तुम माँ भी .... बड़ी ही छविमान |

1. कवि ने स्वयं को प्रवासी इतर अतिथि जैसे संबोधनों से क्यों संबोधित किया है ?

उत्तर- कवि आजीविका हेतु बाहर रहता है | कभी कभी ही उसका घर आना हो पाता है | अतः बच्चे से उसका संपर्क नाममात्र को ही हो पाता है | इसलिए कवि ने स्वयं को प्रवासी इतर अतिथि जैसे सम्बोधनो से संबोधित किया है |

2. प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ क्या है ?

उत्तर -प्रस्तुत पद में मधुपर्क का सांकेतिक अर्थ है माँ, ममता तथा वात्सल्य जो वह अपने बच्चे पर लुटाती हैं |

3.कवि बच्चे की माँ को धन्य क्यों कह रहा है ?

उत्तर -कवि बच्चे की माँ को धन्य कह रहा है क्योंकि उसे सदा ही बच्चे का सामीप्य सुख मिलता है | जबकि कवि इससे वंचित है |

फसल नागार्जुन

फास्ट पैदा क्या और उसे अफ्दा करंट में किन किन तत्वों का योगदान होता हैं | यही इस कविता में बताया गया है |

पद फसल क्या है ....हवा की थिरकन का

1. **पद की भाषा पर टिप्पणी करें |**

उत्तर भाषा खड़ी बोली हिन्दी हैं तथा तत्सम शब्दावली है |

2.**फसल को नदियों के पानी का जादू क्यों कहा गया है ?**

उत्तर - बिना नदियों के पानी के फसल का उत्पादन सम्भव नहीं है | इसलिए फसल को नदियों के पानी का जादू कहा गया है |

3. **फसल को हाथो के स्पर्श की महिमा क्यों माना गया है ?**

उत्तर - फसलो को उगने के लिए किसान दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं तब कहीं जाकर खेतों में फसल लहलहाती है | किसानो के इसी रस को सम्मान देने के लिए फसल को हाथों के स्पर्श को महिमा माना गया है |

प्रश्नों - उत्तर

1. कविता में फसल उपजाने के लिए किन आवश्यक तत्वो की बात कही गई हैं ?

उत्तर- कविता में फसल उपजाने के लिए निम्न तत्वों की बात कही गयी है -

पानी मिटटी धूप हवा मानव श्रम

4. फसल को हाथो के स्पर्श की महिमा क्यों माना गया है ?

उत्तर- फसल को उगाने के लिए किसान दिन रात कड़ी मेहनत करते हैं, तब कहीं जाकर खेतो में सफल लहलहाती है | किसानो के इस रसम को सम्मान देने के लिए फसल के हाथो के स्पर्श को महिमा माना गया हैं |

जार्ज पंचम की नाक- कमलेश्वर

1. सरकारी तंत्र में जार्ज पंचम को नाक लगते को लेकर जो चिंता या बदहवासी दिखाई देती है वह उनकी किस मानसिकता को दर्शाता हैं ?

उत्तर -सरकारी तंत्र में जार्ज पंचम की नाक लगाने को लेकर जो चिंता और बदहवासी दिखाई देती है उससे उनकी गुलाम मानसिकता का बोध होता है | इससे पता चलता है के वे आजाद होकर भी अंग्रेजों के गुलाम हैं | उन्हें अपने उस अतिथि की नाक बहुत मूल्यवान प्रतीत होती है जिसने भारत को गुलाम बनाया और अपमानित किया | वे नहीं चाहते कि बे जार्ज पंचम जैसे लोगो के कारनामे का उजागर करके अपनी नाराजगी प्रकट करे वे उन्हें अब भी सम्मान देकर गुलामी पर मोहर लगाए रखना चाहते हैं |

इस पाठ में अतिथि देबो भव की परम्परा पर मोहर लगाए रखना चाहते हैं | लेखक कहना चाहता है कि अतिथि का सम्मान करना ठीक है किन्तु वह अपने सम्मान के कीमत पर नहीं होना चाहिए |

2. रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी का क्या कारण था ? उसकी परेशानी को आप किस तरह तर्कसंगत ठहराएँगे |

उत्तर-रानी एलिजाबेथ के दरजी की परेशानी यह थी कि रानी भारत पाकिस्तानी और नेपाली के शाही दौरे पर कौम के वेशभूषा विभिन्न देशों के अनुकूल भी हो | दरजी की परेशानी जरुरत से अधिक है किसी देश में घूमते वक्त अपने कपड़ो पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना | चकाचौंध पैदा करना आवश्यक है परन्तु यदि रानी अपने कपड़ों को लेकर प्रश्न है तो दरजी बेचारा क्या करे ? उसे तो रानी की शान और वातावरण के अनुकूल वेशभूषा तैयार करनी ही पड़ेगी |

3. और देखते ही देखते नई दिल्ली का कायापलट होने लगी | नई दिल्ली की काया पलट के लिए क्या क्या प्रयत्न किए गए होंगे ?

उत्तर -जार्ज पंचम की लाट को नाक लगाने के लिए मूर्तिकार ने अनेक प्रयत्न किए | उसने सबसे पहले पत्थर को खोजने का प्रयत्न किया जिससे वह मूर्ति बनी थी | इसके लिए पहले उसने सरकारी फाइलों का निरीक्षण करने के लिए पूरे देश का दौरा किया | अन्त में जीवित व्यक्ति की नाक काट कर जार्ज पंचम की मूर्ति पर लगा दे |

6. लेखक ने ऐसा क्यों कहा कि नई दिल्ली में सब था .... सिर्फ नाक नहीं थी |

उत्तर नाक मान सम्मान और आत्मगौरव का प्रतीक है | दिल्ली में सब कुछ था किन्तु नाक नहीं थी | इसका सामान्य अर्थ है की जार्ज की लाट में नाक नहीं थी , किन्तु इसका व्यंग्यात्मक अर्थ यह हैं कि दिल्ली में गुलामों की कमी नहीं थी | नाक नहीं थी अर्थात गुलामी के कारण सरकारी तंत्र की इज्जत नहीं थी | उनकी गुलामी की मानसिकता प्रकाशित हो रही थी | उन्हें चिंता आत्मसम्मान की नहीं थी | उन्हें तो गुलामी कायम रखने की चिंता सता रही थी

7. जार्ज पंचक की लाट पर किसी भी भारतीय नेता यहाँ तक की भारतीय बच्चे की नाक फिट न होने की बात से लेखक किस ओर संकेत करना चाहता है ?

उत्तर नाक की चर्चा द्वारा लेखक ने भारतीय की गरिमा का परिचय दिया है | नाक मान प्रतिष्ठा और स्वाभिमान का प्रतीक है | इसके द्वारा लेखक यह संकेत देना चाहता है कि भारतीय नेताओ की बात कौन कहे बच्चे की नाक भी जार्ज पंचम की नाक से बड़ी निकली | अर्थात भारतीय बच्चों का मान सम्मान उनकी प्रतिष्ठा भी जार्ज पंचम से अधिक है | जार्ज की नाक सबसे छोटी निकली कहने का अर्थ यह है की जार्ज का कोई महत्व नहीं है उनकी कोई प्रतिष्ठा नहीं है |

8. अखबारों ने जिन्दा नाक लगाने की खबर को किस तरह से प्रस्तुत किया ? जार्ज पंचम की नाक पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए |

उत्तर - अखबारों में जार्ज पंचम की नाक लगाने की बात आई तो इसे भी गौरव और आत्म सम्मान का आधार समझा जाने लगा | इसलिए अखबारों ने जार्ज पंचम की जिन्दा नाक लगाने के खबर को बड़े गौरवपूर्ण तरीके से छपा था | यह बात छपी थी की नाक जिन्दा लगाई गई और किसी भी तरह पत्थर की नहीं लगती |

9. जार्ज पंचम को नाक लगने वाली खबर के दिन अखबार चुप क्यों थे ?

उत्तर -उस दिन सभी अखबार वाले इसलिए चुप थे क्योंकि भारत में न तो कहीं कोई अभिनन्दन कार्यक्रम हुआ न सम्मान पत्र भेंट किए गए न ही नेतओं ने उद्घाटन किया , न कोई फीता काटा गया, न सार्वजानिक कभा हुई इसलिए अखबारों को चुप रहना पड़ा | यहाँ तक कि हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह भी नहीं हुआ | इसलिए किसी स्वागत समारोह का कोई समाचार और चित्र अखबारों में नहीं छपा था |

आदर्श प्रश्न (अपठित गधांश)

हिन्दी (पाठ्यक्रम 'अ')

कक्षा- दसवी **अधिकतम अंक -90** **निर्धारित समय: 3 घंटे**

निर्देश : 1. प्रश्न पत्र के चार खण्ड हैं - क, ख, ग, और घ

2. चारो खंडो के प्रश्न के उत्तर देना अनिवार्य हैं |

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए |

1. निम्लिखित गधांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए -

भारत जैसे विशाल देश में विविधताओं का होना स्वाभाविक है | एक **विद्वान** ने कहा है की भारत विश्व का संक्षिप्त रूप है | दिनकर जी ने कहा था भारत छोटे पैमाने पर पूरा विश्व है लेकिन इस देश की विशेषता रही है की इसकी विविधता में एकत भी निहित है| यह बात दूसरी है की विविधता अधिक दिखाई पड़ती है और मौलिक एकता कम किन्तु पूर्व दिशा में सूर्योदय के सत्य होने की भांति मूल का अर्थ होता है जारऔर मौलिक एकता से मतलब होता है मूल | पाई जाने वाली एकता | उदाहरण के रूप में एक पेड़ को लिया जा सकता है | पेड़ है कि इनकी जड़ जमीन के अन्दर छिपी है किन्तु इसके मूल में एकता भी पाई जाती है भिन्नताए दिखाइ पड़ती है | किन्तु एकता नीचे जड में है | अतः वह गंभीरतापूर्वक सोचने विचारने पर दिखाई पड़ती है | सभ्यता और संस्कृति अभी तक जीवित है | आर्थिक सामाजिक धार्मिक क्षेत्रो में अनेकरूपता के साथ जिस मूलभूल एकता के दर्शन होते है वह वास्तब में आश्चर्य का विषय हैं |

1. भारत छोटे पैमाने पर पूरा विश्व कैसे है ?

(क) अनेक जातियों के कारण (ख) विविध धर्मो के कारण

(ग) भिन्न भिन्न भाषाओं के कारण (घ) स्वाभाविक विविधताओ के कारण

2. भारत की विशेषता रही है

(क) भौगोलिक विशालता (ख) सांकृतिक महानता

(ग) अनेक रुपता में एकता (घ) नदियों की पवित्रता

3. विविधता दिखाई पड़ती है एकता नहीं क्यों कि एकता :

(क) पेड़ की शाखामूल है (ख) पेड़ के पत्ते जैसी है

(ग) पेड़ के ताने जैसे हैं (घ) पेड़ की जड़ जैसी है

4.भारत माँ अनेक रूपता दिखाई देती है

(क) पर्वतो, नदियों एवं वनों में (ख) देशवासियों की शारीरिक रचना में (ग) आर्थिक सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्रो में (घ) भारतीयों के विचारो और विश्वासों में

5. जिस मूलभूत एकता के दर्शन होते हैं वह वास्तव में आश्चर्य का विषय है | वाक्य का प्रकार है (क) संयुक्त (ख) मिश्र

(ग) सरल (घ) जटिल

1. निम्लिखितग गधांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए -

जाकिर साहब के बारे में कुछ बाते अविस्मरणीय है 13 मई 1967 ई को राष्ट्रपति का पद संभालते हुए उन्होंने कहा था सारा भारत मेरा घर है | मैं सच्ची लगन से इस घर को मजबूत और सुन्दर बनाने की कोशिश करूँगा ताकि वह मेरे महान देशवासियों का उपयुक्त घर हो जिसमे इंसाफ और खुशहाली का अपना स्थान हो |

अपने साफ सुथरे सुरुचिपूर्ण खादी के कपड़ो और सुरुचि से संवरी दृष्टि के बीच चमकते हल्के गुलाबी गौर वर्ण मुख़मंडल से जाकिर साहब प्रेम आत्मीयता में गांधीजी के अंतिम उत्तराधिकारी नजर आते थे | देश के आने वाले बच्चे बापू को भूल न जाए इस सम्बम्स में उन्होंने एक बार कहा था आप आज्ञा दे तो इस अवसर से लाभ उठाकर गाँधी जी के सम्बन्ध में कुछ आपसे कहूँ| उनके जानने और समझने से उनके काम को समझना और उसमें जीजान से लगना जरा सरल हो सकता है | यह इसलिए और कहना चाहता हूँ अब दिन पर दिन उन लोगो की संख्या घट रही है जिन्होंने गाँधी जी को देखाथा उनके साथ कम किया था | उनके बताए हुए रास्तों पर चले थे जब वे दुनिया से गए तो वे लोग बच्चे थे | बहुत से पैदा भी नहीं हुए थे उनकी गिनती अब दिन पर दिन बढती ही जाएगी | नए हाल होगा नया काल होंगे नए जंजाल होगे ऐसा न हो कि ये गाँधी जी और उनके कार्यो की तह मे जी विचार थे उनको भुला बैठ | ऐसा हुआ हो हमारी सबक्से मूल्यवान पूंजी बर्बाद हो जाएगी |

1. प्रस्तुत गंधांश के लिए उचित शीर्षक दीजिए |

(क) अविस्मरणीय (ख) जाकिर साहब

(ग) मूल्यवान पूंजी (घ) हम और हमारी विरासत

2. जाकिर साहब के चरित्र की दे विशेषताए बताईए |

(क) विनम्र और दृढ़ चरित्र (ख) आत्मीयतापूर्ण और भाविष्यों मुखी

(ग) (क) और (ख) दोनों विकल्प सही है (घ) कोई विकल्प सही नहीं है

3. मूल्यवान पूंजी किसे कहा गया हैं ?

(क) भारत की प्राकृतिक संपदा को

(ख) भारत की धार्मिक विरासत को

(ग) गाँधी जी और भारत की सांस्कृतिक विरासत को

(घ) गाँधी जी की वैचारिक संपदा को

4. राष्ट्रपति पद सँभालते हुए उन्होंने स्वरूप के बारे में क्या इच्छा प्रकट की ?

(क) भारत को एक बड़ा राष्ट्र बनाने की

(ख) भारत को आत्मनिर्भर और विकसित बनाने की

(ग) भारत के देशवाषियों को प्यार और प्रसन्नता से घर बनाने की

(घ) भारत को विश्व में पहचान बनाने की

5. जाकिर साहब को गाँधी जी का अंतिम उत्तराधिकारी क्यों कहा गया है ?

(क) वे गाँधी जी के मूल्यों में विश्वास रखने वाले अंतिम कड़ी थे |

(ख) वे गाँधी जी के समान प्रेम ओर आत्मीयता से पूर्ण नेता थे |

(ग) वे गाँधी जी के मूल्यों की रक्षा करना चाहते थे |

(घ) वे नई पीढ़ी की ओर गाँधी जी के विचारो में दूरी को रखकर दुखी थे |

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही के सही विकल्प चुनिए - 1x5=5

जीवन दीप जले |
जीवन दीप ले ऐसा सव जग को ज्योति मिले

जीवन दीप जले | छोड़े अवध माया की नगरी, कानन को प्रस्थान किया, सुख बैभव को लात मारकर, कष्टों का स्वेश किया, षटरस व्यंजन त्याग जंगली फल खाए सर नीर पिया स्वयं कंको कोचुमा, औरों के संताण दूर किए जन्म सफल है उस मानव का जो पर हित ही सदा
जिए | त्शितों को सुरसरी देने जो हिम गिरि सा चुपचाप गले जीवन दीप जले || रसिक शिरोमणि कृष्णचन्द्र ने वृन्दावन को बिरसाया छोड़बिलखते ग्वाल बाल वह निर्मोही भी कहलाया, किन्तु लोक कल्याण मार्ग ही केवल उसने अपनाया वही गोपियों का नटवर फिर योगिराज कहलाया गीता की हर पंक्ति में अर्जुन को वे समझाते | आगे बढ़ नरसिंह जगत के झूठे सब रिश्ते नाते, अति विस्तृत कर्तव्य मार्ग है हर मानव इस ओर चले | जीवन दीप चले |वीर प्रताप , शिव वैरागी सबके है माँ का सच्चा पुत्र वही
वही सुमन सुरभित हो, खिलते जो काँटों के बीच पले
जीवन दीप जले ||

1.जीवन के दीप जलने के पीछे क्या आशय है ?

(क) दीप के समान चमकाने बाला (ख) दीप की भांति जलने वाला

(ग) दीप के समान स्वयं जल कर दूसरे के हित करना (घ) दीप की भांति प्रकश करनेवाला

2. रामचंद्र के जीवन के बारे में क्या कहा गया है ?

(क) उन्होंने स्वयं कष्ट सहकर दूसरों का हित किया (ख) पिता की आज्ञा का पालन किया

(ग) उन्होने जान बूझकर जीवन में कष्ट सहन किया (घ) वे सत्य को मानते थे

3. कृष्ण ने अर्जुन को क्या सन्देश दिया ?

(क) रिश्ते नाते के महत्व का (ख) आत्म तत्व का

(ग) कर्तव्य पथ का (घ) मानवता का

5. सच्चा सपूत किसे कहा गया हैं ?

(क) जो सदा सत्य पथ पर चले |

1 पद परिचय

2 वाक्य भेद

3 एक कहानी यह भी -मनु भण्डारी

4स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन

5 पद -तुलसीदास

6 वाच्य

7 छाया मत छूना -गिरजा कुमार माथुर

8 संस्कृति -भदन्त आनन्द

9 वाक्य भेद-रचना की दृष्टि से

10 रस

11नौबत खाने में इबादत -यतीन्द्र मिश्र

12 कन्यादान - ऋतु राज

13 संगतकार - मंगलेश डबराल

14 एही ठाइयाँझुलनी हेरानी हो रामा- शिव प्रसाद मिश्र

15 मैं क्यों लिखता हूँ -अज्ञेय

16 पत्र लेखन

17 सार लेखन

18 निबंध

19 आदर्श प्रश्न पत्र

संकलित परीक्षा-2 (FA-3 +FA-4) के लिए सहायक सामग्री

FA-3

3. पद-परिचय

शब्द और पद में अंतर - शब्द भाषा की स्वतन्त्र इकाई है | जव शब्द वाक्य में प्रयुक्त होता है , तो पद कहलाता है |

जैसे -'लड़का ' एक स्वतन्त्र शब्द है |

लड़का घर जाता है |पद- परिचय

वाक्य में प्रयुक्त पदों का विस्तृत व्याकरणीय परिचय देना ' पद-परिचय' कहलाता है | जैसे - लड़का घर जाता है |
' लड़का ' पद व्याकरणीय परिचय - जातिवाचक, संज्ञा , पुल्लिंग , एकवचन , कर्ता कारक 'जाता है' क्रिया का कर्ता |

पद-परिचय के लिए सभी शब्दों के भेद, उपभेद, लिंग , वचन , कारक आदि की जानकारी होनी आवश्यक है |

पद-परिचय देते समय जिन बातो की जानकारी होनी आवश्यक है , वे हैं -
संज्ञा - संज्ञा के तीन भेद हैं -1. व्यक्तिवाचक संज्ञा 2. जातिवाचक संज्ञा व भाववाचक संज्ञा |

लिंग - पुल्लिंग , स्त्रीलिंग |

वचन - एकवचन या वहुवचन | कारक - कर्ता कारक , करण कारक , संप्रदान कारक , अपादान सर्वनाम के छः भेद होते हैं - पुरुषवाचक सर्वनाम, निश्चयवाचक सर्वनाम , अनिश्चयवाचक सर्वनाम , संबंधवाचक सर्वनाम, प्रश्नवाचक सर्वनाम तथा निजवाचक सर्वनाम | इनका लिंग , वचन करक , क्रिया के साथ बताया |

सर्वनाम, विशेषण |लिंग, वचन विशेष्य जिसकी विशेषता बता रहे हैं |

क्रिया - क्रिया के दो भेद होते हैं | अकर्मक क्रिया तथा सकर्मक क्रिया | लिंग , वचन , धातु काल , वाच्य , प्रयोग आदि/

क्रिया - विशेषण क्रिया विशेषण के चार भेद होते हैं | कालवाचक क्रिया विशेषण , स्थानवाचक क्रिया विशेषण, रीतिवाचक क्रिया विशेषण , परिनामवाचक क्रिया विशेषण तथा उस क्रिया का उल्लेख करना जिसकी विशेषता बता रहा हैं |

समुच्चय बोधक अव्यय - इसके दो भेद होते हैं - समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय , व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय | यह जिन शब्दों/पदों वाक्यों को मिला रहा है, उनका उल्लेख करना |

समन्धबोधक अव्यय - जिन संज्ञा या सर्वनामो में संबंध वताया जा रहा है , उसका उल्लेख करना | उदाहरनस्वरुप कुछ पदों का परिचय दिया जा रहा हैं |

(क) मैं कल बीमार था , इसलिए विद्यालय नहीं आया |

मैं- सर्वनाम , पुरुषवाचक सर्वनाम , उत्तम पुरुष , पुल्लिंग , एकवचन , कर्ताकारक ,था और आया क्रिया का कर्ता |
विद्यालय - संज्ञा , जातिवाचक संज्ञा , पुल्लिंग ,एकवचन , कर्मकारक , आया क्रिया|

(ख) यह घड़ी मेरे बड़े भाई ने दी हैं |

यह- विशेषण, सार्वनामिक विशेषण , स्त्रीलिंग , एकवचन , 'घड़ी' विशेष्य |
बड़े - विशेषण , गुणवाचक विशेषण , पुल्लिंग , एकवचन , 'भाई' विशेष्य |

(ग) नितिन दसवीं कक्षा में पढता है |

कक्षा - संज्ञा , जातिवाचक संज्ञा , स्त्रीलिंग , एकवचन , अधिकरण कारक 'पढ़ता ' हैं | क्रिया का अधिकरण (स्थान)

(घ) बच्चों ने अपना काम कर लिया था |

बच्चों ने - संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग , कर धातु , भूतकाल , कर्तृवाच्य , कर्तरि प्रयोग | कर लिया था - क्रिया , सकर्मक क्रिया , पुल्लिंग बहुवचन, कर धातु , भूतकाल , कर्तृवाच्य , कर्तरि प्रयोग | रेखांकित पदों के पद परिचय दीजिए :

1. मीरा घर में रहती हैं |

उत्तर- व्यक्तिवाचक संज्ञा , एक्वाचक , स्त्रीलिंग कर्ताकारक , रहती है क्रिया का कर्ता |

2. यह किताब मेरी है |

उत्तर - विशेषण , सार्वनामिक विशेषण , एकवचन , स्त्रीलिंग|

3. मैं धीरे धीरे चलता हूँ |

उत्तर - क्रिया , विशेषण , रीतिवाचक क्रिया विशेषण , चलता हूँ ' विशेष्य |

4. मैं उसे आगरा में मिलूँगा |

उत्तर- व्यक्तिवाचक संज्ञा , पुल्लिंग, एकवचन , अधिकरण कारक , मिलूँगा' क्रिया का अधिकरण (स्थान)

5. वह कक्षा में बैठा रहता हैं |

उत्तर- पुरुषवाचक सर्वनाम , अन्य पुरुष , पुल्लिंग , एकवचन कर्ताकारक , बैठा रहता है ' क्रिया विशेष्य |

6. मनोहर दसवीं कक्षा में पढ़ंता हैं |
उत्तर - विशेष्य , संख्यावाचक विशेषण , क्रमसूचक , स्त्रीलिंग, एकवचन 'कक्षा ' विशेष्य |

अभ्यास-प्रश्नों | :
प्रश्न -वाक्यों में रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए -

1. तोता पिंजरे में बैठकर आम खारहा हैं |
2. छोटी बच्ची हँस रही हैं |
3. भारत अनेक संस्कृतियों बाला देश है |
4. वह प्रत्येक बच्चे को पहचानता है |
5. कविता सुन्दर है |

वाक्य - भेद

मनुष्य के विचारों की पूर्णता से प्रकट करते वाला पद समूह , जो व्यवस्थित हो, वाक्य कहलाता है | वाक्य सार्थक शब्दों का व्यवस्थित रूप है |

वाक्य में आकांक्षा, योग्ता और आसक्ति का होना आवश्यक है |

आकांक्षा - वाक्य के एक पद को सुनकर दूसरे पद को सुनने या जानने कि जो स्वाभाविक उत्कंठा जागती है, उसे आकंक्षा कहते है - जैसे - दिन में काम करते हैं | इस वाक्य को सुनकर हम प्रश्न करते है- कौन लोग काम करते हैं? यदि हम कहे की दिन में सभी काम करते हैं , तो सभी कह देने से प्रश्न का उत्तर मिल जाता हैं | और वाक्य ठीक हो जाता हैं | अतः इस वाक्य में सभी शब्द की आकांक्षा थी जिसकी पूर्ति के से वाक्य पूरा हो गया |

योग्यता- योग्यता से तात्पर्य है - पदों से अर्थबोधक की सामर्थ | जैसे किसान लाठी से खेत जोतता है |

उक्त वाक्य में लाठी के स्थान पर हल का प्रयोग होना चाहिए क्योंकि हल जोतने के प्रसंग में अर्थबोधक की क्षमता रखता हैं |

सन्निधि (आसक्ति)- वाक्य के शब्दों को बोलने या लिखाने में निकटता होगा आवश्यक है | रुक रुक कर बोले गए शब्द या लिखते समय ठहराव दिखाने के लिए विराम चिन्हों का प्रयोग न करने से अर्थ में बाधा पड़ती हैं | इस प्रकार इस अर्थ तभी निकलता हैं जब अंशु समुचित समय सीमा में ही बोले जाएँ | इस शर्त को सन्निधि कहते हैं |

वाक्य के घटक -

वाक्य के मूल और अनिवार्य घटक हैं -1. कर्ता 2. क्रिया

इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं - विशेषण , क्रिया विशेषण, कारक आदि इन्हें ऐच्छिक घटक कहा जाता है |

1. उद्देश्य 2. विधेय

1. उद्देश्य - जिसके विषय में कुछ कहा जाए | (1. कर्ता 2. कर्म का विस्तार)

2. विधेय - उद्देश के विषय में जो कुछ कहा जाय | (1. क्रिया 2. क्रिया का पूरक 3. कर्म/पूरक 4.कर्म/पूरक का विस्तार 5. अन्य कारकीय पद और उनका विस्तार)

उद्देश और विधेय को इस प्रकार समझा जा सकता हैं |

इस समय रवि की माँ धारदार चाकू से पके पके फल काट रही है |

रचना की दृष्टि से वाक्य भेद -रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं -

1. सरल या साधारण वाक्य

2. संयुक्त वाक्य

3. मिश्र या जटिल वाक्य

1. **सरल या साधारण वाक्य -** इसमें एक या एक से अधिक उद्देश्य और एक विधेय होते हैं अथवा जिस वाक्य में एक ही मुख्य क्रिया हो, उसे सरल या साधारण वाक्य कहते हैं | जैसे -

1. वह जोर जोर से रोया |

2. मैं और मेरा भाई दिल्ली जाएँगे |

3. वे हर दिन दूध पीते हैं |

4. मोहन घर जा रहा होगा |

5. वह अत्याचार् किए जा रहा था |

6. पाकिस्तान वर्षो से आतंकवाद फैलाए जा रहा है |

उक्त वाक्यों में रखांकित क्रियाएँ मुख्य क्रियाएँ हैं |

ध्यान दें - स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त होनेवाला उपवाक्य भी सरल वाक्य होता हैं |

2. **संयुक्त वाक्य -** दो या दो अधिक समाज स्तरीय उपवाक्य किसी समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं , से संयुक्त वाक्य कहलाते हैं | जैसे -

1. हमलोग पुणे घूमने गए और वहां चार दिन रहे |

2. यहाँ आप रह सकते हैं या आपका भाई रह सकता हैं |

3. वे बीमार है , अन्त आने में असमर्थ है |

ध्यान दें - 1. समानाधिकरण उपवाक्य आश्रित न होकर एक - दूसरे के पूरक होते हैं |

2. इन उपवाक्यों का स्वतन्त्र रूप से भी प्रयोग हो सकता हैं |

नोट - जिस समुच्चय बोधक शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांशों , पदों और वाक्यों को परस्पर जोड़ा जाता हैं | उन्हें समानाधिकरण समुच्यबोधक चार प्रकार कहते हैं |

(क) **संयोजक -**जो शब्दों, वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर जोड़ने वाले शब्द संयोजक कहलाते हैं | जैसे- और, तथा , एवं व आदि संयोजक शब्द हैं |

(ख) **विभाजक -**शब्दों , वाक्यांशों और उपवाक्यों में परस्पर विभाजन और विकल्प प्रकट करनेवाले शव्द विभाजक या विकल्प कहलाते हैं | जैसे या, चाहे अथवा अन्यथा आदि |

(ग) **विरोधसूचक -** दो परस्पर विरोध कथनों और उपवाक्यों को जोड़ने वाले शब्द विरोधसूचक कहलाते हैं|

जैसे - परन्तु पर, किन्तु , मगर, लेकिन आदि |

(घ) **परिणामसूचक -**दो उपवाक्यों को परस्पर जोरकर परिणाम को दर्शाने वाले शव्द परिमाणसूचक कहलाते हैं | जैसे- फलतः , परिणामस्वरुप , इसलिए अतः एतव फलस्वरूप, अन्यथा आदि |

3. **मिश्र वाक्य -**मिश्र वाक्य में एक उपवाक्य स्वतंत्र होता हैं | और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं | मिश्र वाक्य के उपवाक्य व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं | जैसे - मैंने देखा की बाजार में चहल - पहल है | इस वाक्य में उपवाक्य है मैं देखा बाजार में चहल - पहल थी | ये दोनों उपवाक्य की व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े हैं | इनमे - मुख्य या प्रधान उपवाक्य हैं - मैंने देखा|

(मिश्र वाक्य के उपवाक्य प्रायः कि, जो, जब, जहाँ जिसने, ज्यों ही त्यो ही , जिधर - उधर , जैसे - वैसे , जितना - उतना , क्योंकि यदि तो ताकि यधपि तथापि अर्थात मानो आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय से जुड़े होते हैं |

नोट - किसी वाक्य के प्रधान और आश्रित उपवाक्यों को परस्पर जोड़ने वाले शब्द व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं |

व्यधिकरण समुच्चयबोधक के भेद - व्यधिकरण समुच्चयबोधक के चार भेद होते हैं-

(**क**) कारणसूचक समुच्चाय्बोधय के भेद - दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर होने वाले कार्य का कारण स्पष्ट करने वाले शब्दों को कारण सूचक कहते हैं | जैसे - कि , क्योंकि , इसलिए, चूँकि , ताकि आदि |

(**ख**) संकेत सूचक - जो योजक शब्द दो उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य करते हैं उन्हें संकेतसूचक कहते हैं |
जैसे- यदि ...तो , जा....तो, यधपि .... परन्तु आदि |

(**ग**) उद्देश्य सूचक - दो उपवाक्यों को परस्पर जोड़कर उनका उद्देश्य स्पष्ट करने वाले शब्द उद्देश्य सूचक कहलाते हैं | जैसे इसलिए कि ताकि , जिससे कि आदि |

(**घ**) स्वरूप सूचक - मुख्य उपवाक्य का अर्थ स्पष्ट करने वाले शब्द स्वरूपसूचक कहलाते हैं | जैसे - यानी ,मानो कि, आर्थत आदि |

प्रधान व आश्रित उपवाक्य की पहचान -

1. प्रधान उपवाक्य वह होता हैं , जिसकी क्रिया मुख्य होती हैं |

2. मिश्र वाक्य की मुख्य क्रिया जानने के लिए मिश्र वाक्य को एक सरल वाक्य में रूपांतरित करते हैं | जो क्रिया रूपांतरित होने वाली क्रिया होगी वही मुख्य क्रिया होगी | मुख्य क्रिया वाला यह उपवाक्य प्रधान उपवाक्य होगा |

रूपांतरित होने वाली क्रिया वाला उपवाक्य आश्रित होगा | जैसे- तुम परिश्रम करते तो अवश्य सफल होते| सरल वाक्य में रूपांतरण तुम परिश्रम करने पर अवश्य सफल होते | स्पष्ट है - यहाँ परिश्रम करते क्रिया और वाक्यांश में ही है , अतः प्रधान उपवाक्य है |' अवश्य सफल होते | ' मिश्र उपवाक्य में आने वाले आश्रित उपवाक्य के भेद _- ये आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं -

(क) संज्ञा उपवाक्य
(ख) विशेषण उपवाक्य
(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य

(क) **संज्ञा उपवाक्य -**प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर आनेवाला उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य कहलाता हैं |

जैसे- गुरूजी ने कहा कि आज पुस्तक पढेंगे |
पहचान - यहाँ ' आज पुस्तक पढ़ेंगे |' उपवाक्य गुरूजी ने कहा ' उपवाक्य के कर्म के रूप में प्रयुक्त हुआ हैं | सामान्यतः मुख्य उपवाक्य पर क्या प्रश्न करने से जो उत्तर आता है वही संज्ञा उपवाक्य होता है | उक्त वाक्य में गुरूजी ने क्या कहा है ?
उत्तर मिलेगा आज पुस्तक पढ़ेगे यही संज्ञा उपवाक्य हैं |
ये प्रायः कि से आरम्भ करते हैं |

संज्ञा उपवाक्य के अन्य उदहारण :

1. सचिन बोला कि मै मुंबई जा रहा हूं | ('बोला' क्रिया का कर्म)
2. जान पड़ता है कि पिताजी कुछ बीमार हैं | ('जान पड़ता हैं - क्रिया का उद्देश्य)
3. इनसे पूछिए कि ये कौन हैं ? ('यह' का पूरक)
4. मुझे विश्वास हे कि आज आवश्य आएँगे | (विश्वस का समंधिकरण)
   यहाँ रेखांकित उपवाक्य संज्ञा उपवाक्य है, शेष प्रधान उपवाक्य हैं |

(ख) **विशेषण उपवाक्य -** मुख्य (प्रधान) उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताने वाला उपवाक्य विशेष्य उपवाक्य कहलाता हैं |
जैसे - 1. जो दूसरो की निंदा करते हैं , वे लोग अच्छे नहीं होते |
2. वह किताब कहाँ हैं जो आप कल लाए थे |
3. यह वही बालक है, जिसे मैंने कल शहर में देखा था |

पहचान -मुख्य उपवाक्य पर कौन , किसे , किन्हें प्रश्न करने पर जो उत्तर आता है, वही विशेषण उपवाक्य होता हैं| अथवा वाक्य के प्रारम्भ, मध्य या अंत में कही भी आ सकता हैं |

यह प्रायः जो या इसके किसी रूप से आरम्भ होता है| अथवा वाक्य के प्रारम्भ , मध्य या अंत में कहीं भी आ सकता हैं |

(ग) **क्रिया विशेषण उपवाक्य -** मुख्य उपवाक्य की क्रिया के संबंध में किसी प्रकार की सूचना देने वाला उपवाक्य क्रिया विशेषण उपवाक्य कहलाता है| जैसे -

1. तुम वहाँ चले जाओ, जहाँ बस खड़ी है |

2. जहाँ जहाँ हम गए, हमारा स्वागत होते है -

(क) कालवाचक उपवाक्य

1. ज्यों ही मै स्टेशन पहुंचा गाड़ी ने सीटी बजा दी |
2. जब मैं घर पहुँचा तो वर्षा हो रही थी |

(ख) स्थानवाचक उपवाक्य

1. जहां तुम पढ़ते थे मेरा भाई भी वही पढ़ते था|
2. तुम जिधर जा रहे हो उधर आगे रास्ता बंद हैं |
3. वहां वर्षा पड़ सकती है, जहाँ वर्षा नही हुई |

(ग) रीतिवाचक उपवाक्य

1. आपको वैसा ही करना है जैसा में कराता तुम इस मार्श अकल सकती क्या कहा
2. वह उसी रहति कही इताहत खेलेगेया , मिसा में कहते

(घ) परिमाणवाचक उपवाक्य

1. जितना तुम पढ़ोगे, उतना समझ आएगा |
2. वह उतना ही अधिक थकेगा जीतन / अधिक दौड़ेगा |
3. जैसे जैसे आमदनी बढती जाती है, वैसे -वैसे आवश्यकताएं बढती जाती हैं |

(ड) परिमाण (कार्य -कारण) वाची उपवाक्य :

1. वह आएगा जरुर क्योंकि उसको नौकरी की जरूरत है |
2. यदि वह आएगा तो काम बन जाएगा |
3. यधपि तू पहलवान है, तथापि मुझसे नहीं जीत सकता |

वाक्य रुपान्तरण :

1. सरल वाक्य - मोहन हिन्दी पढने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया हैं |
   संयुक्त वाक्य - मोहन को हिन्दी पढ़ना है और वह शास्त्री जी के यहाँ गया हैं |
   संयुक्त वाक्य- मोहन को हिन्दी पढ़ना हैं अतः वह शास्त्री जी के यहाँ गया हैं |
   मिश्र वाक्य - मोहन शास्त्री जी के यहाँ गया है, क्यों उसे हिन्दी पढना हैं |

2. सरल वाक्य - मोहन वहुत कम खिलाड़ी होने पर भी कहीं अनुत्तीर्ण नहीं होता |

संयुक्त वाक्य - मोहन बहुत कम खिलाड़ी है, किन्तु कभी अनुत्तीर्ण नहीं होता |
मिश्र वाक्य- यधपि मोहन बहुत कम खिलाड़ी खोद लिया , तब चले गए |

3. सरल वाक्य - गड्ढा खोदकर मजदूर चले गए |
संयुक्त वाक्य - जब मजदूरों ने गड्ढा खोद लिया तब चले गए |
मिश्र वाक्य - मजदूरो ने गड्ढा खोद और चले गए |

प्रश्नों :

1. **सीमा यहाँ आई और रेखा बहार गई | रचना के आधार पर सही वाक्य भेद है |**
(क) सरल वाक्य (ख) मिश्र वाकया
(ग) संयुक्त वाक्य (घ) संज्ञा उपवाक्य
2. **उद्धेश्य में सम्मिलित नहीं हैं:**
(क) कर्ता का विस्तार (ख) कर्ता
(ग) जिसके बारे में कहा जाए (घ) कर्म का विस्तार
3. **विद्धोय के अंतर्गत नहीं आता**
(क) पूरक (ख) कर्म
(ग) क्रिया का विस्तार: (घ) जिसके बारे में कहा जाए
4. **सरल वाक्य में नहीं होता :**
(क) एक मुख्य क्रिया (ख) एक कर्ता
(ग) एक विधेय (घ) एक या एक से अधिक कर्ता
5. **रचना की दृष्टि से वाक्य भेद है :**
(क) दो (ख) तीन
(ग) चार (घ) एक या एक से अधिक कर्ता
6. **समानाधिकरण उपवाक्य होते हैं :**
(क) सरल वाक्य में (ख) संयुक्त वाक्य में
(ग) जटिल वाक्य में (घ) इनमे से कोई नहीं
7. **एक प्रधान उपवाक्य और एक या एक से अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं :**
(क) संयुक्त वाक्य में (ख) विशेषण वाक्य में
(ग) मिश्र वाक्य में (घ) लघु वाक्य में
8. **स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होने वाला उपवाक्य होता है :**
(क) सरल वाक्य (ख) संज्ञा उपवाक्य
(ग) जटिल वाक्य (घ) विशेषण उपवाक्य
9. **रेखा ज्योंही घर पहुँची वर्षा शुरू हो गई |**
(क) संज्ञा आश्रित वाक्य (ख) विशेषण आश्रित उपवाक्य
(ग) समनाधिकरण उपवाक्य (घ) क्रिया विशेषण उपवाक्य

10 **मैंने खाना नहीं खाया इसलिए फल नहीं खाया | यह रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार है :**

(क)जटिल वाक्य (ख) संकेतवाचक वाक्य

(ग) साधारण वाक्य (घ) संयुक्त वाक्य

11कल मुझे दिल्ली जाना है और फिर कलकत्ता | रचना की दृष्टि से वाक्य है:

(**क**)मिश्र वाक्य (ख) सरल वाक्य

(ग) संयुक्त वाक्य (घ) इनमे से कोई नहीं

12. **कालवाची क्रिया विशेषण उपवाक्य किस वाक्य में है :**

(क) जब आपका आदमी आया, मै नहा रहा था

(ख) जैसा वह गाती है, कोई नहीं गा सकता |

(ग) तुम जितना जानते हो , उतना काम करो

(घ) यदि मेरी बात मानोगे तो सुखी रहोगी |

13. **वाक्य का सही अर्थ तभी निकलता है जब अंश एक समुचित समय सीमा में ही बोले जाएँ | इस शर्त को कहते हैं:**

(क) योग्यता (ख) सविधि

(ग) आकांक्षा (घ) पदक्रम

14. **वाक्य के प्रमुख्य घटक हैं |**

(क) चार (ख) तीन

(ग) पांच (घ) इनमे से कोई नहीं

15. वे वहां जाकर देने इसका संयुक्त वाक्य में स्थनान्तरण होगा:

(क)वे वहाँ जाएँगे और भाषण देगे (ख) वे यहाँ के जाकर भाषण देने लगेंगे

(ग) यहाँ से वहां जाकर भाषण देंगे (घ) वे वहां जाएँगे या भाषण देगे

16. नीचे लिखे वाक्यों में कुछ साधारण वाक्य कुछ मिश्रित वाक्य और सुछ संयुक्त वाक्य हैं | सामने कोष्ठकों में उनके ठीक ठीक नाम लिखिए |

1. जो विद्वान होता है, उसे सभी आदर करते हैं |
2. मै चाहता हूँ कि तुम परिश्रम करो |
3. वह आदमी पागल हो गया है |
4. जब राजा नगर में आया, तब उत्सब मनाया गया |
5. अपना काम देखो या शांत बैठे रहो |
6. जो पत्र मिला है, उसे सीला ने लिखा होगा |
7. ऑस्ट्रेलिया से आए हुए खिलाड़ियों को प्रथम तल पर ठहराया गया हैं |
8. मैं उसके पास जा रहा हूँ ताकि कुछ योजना बन सके |

9. आपकी वह कुर्सी कहाँ है , जो आप कलकत्ता से लाए थे |

10. हमारे मित्र कल यहाँ से जाएँगे और आगरा पहुंच कर ताजमहल देखेंगे |

उत्तर संकेत - (1) ग , (2) घ ,(3.) घ , (4.) ख (5) ख (6.) ख (7.) ग
(8.) क (9.) घ (10) क (11) ग (12) क (13.) ख (14) घर (
15) दो
(16) (1.) मिश्र वाक्य (2) मिश्र वाक्य (3.) सरल वाक्य (4.) मिश्र वाक्य (5.) संयुक्त वाक्य (6.) मिश्र वाक्य (7.) साधारण वाक्य (8.) मिश्र वाक्य (9.) मिश्र वाक्य (10) संयुक्त वाक्य

अभ्यास प्रश्न :

1. रचना के आधार पर वाक्य का सही प्रकार लिखिए |

1. वह पुस्तक खरीदने के लिए दुकान पर गया |
2. वह बाजार गया और फल खरीदकर लाया |
3. उस बालक बुलाओ जिसके गिलास तोड़ा हैं |
4. गीता नृत्य कर रही है |
5. गुरूजी ने कहा कि कल छुट्टी रहेगी |

2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए -

1. माता जी ने आटा गूंथकर रोटी बनाई | (संयुक्त वाक्य में बदलिए)
2. अचानक पुलिस आ गयी और गली में सन्नाटा छा गया | (सरल वाक्य में बदलिए)
3. सूरज ने कपड़े पहने , पर वह संतुष्ट नहीं है | (मिश्र वाक्य में बदलिए)

एक कहानी यह भी

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

अथवा

'एक कहानी यह भी' पाठ की लेखिका के व्यक्तित्व को किन-किन व्यक्तियों ने किस रूप में प्रभावित किया?

उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्य रूप से दो व्यक्तियों का प्रभाव पड़ा।
पिताजी का प्रभाव- लेखिका के व्यक्तित्व को बनाने-बिगाड़ने में उनके पिता का बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने ही लेखिका के मन में हीनता की भावना पैदा की। उन्होंने ही उसे शक्की बनाया, विद्रोही बनाया। उन्हीं ने लेखिका को देश और समाज के प्रति जागरूक बनाया। उसे रसोईघर और सामान्य घर-गृहस्थी से दूर एक प्रबुध्द व्यक्तित्व दिय। लेखिका को देश के प्रति जागरूक बनाने में उनके पिता का ही योगदान है।
शीला अग्रवाल का प्रभाव- लेखिका को क्रियाशील , क्रांतिकारी और आंदोलनकारी बनाने में उनकी हिंदी-प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का योगदान है। शीला अग्रवाल ने अपनी जोशीली बातों से लेखिका के मन में बैठे संस्कारों को कार्य-रुप दे दिया।उन्होंने लेखिका के खून में शोले भड़का दिए।पिता उसे चारदीवारी तक सीमित रखना चाहते थे , परंतु शीला अग्रवाल ने उसे जन-जीवन में खुलकर विद्रोह करना सिखा दिया।

प्रश्न2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिताने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?
उत्तर- भटियारखाने के दो अर्थ हैं-
1.जहाँ हमेशा भट्ठी जलती रहती है, अर्थात् चूल्हा चढा रहता है। 2. जहॉ बहुत शोर-गुल रहता है। भटियारे का घर।कमीने और असभ्य लोगों का जमघट। पाठ के संदर्भ में यह शब्द पहले अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। रसोईघर में हमेशा खाना-पकाना चलता रहता है। पिताजी अपने बच्चों को घर-गृहस्थी या चूल्हे-चौक तक सीमित नहीं रखना चाहतेथे। वे उन्हें जागरुक नागरिक बनाना चाहते थे। इसलिए उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए भटियारखाना अर्थात् प्रतिभा को नष्ट करने वाला कह दिया है।

प्रश्न 3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को अपनी ऑखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- हुआ यूं कि लेखिका के आंदोलनकारी व्यवहार से तंग आकर उनके कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के पिता को बुलवाया। पिता पहले-से ही लेखिका के विद्रोही रुख से

परेशान रहते थे।उन्हें लगा कि जरुर इस लड़की ने कोई अपमान जनक काम किया होगा।इस कारण उन्हें सिर झुकाना पड़ेगा। इसलिए वे बड़बड़ाते हुए कॉलेज गए।
कॉलेज में जाकर उन्हें पता चला कि उनकी लड़की तो सब लड़कियों की चहेती नेत्री है। सारा कॉलेज उसके इशारों पर चलता है। लड़कियाँ प्रिंसिपल की बात भी नहीं मानतीं , केवल उसी के संकेत पर चलती हैं। इसलिए प्रिंसिपल के लिए कॉलेज चलाना कठिन हो गया है। यह सुनकर पिता का सीना गर्व से फूल उठा।वे गद्गद हो गए। उन्होंने प्राचार्य को उत्तर दिया- 'ये आंदोलन तो वक्त की पुकार हैं ...इन से कैसे रोका जा सकता है। ' लेखिका पिता के मुख से ऐसी प्रशंसा सुनकर विश्वास न कर पाई। उसे तो यही आशा थी कि उसके पिता के मुख से ऐसी प्रशंसा सुनकर विश्वास न कर पाई। उसे अपने कानों पर भरोसा न हुआ। उसे तो यही आशा थी कि उसके पिता उसे डाँटेंगे , धमकाएंगे तथा उसका घर से बाहर निकलना बंद कर देंगे।

प्रश्न 4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखिका और उसके पिता के विचार आपस में टकराते थे। पिता लेखिका को देश-समाज के प्रति जागरुक बनाना चाहते थे किंतु उसे घर तक ही सीमित रखना चाहते थे।वे उसके मन में विद्रोह और जागरण के स्वर भरना चाहते थे किंतु उसे सक्रिय नहीं होने देना चाहते थे। लेखिका चाहती थी कि वह अपनी भावनाओं को प्रकट भी करे।वह देश की स्वतंत्रता में सक्रिय होकर भाग ले। यहीं आकर दोनों की टक्कर होती थी। विवाह के मामले में भी दोनों के विचार टकराए। पिता नहीं चाहते थे कि लेखिका अपनी मनमर्जी से राजेंद्र यादव से शादी करे। परंतु लेखिका ने उनकी परवाह नहीं की।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर- सन् 1942 से 1947 तक का समय स्वतंत्रता-आंदोलन का समय था।इन दिनों पूरे देश में देशभक्ति का ज्वार पूरे यौवन पर था।हर नगर में हड़तालें हो रही थीं। प्रभात-फेरियॉ हो रही थीं। जलसे हो रहे थे। जुलूस निकाले जा रहे थे। युवक-युवतियॉ सड़कों पर घूम-घूमकर नारे लगा रहे थे। सारी मार्यादाएँ टूट रही थीं। घर के बंधन ,स्कूल-कॉलेज के नियम-सबकी धज्जियाँ उड़ रही थीं। लड़कियाँ भी लड़कों के बीच खुलकर सामने आ रही थीं।

ऐसे वातावरण में लेखिका मन्नू भंडारी ने अपूर्व उत्साह दिखाया। उसने पिता की इच्छा के विरूद्ध सड़कों पर घूम-घूमकर नारेबाजी की , भाषण दिए, हड़ताले की, जलसे-जुलूस किए। उसके इशारे पर पूरा कॉलेज कक्षाएँ छोड़कर आंदोलन में साथ हो लेता था। हम कह सकते हैं कि वे स्वतंत्रता-सेनानी थीं।

प्रश्न 6.निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों केउत्तर लिखिए: -

आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंम्भिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के है, जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था । एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है । बस इनको देखते-सुनते, इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थीइस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ ।

i. परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' का क्या अर्थ है ?
ii. महानगरों ने हमारे जीवन को कैसे प्रभावित किया है?
iii. लेखिका के मन में किनकी गहरी छाप थी?
iv. लेखिका को कहानी लिखते हुए क्या अहसास हुआ?
v. लेखिका की आरंभिक कहानियों के अधिकांश पात्र कैसे हैं और क्यों?

उत्तर :-

(i) परंपरागत'पड़ोस-कल्चर' का अर्थ एक ऐसी कल्चर अर्थात् संस्कृति से है जिसमें व्यक्ति के अपने पड़ोसियों से उदार एवं घनिष्ठ संबंध होते हैं। इसमें पड़ोस एक परिवार की तरह कार्य करता है और सुख-दु:ख के क्षणों में परस्पर सहायक होता है ।

(ii) महानगरों ने हमारे जीवन काफी प्रभावित किया है । पति –पत्नी दोनों काम पर जाते हैं , उन्हें पड़ोसियों से मुलाकात करनेका समय ही नहीं मिलता बड़े शहरों में लोग 'पड़ोस-कल्चर' से वंचित हैं। लोग अपनी कोठियों एवं फ्लैट में कैद होकर रह गए हैं , वे एक-दूसरे के लिए संवेदनशील नहीं रहे। इस कारण मनुष्य ने हृदय की उदारता,विशालता हँसी-ठहाके , उल्लास आदि सब भुला दिए गए हैं।

(iii) लेखिका के मन में बचपन की यादें की गहरी छाप थी ।

(iv) लेखिका को कहानी लिखते हुए यह अहसास होता है कि हमारी पड़ोस-कल्चर हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी होती है ।

(v) लेखिका की आरंम्भिक कहानियों के अधिकांश पात्र उनके अपने मोहल्ले के लोग हैं। क्योंकि ये सारे उनके अपने जाने-पहचाने थे।

'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन'

प्रश्न 1. **निम्न लिखित गद्यांशको पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिये सहीविकल्प चुनकर लिखिए: -**
अत्रि की पत्नी पत्नी- धर्म परव्या ख्यान देते समय घंटों पांडित्य प्रकट करे , गार्गी बड़े –बड़े ब्रह्मवादियों को हरा दे , मंडन मिश्र की सहधर्मचारिणीशंकराचार्य के छक्के छुड़ा दे ! गजब ! इससे अधिक भयंकर बात और क्या हो सकेगी !यह सब पापी पढ़ने का अपराध है । न वे पढ़तीं, न वे पूजनीय पुरुषों का मुकाबला करतीं । यह सारा दुराचार स्त्रियों को पढ़ाने का ही कुफल है । समझे । स्त्रियोंके लिए पढ़ना कालकूट और पुरुषों के लिए पीयूष का घूंट ! ऐसी ही दलीलों और दृष्टांतों के आधार पर कुछ लोग स्त्रियों को अपढ़ रखकर भारतवर्ष का गौरव बढ़ाना चाहते हैं ।

(i) 'छक्के छुड़ाना' का अर्थ है ?

(क) बुरी तरह अपमानित करें । (ख) संकट में डाल दें ।

(ग) बुरी तरह परास्त करें । (घ) लज्जित कर दें ।

(ii) 'यह सब पापी पढ़ने का अपराध है'-इस कथन में क्या भाव है ?

(क) सच्चाई (ख) तथ्य

(ग) व्यंग्य (घ) हास्य

(iii) 'कुछ लोग' में किस पर व्यंग्य है ?

(क) भारत-विरोधियों पर (ख) हिंदू धर्म के विरोधियों पर

(ग) धर्म-विरोधियों पर (घ) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों पर

(iv) 'सहधर्मचारिणी' का आशय है -

(क) संग-संग धर्म का आचरण करनेवाली (ख) पत्नी

(ग) संग-संग धर्म का प्रचार करने वाली (घ) धर्म पर चलने वाली

(v) इस गद्यांश से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में नारी-

(क) अशिक्षित थी (ख) शिक्षित थी

(ग) गंवार थी (घ) अबोध थी

उत्तर :-

(i) बुरी तरह परास्त करना ।

(ii) व्यंग्य

(iii) स्त्री-शिक्षा के विरोधियों पर

(iv) संग-संग धर्म का आचरण करनेवाली

(v) शिक्षित थी

प्रश्न 2. जिन व्यक्तियों ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया था ,उन्होंने अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए कौन–कौन से तर्क दिए है?' स्त्री शिक्षाके विरोधी कुतर्कों का खंडन'पाठ के आधार पर बताइए ।

उत्तर :- स्त्रियों को शिक्षित करना उनके और गृह सुख के नाश का कारण मानते हैं।-संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों के अनपढ़ों की भाषा में बातें कराना इस तथ्य को प्रमाणित करता है ।स्त्रियों को शिक्षित करने से अनर्थ हो जाते हैं।

प्रश्न 3. कुछ पुरातन पंथी लोग स्त्रियों की शिक्षा के विरोधी थे। द्विवेदी जी ने क्या-क्या तर्क देकर स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया?

उत्तर: ।- द्विवेदी जी ने निम्नलिखित तर्क देकर पुरातनपंथियों के तर्कों को नकारा और स्त्री-शिक्षा का समर्थन किया ।-

(i). स्त्रियों का नाटकों में प्राकृत बोलना उनके अनपढ़ होने का प्रमाण नहीं है। उन दिनों कुछ ही लोग संस्कृत बोल पाते थे। शेष शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्राकृत बोलते थे। प्राकृत में तो सारा बौद्ध जैन साहित्य लिखा गया है। हमारी आज की हिंदी ,गुजराती आदि भाषाएँ भी आज की प्राकृतें हैं। इसलिए प्राकृत भाषा बोलना अनपढ़ होने का प्रमाण बिल्कुल नहीं है।

(ii). यद्यपि आज स्त्री-शिक्षा होने के पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध नहीं हैं ,किंतु वे खो भी सकते हैं। अत: पर्याप्त प्रमाणों के अभाव में यह नहीं कहा जा सकता कि प्राचीन समय में स्त्री-शिक्षा नहीं थी।

(iii). भारत में वेद-मंत्र लिखने से लेकर तर्क , व्याख्यान और शास्त्रार्थ करने वाली सुशिक्षित नारियाँ हुई हैं। अत: प्राचीन नारी को शिक्षा से वंचित नहीं कहा जा सकता।

(iv). शकुंतला का दुष्यंत को कटु वचन कहना उसकी अशिक्षा का परिणाम नहीं था ,उसका स्वाभाविक क्रोध था।

प्रश्न 4. तब की शिक्षा-प्रणाली और अब की शिक्षा-प्रणाली में क्या अंतर हैस्पष्ट करें।

उत्तर: ।-तब की शिक्षा-प्रणाली में स्त्रियों को शिक्षा से वंचित किया जाता था। शिक्षा गुरुओं के आश्रमों और मंदिरों में दी जाती थी। कुमारियों को नृत्य , गान, श्रृंगार आदि की विद्या दी जाती थी। आज की शिक्षा-प्रणाली में नर-नारी-भेद नहीं किया जाता। लड़कियाँ भी वही विषय पढ़ती हैं, जो कि लड़के पढ़ते हैं। उनकी कक्षाएँ साथ-साथ लगती हैं। पहले सहशिक्षा का प्रचलन नहीं था। आज सहशिक्षा में पढ़ना फैशन बन गया है।

प्रश्न 5.परंपरा के उन्हीं पक्षों को स्वीकार किया जाना चाहिए जो स्त्री-पुरुष समानता को बढ़ाते हों - तर्क सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर: ⊢हमारी परंपरा बहुत लंबी है। उसकी सभी बातें आज अपनाने-योग्य नहीं है। प्राचीन समय में कुछ बातें स्त्री-पुरुष में अंतर करती थीं। आज का युग समानता का युग है। आज लिंग-भेद स्वीकार्य नहीं है। अत: हमें परंपरा में से केवल उन्हीं बातों को स्वीकार करना चाहिए जो स्त्री-पुरुष की समानता को बढ़ाती हों। तभी हमारा समाज उन्नति कर सकेगा।

प्रश्न 6. पुराने समय में स्त्रियों द्वारा प्राकृत भाषा में बोलना क्या उनके अपढ़ होने का सबूत है- पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: ⊢पुरानेसमय में स्त्रियों के प्राकृत भाषा में बोलने के प्रमाण मिलते हैं। परंतु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि प्राकृत भाषा अनपढ़ों की भाषा थी। वास्तव में प्राकृत अपने समय की बोलचाल की प्रचलित भाषा थी। जिस प्रकार आज हिंदी , बंग्ला आदि प्राकृत भाषाएँ हैं। अत: प्राकृत भाषा में बोलने के कारण महिलाओं को अनपढ़ कहने की भूल नहीं की जा सकती।

'राम-लक्ष्मण-परशुराम-संवाद' - 'तुलसीदास'

प्रश्न 1.निम्नलिखित काव्यांश को ध्यांपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : -

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही।
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥
न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥
गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

(i) पहली पंक्ति में लक्ष्मण ने परशुराम से क्या कहा?

(ii) विश्वामित्र ने परशुराम से ऐसा क्यों कहा कि उन्हें लक्ष्मण का अपराध क्षमा कर देना चाहिए?

(iii) विश्वामित्र ने परशुराम के बारे में मन- ही- मन क्या सोचा?

(iv) परशुराम ने सभा में उपस्थित लोगों के सामने लक्ष्मण के अपराध को किस प्रकार अक्षम्य बताया ?

(v) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौनसी है?

उत्तर :- (I) लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि जैसे कल को हाँककर अपने साथ लाए हो

(II) विश्वामित्र ने परशुराम से लक्ष्मण को बालक समझकर उसके अपराध को क्षमा कार देने की बात कही |

(III) विश्वामित्र ने परशुराम के बारे में सोचकर हँसे और सोचने लगे कि परशुराम अब भी राम लक्ष्मण को साधारण क्षत्रियों की तरह सोच रहे है

(IV) परशुराम ने कहा कटु वचन बोलने वाला बालक निश्चित तौर पर मरने योग्य है |

(V) काव्यांश कि भाषा अवधी है |

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए।

अथवा

सीता-स्वयंवर के अवसर पर लक्ष्मण ने क्रोधित परशुराम को धनुष के टूट जाने के कौन-कौन से कारण बताए हैं?

उत्तर :-परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने निम्नलिखित तर्क दिए-

- बचपन में हमसे कितने ही धनुष टूटे, परंतु आपने उन पर कभी क्रोध नहीं किया। इस विशेष धनुष पर आपकी क्या ममता है?
- हमारी नज़र में तो सब धनुष एक-समान होते हैं। फिर इस धनुष पर इतना हो-हल्ला क्यों?
- इस पुराने धनुष को तोड़ने से हमें क्या मिलता था?
- राम ने तो इस धनुष को छुआ ही था कि यह अपने-आप टूट गया। इसमें राम का कोई दोष नहीं।

प्रश्न 3.राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद में राम और लक्ष्मण के चरित्र में मुख्य अंतर क्या है?

अथवा

परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :-राम स्वभाव से कोमल और विनयी हैं। उनके मन में बड़ों के प्रति श्रद्धा और आदर है। वे गुरुजनों के सामने झुकना अपना धर्म समझते हैं। वे महाक्रोधी परशुराम के बेबात क्रुद्ध होने पर भी स्वयं को उनका दास कहते हैं। इस प्रकार वे परशुराम का दिल जीत लेते हैं।

लक्ष्मण राम से एकदम विपरीत हैं। वे बहुत उग्र और प्रचंड हैं। उनकी जबान छुरी से भी अधिक तेज़ है। वे व्यंग्य-वचनों से परशुराम को छलनी-छलनी कर देते हैं। उनकी उग्रता और कठोर वचनों को सुनकर न केवल परशुराम भड़क उठते हैं ,बल्कि अन्य सभाजन भी उन्हें अनुचित कहने लगते हैं। वास्तव में राम छाया हैं तो लक्ष्मण धूप ; राम शीतल जल हैं तो लक्ष्मण आग।

प्रश्न 4. साहस और शक्ति के साथ विनम्रता हो तो बेहतर है। इस कथन पर अपने विचार लिखिए।

उत्तर :-यह बात सत्य है कि साहस और शक्ति तभी तक अच्छे लगते हैं ,जब तक कि साहसी व्यक्ति विनम्र रहे। जैसे ही शक्तिशाली व्यक्ति उद्दंडता करता है,या घमंड दिखाता है, या बढ़-चढ़कर बोलता है, वह बुरा लगने लगता है। परशुराम और लक्ष्मण दोनों के उदाहरण सामने हैं। परशुराम पराक्रमी हैं,किंतु उसका स्वयं को महा पराक्रमी, बाल–ब्रह्मचारी, क्षत्रियकुल घातक कहना बुरा लगता है। जैसे-जैसे वह अपने कुठार को सुधारता है और वचन कड़े करता चला जाता है, वैसे-वैसे वह हँसी का पात्र बनता चला जाता है।

लक्ष्मण का साहस हमें भला लगता है। परंतु वह भी सीमाएँ तोड़ देता है। धीरे-धीरे वह बहुत उग्र, कठोर और उद्दंड हो जाता है। इस कारण सभी सभाजन उसके विरुद्ध हो जाते हैं। लक्ष्मण की उद्दंड शक्ति हमें खटकने लगती है। दूसरी ओर , रामचंद्र साहस और शक्ति के साथ विनम्रता का भी परिचय देते हैं। इसलिए वे सबका हृदय जीत लेते हैं।

प्रश्न 5.'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' में परशुराम ने अपने विषयमें जो कहा, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर :-परशुराम ने अपने बारे में कहा- "मैं बाल–ब्रह्मचारी हूँ। स्वभाव से बहुत क्रोधी हूँ। सारा संसार जानता है कि मैं क्षत्रियों के कुल का शत्रु हूँ। मैंने अनेक बार अपनी भुजाओं के बल पर धरती के सारे राजा मार डाले हैं और यह पृथ्वी ब्रह्मणों को दान दे है। मेरा फरसा बहुत भयानक है। इसने सहस्त्रबाहु जैसे राजा को मार डाला था। इसे देखकर गर्भिणी स्त्रियों के गर्भ गिर जाते हैं।"

प्रश्न 6.लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई?

अथवा

राम-परशुराम-लक्ष्मण संवाद के आधार पर संक्षेप में लिखिए कि परशुराम की क्रोधपूर्ण बातें सुनकर लक्ष्मण ने उन्हें शूरवीर की क्या पहचान बताई?

उत्तर :-लक्ष्मण ने वीर योद्धा के बारे में बताया कि सच्चा वीर रणभूमि में वीरता दिखलाता है,अपना गुणगान नहीं करता -सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहिं आपु।

2.पद - तुलसीदास

पद-1

नाथ सम्भुधनु भंजनिहारा | होइहि कोऊ एक दास तुम्हारा ||
आयेसु कहा कहिअ किन मोहि | सुनी रिसाईं बोले मुनि कोही ||
सेवकु सो जो करै सेवकाई | अरिकरनी करि करिअ लराई ||
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा | सहसबासु सम को रिपु मोरा ||
सो विलगाऊ विहाई समाजा | न त मारे जैंहहि सब राजा ||
सुनि मुनिवचन लखन मुसुकाने | बोले परसुधरहि अवमाने ||
वहु धनुही तोरी लरिकाई कबहूँ न असि रिसि कीन्ह गोसाईं ||
रे नृपबालक कालबस, बोलत तोहि न संभार ||
धनुही सम त्रिपुरारिधनु विदित सकल ससार ||

1. पद की भाषा और छंद के नाम लिखिए |
उत्तर - अवधी भाषा तथा दोहा और चौपाई छंद |

2. राम, लक्षमण और परशुराम के बचनो में कैसे मनोभाव हैं ?
उत्तर- राम के वचनों में विनम्रता
लक्ष्मण के वचनों में व्यंग्य
परशुराम के वचनों में क्रोध |

3. सेवक का क्या गुण होता हैं ? क्या परसुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक थे ?
उत्तर - सेवक का गुण होता हैं सेवा करना | परशुराम के अनुसार राम सच्चे सेवक नहीं थे क्योंकि उन्होंने शिव का धनुष तोड़कर शत्रुओं जैसा व्यवहार किया हैं |

पद-2

लखन कहा हसि हमरे जाना | सुनहु देव सव धनुष समाना ||
का छति लाभु जीन धनु तोरे | देखां राम नयन के भोरे ||
छुअत टूट रघुपतिहि न दोसु | मुनि विनु काज करिअ कत रोसू ||
बोले चितै परसु की ओरा | रे साठ सुनेहि सुभाऊ न मोरा ||
बालकु बोलि बाधो नहीं तोही | केवल मुनि जड़ जानहि मोही ||
बाल ब्रह्मचारी अति कोही | विश्वविदित क्षत्रियकुल द्रोही ||
सहसबाहुभुज छेदनिहारा | परसु बिलोक महीपकुमार ||
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीपकिशोर गर्भह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ||

1. **कवि व कविता का नाम लिखिए |**

उत्तर - तुलसीदास | राम-लक्ष्मण , परशुराम - संबाद |

2. **लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के क्या क्या तर्क दिए ?**

उत्तर - लक्ष्मण ने परशुराम से कहा कि हमारी दृष्टि में सभी धनुष एक समान हैं | शिव धनुष पुराना था, इसके टूट जाने के क्या लाभ हानि हो सकती हैं , राम ने मात्र छुआ ही था | अतः उनका क्या दोष |

3. **काव्यांश में परशुराम ने अपने विषय में क्या- क्या कहा ?**

उत्तर- परशुराम ने कहा मैं बाल ब्रह्मचारी हूँ , महाक्रोधी हूँ , क्षत्रिय कुल संहरक हूँ |

4. **परशुराम ने लक्ष्मण को धमकाते हुए क्या कहा ?**

उत्तर लक्ष्मण को धमकाते हुए कहा कि मैं निरा मुनि नहीं हूँ | मैंने अनेक बार इस पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन किया हैं | मैं सहस्रबाहु से लोहा लेने में समर्थ हूँ | तुहें बालक समझकर छोड़ा रहा हूँ|

5. **काव्यांश में प्रयुक्त अलंकार लिखिए |**

उत्तर- अंलकार - अनुप्रास, अतिशयोक्ति |

पद-3

बिहसि लखनु बोले मृदु बनी | अहो मुनीसु महामद मानी |
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू | चहत उडावन फूंकि फहरू ||
इहा कुम्हड़बतिया कोऊ नाहीं | जे तरजनी देखि मरि जाही ||
देखि कुठारू सरासन बाना | मैं कछु कहा सहित अभिमाना ||
भृगुसुत समुझि जनेऊ बिलोकी | जो कछु कहतु सहौ रिस रोकी ||
सुर महिपुर सम बचनु तुम्हारा | व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ||
जो बिलोकि अनुचित कऊँ छमहु महामुनि धीर |
सुनि सरोश Hkगुबंसमणि बोले गिरा गंभीर ||

1. कुम्हड़बतिया कोऊ नाही कहकर लक्ष्मण क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर लक्ष्मण कहना चाहते हैं कि हम कमजोर या कायर नही हैं कि आपके इस क्रोध से डर जाएँगे |

2. पुनि पुनि में कौन का अलंकार हैं ?

उत्तर पुनुरुक्ति प्रकाश अलंकार |

3. लक्ष्मण ने मुनि से कठोर वचन क्या सोचकर कहे थे ?

उत्तर लक्ष्मण ने परशुराम के हाथ में कुल्हाड़ा और कंधो पर धनुष बाण देखकर सोचा कि ये कोई वीर योद्धा होगे अतः यही सोचकर लक्ष्मण ने मुनि से कठोर वचन कहे थे |

पद-4

कौसिक कहा छमिअ .... न बुझ अबूझ |

1. पद में प्रयुक्त मुहावरा छाँटकर लिखिए |

उत्तर - हरा ही हरा सूझना अर्थात सभी कुछ आसान लगना (मुनिहि हरियरे सूझ)

2. अनुप्रास अलंकार उदहारण छांटकर लिखिए |

उत्तर- कटि कुठार कठोर
आगे अपराधी गुरुद्रोही
हृदय हँसि मुनिहि हरियरे सूझ |

3. विश्वामित्र मन ही मन क्यों मुस्कुरा रहे थे ?

उत्तर- परशुराम राम और लक्ष्मण को बालक ही समझ रहे थे | वह उनके पराक्रम से अपरिचित थे |

उनकी इसी अज्ञानता पर विश्वामित्र को हंसी आ रही हैं |

पद-6

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा | को नहिं जान विदित संसार |
माता पितहि उरिन भये नीके | गुरारिनु रहा सोचु बड़ जी के ||
सो जनु हमरेहि माथें काढ़ा | दिन चली गए ब्याज बड़ बाढ़ा ||
अब आनिअ व्यवहरिया बोली | तुरत देऊ मै थैली खोली ||
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा | हाय हाय सब सभा पुकारा ||
मिले न कबहूँ सुभट रण गाढे | द्वेजदेवता घरही के बाढ़े ||
अनुचित कहि सबुलोगु पुकारे | रघुपति सयनही लखनु नेवारे ||
लखन उतर आहुति सरिस भृगुबरकोपु कृसानु |
बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुल भानु |

1. लक्ष्मण जी ने परशुराम जी की प्रशंसा करते हुए क्या व्यंग्य किया ?

उत्तर - लक्ष्मण जी ने परशुराम जी पर व्यंग्य करते हुए कहा कि आपके शील के बारे में कौन नहीं जानता कि आपका कितना अच्छा शील है सारा संसार इसके बारे में जानता हैं |

2. लक्ष्मण के अनुसार परशुराम माता पिता के ऋण से कैसे मुक्त हुए ?

उत्तर- परशुराम अपने पितृहन्ता सहस्रवाह की भुजाओ को काटकर पितृरिन से मुक्त हुए थे |

3. लक्ष्मण किस ऋण और व्याज की बात कर रहे हैं ?

उत्तर - लक्ष्मण परशुराम के गुरु ऋण और उसके ब्याज की बात कर रहे हैं उनके अनुसार परशुराम अपने गुरु शिव को प्रसन्न करता चाहते हैं |इसलिए शिव धनुष तोड़ने वाले का वध करना चाहते हैं |

4. लक्ष्मण की कटु बातें सुनकर परशुराम ने क्या प्रतिकिया की ?

उत्तर - लक्ष्मण की कटु बाते सुनकर परशुराम ने तुरंत अपना फरसा संभल लिया और क्रोधित और आक्रामक मुद्रा में खड़े हो गए |

5. परशुराम को फरसा सँभालते देखकर सभा और लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

उत्तर- सारी सभा त्राहि त्राहि के कोलाहल से गूंज उठी लक्ष्मण परशुराम के प्रति अधिक क्रुद्ध और आक्रामक हो गए |

6. लक्ष्मण की बढती हुई उच्छृखलता पर अब तक मौन रहे राम ने अंत में लक्ष्मण को क्यों रोक लिया ?

उत्तर- यधपि लक्ष्मण की **उच्छृखलता** रघुवंश के अनुकूल नहीं थी फिर भी राम समझ रहे थे कि मुनिवर को हमारी वास्तविकता का ज्ञान हो जाए| परन्तु उपस्थिति लोगो की पुकार से स्थिथि बिगड़ती देख उन्होंने लक्ष्मण की आँखों से संकेत को रोका |

1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन कौन के तर्क दिए ?

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए -

1. सभी धनुष तो एक समान होते हैं , फिर इस धनुष पर इतना हो हल्ला क्यों ?
2. इस पुराने धनुष को तोड़ने पर हमें क्या मिलता है ?
3. राम के छूने भर से ही यह धनुष टूट गया , इसमें राम का क्या दोष ?

2. इस पाठ के आधार पर परशुराम के स्वभाव की विशेषता लिखिए ?

उत्तर - पाठ को पढ़कर हमे परशुराम के स्वभाव की निम्नलिखित विशेषता पता लगता हैं |

1. वे महाक्रोधी थे |
2. वे बड़बोले तथा अपनी वीरता की डींग हांकने वाले थे |
3. वे जल्द ही उत्तेजित हो जाते थे |
4. उन्हें अपने पूर्व के कृत्यों का बड़ा घमंड था |

3."सेवक सो जो करे सेवकाई " का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - इस पंक्ति का तात्पर्य हे कि सेवक वह है जो सेवा करता हैं | प्रस्तुत पद में इस पंक्ति को व्यंग्य रूप में प्रस्तुत किया गया हैं | परशुराम कहते हैं कि शिव धनुष तोड़कर काम तो तुमने शत्रुओं जैसा किया है | उस पर अपने आपको तुम मेरा दास कहते हो | यह दोहरा व्यवहार नहीं चलेगा |

4. लक्षण ने वीर योद्धा की कौन कौन सी विशेषताओ का उल्लेख किया हैं ?

उत्तर - लक्ष्मण द्वारा वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताओ पर प्रकाश डाला कि शूरवीर युद्धभूमि में अपनी वीरता का प्रदर्शन करता है | यह आत्मप्रशंसा नही करता, वह कर्म पर आधरित होता हैं | वीरता का परिचय देता है |

5. पठित कविता के आधार पर तुलसीदास की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए |

उत्तर- तुलसीदास राससिद्द कवि थे, उनकी भाषा अवधी है | इसमें दोहा , चौपाई शैली को अपनाया गया हैं | गेय पद हैं | उनकी भाषा में संस्कृत के द्वारा काव्य और संगीतात्मक बनाने का प्रयास किया गया हैं | कोमल ध्वनियो का प्रयोग किया हैं |

6. पदों के आधर पर लक्ष्मण व राम के स्वभाव के विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर- काव्यांश के आधार पर राम विनयशील, कोमल गुरुजनों का आदर करने वाले वीर साहसी | लक्ष्मण - उग्र, उद्दंड, वीर , साहसी | भाषा में व्यंग्य का भाव , स्वभाव से निडर |

7. किस कारण लक्ष्मण क्रोध की रोककर परशुराम के बचनो का पालन कर रहे थे ?

उत्तर - लक्ष्मण क्रोध को रोक कर परशुराम के वचनों को अकेला सह रहे थे क्योंकि उनके कुल की परम्परा है | उनके यहाँ गया , ब्राह्मण, हरिभक्त और देवताओ पर वीरता नही दिखाई जाती |

FA - 4

वाच्य - परिवर्तन

वाक्य - वाक्य उस रूप रचना को कहते हैं , जिससे य पता चलता हैं कि क्रिया के मूल रूप से चलने वाला कर्ता कर्म हैं अथवा भाव |

हिन्दी में तीन मुख्य वाक्य हैं -

(**क**) कर्तृ वाच्य - जिन वाक्यों में कर्ता की प्रधानता होती हैं, उन्हें कर्तृ वाच्य कहते हैं | इन वाक्यों में अकर्मक तथा सकर्मक दोनों क्रियाएँ हो सकती हैं | इनमे कर्ता प्रमुख होता हैं और कर्म गौण होता हैं |

पहचान - कर्ता प्रमुख , क्रिया कर्ता के अनुरूप , कर्ता प्रथम विभक्ति में |

उदाहरण - लक्ष्य चित्र वना रहा हैं | (सकर्मक)

गीता ने मिठाई खरीदी | (सकर्मक)

राम पुस्तक पढ रहा हैं | (सकर्मक)

पिताजी आ रहे हैं | (अकमर्क)

(ख) कर्मवाच्य - जिस वाक्यों में कर्ता गौण अथवा कर्म प्रधान होता हैं, उन्हें कर्मवाच्य कहते हैं | कर्मवाच्य में कर्म की प्रधानता होती हैं | इस कारण वाक्य में कर्ता का लोप हैं या कर्ता के साथ }kjk द्वारा के द्वारा या से का प्रयोग होता हैं |

उदाहरण - कर्म प्रमुख, क्रिया कर्म से अनुरूप, कर्ता तृतीय विभक्ति में

1. छात्रो के द्वारा चित्र बनाए गए | (कर्ता +द्वारा)
2. परीक्षा में प्रश्न- पत्र बाँटे गए | (कर्ता का लोप)
3. गाएँ चाराई जा रही हैं | (कर्ता का लोय)
4. बालक से पत्र लिखा जाता है | (कर्ता + से)
5. मुझसे यह दरवाजा नही खोला जाता | (कर्ता + से)- असमर्थता बताने के लिए नहीं के साथ कर्मवाच्य का प्रयोग |

6. मोहन से खाना नहीं खाया जाता | (कर्ता + से) - असमर्थता बताने के लिए नहीं के साथ कर्मवाक्य का प्रयोग |

विशेष - ध्यान देने योग्य बात यह हैं कि कर्मवाच्य में कर्ता का लोप होता हैं या कर्ता के साथ }kjk के द्वारा या से जोड़ा जाता हैं इस कारण कर्ता गौण हो जाता है तथा उसमे सकर्मक क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं |

(ग) भाववाच्य - रचना के अंतर्गत असमर्थता / विवशता सूचक वाक्य भी आते हैं, किन्तु इनमे द्वारा के स्थान पर प्रायः से परसर्ग का प्रयोग होता हैं | एक से वाक्य केवल निषेध रूप में प्रयुक्त होते हैं और कर्ता की असमर्थता सूचित करते हैं |

पहचान - भाव प्रमुख , क्रिया एकवचन , पुल्लिंग , अन्य पुरुष तथा सामान्य भूतकाल में |

उदाहरण-

1. अब मुझसे नहीं चला जाएगा |
2. गर्मियों में खूब नहाया जाता है |
3. तुमसे खाना नहीं खाया जा रहा है |
4. अब खेला जाए |
5. थोड़ी देर सो लिया जाए |

विशेष - हिन्दी में क्रिया का एक ऐसा रूप भी है,जो कर्मवाच्य की तरह प्रयोग होता हैं | यह सकर्मक क्रिया से वनाना हैं | जिन्हें व्युत्पन्न अस्कर्मक कहते हैं जैसे -

(क) मेज टूट गई | (तोडना सकर्मक क्रिया से - टूटना व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया)

(ख) दरवाजा खुल गया | (खोलना सकमार्क क्रिया से खुलना व्युत्पन्न अकर्मक क्रिया)

(ग) भोजन पक गया |

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाना - कर्मवाच्य बनाते समय निम्लिखित बातो को ध्यान में रखना चाहिए |

1. कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया का सामान्य भूतकाल में परिवर्तन |
2. कर्ता के साथ द्वारा के द्वारा या से लगाइए|
3. क्रिया को परिवर्तित रूप के साथ काल, पुरुष, वचन तथा लिंग के अनुशार क्रिया का रूप जोड़िये |
4. यदि कर्म के साथ विभक्ति लगी हो तो उसे हटा दीजिए |

उदारहण -

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
छात्रो ने पत्र लिखा ? छात्रों ने पत्र लिखा	छात्रो द्वारा पत्र लिखा गया	
मोहन क्रिकेट नहीं खेलता हैं		मोहन से क्रिकेट नहीं खेला जाता हैं	
यह कविता किसने लिखी हैं		यह कविता किसके द्वारा लिखी गई हैं
? मैंने पत्र लिखा		मेरे द्वारा पत्र लिखा गया

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाना :

1. कर्ता के साथ से या के द्वारा लगाएँ |

2. मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदल कर उसके साथ धातु के एकवचन पुल्लिंग अन्य पुरुष का वही काल लगा दे , जो drवाच्य की क्रिया का हैं | जैसे -

खेलगें — खेला जाएगा

सोते हैं — सोया जाता हैं

खारहे थे — खाया जा रहा था |

उदाहरण -

कर्तृवाच्य भाववाच्य

सीता सो गई | — सीता से सोया गया |

घायल बिस्तर से नहीं उठा | — घायल से बिस्तर से उठा नहीं जाता |

मै चल नही सकता — मुझसे चला नहीं जाता |

पंक्षी उड़ेगे | — पंक्षियों द्वारा उड़ा जाएगा |

बिशेष सामान्यतः भाववाच्य का प्रयोग निशोधार्थक अर्थ में होता हैं |

प्रश्न :

(अ) सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1. जिस वाक्य में कर्ता के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है , उसे कहते हैं :

(क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) साधारण वाच्य (घ) कर्तृवाच्य

2. जिस वाक्य में कर्म के अनुसार क्रिया का रूप बदलता हैं, उसे कहते हैं:

(क) कर्मधारय (ख) भाववाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

(ब) वाच्य बताएँ :

1. प्रधानमंत्री द्वारा भाषण दिया गया :

(क) भाववाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

2. मीना उपन्यास पढ़ती हैं :

(क) कर्तृवाच्य (ख) कर्मवाच्य

(ग) भाववाच्य (घ) इनमे से कोई नहीं

3. माँ से चला भी नहीं जाता |

(क) कर्मवाच्य (ख) भाववाच्य

(ग) कर्तृवाच्य (घ) अन्य

4. सुमित्रा }kjk पत्र पढ़ा गया

(क) कर्मवाच्य (ख) कर्तृवाच्य

(ग) भाववाच्य (घ) अन्य

5. भाववाच्य छाँटिए :

(क) रमा से सोया नहीं जाता | (ख) राम सो नहीं सकती

(ग) रमा सो नहीं पती | (घ) राम नहीं सो सकती

6. भाववाच्य छाँटीए:

(क)मुझसे पढ़ा नहीं जाता (ख) मै पढ़ नहीं सकती

(ग) मैं पढ़ती नहीं हूँ | (घ) इनमे से कोई नहीं

(स) निम्नलिखित वाक्यों में से कर्तृवाच्य वाले वाक्य छाँटिए :

1. **(क)** मुझसे पत्र नहीं लिखा गया (ख) हमसे इतने दुःख नहीं सहे जाते |

(ग)महात्मा गाँधी ने राष्ट्र को शांति और अहिंसा का सन्देश दिया |

(घ) इनमे से कोई नहीं

2. (क) मैं कविता पढ़ सकता हूँ | (ख) मीरा }kjk कल पत्र लिखा जाएगा |

(ग) बच्चों से शांत नहीं रहा जा सकता | (घ) इनमे से कोई नहीं

3. (क) रीमा से पुस्तक पढ़ी जा रही है | (ख) मुझसे उठा नहीं जाता

(ग) हम स्वामीजी को नहीं भूल सकते (घ) इनमे से कोई नहीं

4. (क) मुझसे हंसा नही गया | (ख) राम द्वारा पुस्तक लिखी जाती हैं |

(ग) हम स्वामीजी को नहीं भूल सकते | (घ) इनमे से कोई नहीं |

(द) निम्नलिखित वाक्यों में से भाववाच्य वाले वाक्य छाँटिए :

1. **(क)** लडको से द्वारा खूब पढ़ा गया | (ख) मोहन ने खाना खाया

(ग) मुझसे रोग नहीं गया | (घ) तुम यहाँ बैठो |

2. (क) हलवाई द्वारा मिठाई बनायी जाती है | (ख) मैं नहीं आ सकता |

(ग) लता मंगेशकर मधुर गीत गाती हैं | (घ) अजय से उठा नहीं जाता हैं |

3. कर्मवाच्य छाँटिए :

(क)रीमा चित्र बनती हैं | (ख) सौम्य सुबह नहीं उठ सकी

(ग) सौम्य द्वारा कविता पढ़ी | (घ) सौम्य घर गई |

4. (क) आज मैच खेलेगे | (ख) तुम मैच नहीं खेल पाओगे

(ग) बच्चा खूब रोया (घ) करीम }kjk पतंग उड़ाई जा रही हैं |

उत्तर - (अ) 1. (घ) 2.(ब) 1. (ख) 2. (ख) 3.(ख) 4.(क) 5.(क) 6.(क)
(ब) 1. (ग) 2.(क) 3.(ग) 4.(ग) 5.(द) 1.(ग) 2.(घ) 3.(ग) 4.(घ)

अभ्यास - प्रश्न :

निर्देशानुसार वाच्य ifjofrlr कीजिए :

1. शिकारियों द्वारा शिकार किया जाता है | (कर्तृवाच्य)
2. उसने दूध पी लिया | (कर्मवाच्य)
3. मेरी सास नहीं लड़ पाती- (भाव वाच्य)
4. मुझसे वहाँ नहीं जाया जाएगा | (कर्तृवाच्य)

छाया मत छूना

प्रश्न 1.निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

दुविधा - हत साहस है ? दीखता है पंथ नहीं,

देह सुखी हो पर मन के दुःख का अंत नहीं |

दुःख है न चाँद खिला शरद - रत आने पर

क्या हुआ जो खिला फूल रस - वसंत जाने पर ?

जो न मिला भुला उसे कर तू भविष्य वरण ,

छाया मत छूना ,

मन होगा दुख दूना |

(1)क . देह सुखी होने पर भी मन के दुःख का अंत क्यों नहीं होता है ? 2

ख. " दुबिधा हट सहस है " के मध्यम से कवि क्या कहना चाहता है ? 2

ग. इस काव्यांश में निहित सन्देश स्पष्ट कीजिए | 1

प्रश्न 2.कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात क्यों कही है?

उत्तर :-कवि ने कठिन यथार्थ के पूजन की बात इसलिए कहा् है क्योंकि यही सत्य है। मनुष्य को आखिरकार अपने वास्तविक सच का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी परिस्थितियों में जीना पड़ता है। भूली-बिसरी यादें या भविष्य के सपने उसे दुखी ही करते हैं ,किसी मंजिल पर नहीं ले जाते।

प्रश्न 3.'मृगतृष्णा' किसे कहते हैं कविता में इसका प्रयोग किस अर्थ में हुआ है?

उत्तर :-गर्मी की चिलचिलाती धूप में दूर सड़क पर पानी की चमक दिखाई देती है। हम वहाँ जाकर देखते हैं तो कुछ नहीं होता। प्रकृति के इस भ्रामक रुप को 'मृगतृष्णा' कहा जाता है। इस कविता में इसका अर्थ छलावे और भ्रम के लिए किया गया है। कवि कहना चाहता है कि लोग प्रभुता अर्थात् बड़प्पन में सुख मानते हैं। किंतु बड़े होकर भी कोई सुख नहीं मिलता। अत: बड़ बड़प्पन का सुख दूर से ही दिखाई देता है। यह वास्तविक सच नहीं है।

प्रश्न 4.भाव स्पष्ट कीजिए -

प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।

उत्तर :-बड़प्पन का अहसास,महान होने का सुख भी एक छलावा है। मनुष्य बड़ा आदमी होकर भी मन से प्रसन्न हो ,यह आवश्यक नहीं। हर सुख के साथ एक दुख भी जुड़ा रहता है। जैसे हर चाँदनी रात के बाद एक काली रात भी लगी रहती है ,पूर्णिमा के बाद अमावस भी आती है,उसी तरह सुख के पीछे दुख भी छिपे रहते हैं।

प्रश्न 5.'छाया' शब्द यहाँ किस संदर्भ में प्रयुक्त हुआ है? कवि ने उसे छूने के लिए मना क्यों किया है?

अथवा

'छाया मत छूना मन' पंक्ति में 'छाया' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर :- यहाँ 'छाया' शब्द अवास्तविकताओं के लिए प्रयुक्त हुआ है। ये छायाएँ अतीत की भी हो सकतीं और भविष्य की भी। ये छायाएँ पुरानी मीठी यादों की भी हो सकती हैं और मीठे सपनों की भी।

प्रश्न 6.'बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले' यह भाव कविता की किस पंक्ति में झलकता है?

उत्तर :-निम्न पंक्ति में -

जो न मिला भूल उसे कर तू भविष्य वरण।

प्रश्न 7.कविता में व्यक्त दुख के कारणों को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

'छाया मत छूना' कविता के कवि ने मानव की किन वृत्तियों को जीवन के लिए दुखदायी माना है?

उत्तर :-इस कविता में दुख के निम्नलिखित कारण बताए गए हैं -

(i) छाया अर्थात् बीती हुई मीठी यादें जिन्हें याद कर - करके हम अपने वर्तमान को और अधिक दुखी कर लेते हैं।

(ii) छाया अर्थात् भविष्य के सपने,जिनके पूरा न होने पर दुखी रहते हैं।

(iii) वर्तमान जीवन में उचित अवसर पर लाभ न मिलना। बसंत के समय फूल का न खिलना या शरद्-रात में चाँद का न खिलना। आशय यह है कि उचित अवसर पर सुख न मिलना।

प्रश्न 8.'रस वसंत बीत जाने पर फूल खिलने' से कवि का क्या आशय है?'छाया मत छूना' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर :-इससे आशय है - समय निकल जाने पर सुख का अवसर मिलना। उचित समय पर सुख का न मिलना।

प्रश्न 9.समय बीत जाने पर भी अतीत की उपलब्धि मनुष्य को आनंद देती है। 'छाया मत छूना' कविता के आधार पर प्रस्तुत कथन की तर्क-सहित पुष्टि कीजिए।

उत्तर :-समय बीत जाने पर भी भूतकाल की सुहानी यादें मनुष्य को आनंद से भर देती हैं। उसे अपने प्रियतम क्षणों की मनमोहक यादें आती हैं तो वे बीते हुए सुख एक बार फिर से जीवन में आ जातेहैं और उसे प्रसन्न कर देते हैं।

प्रश्न 10.'छाया मत छूना' कविता में शरद ऋतु और वसंत ऋतु का उदाहरण देकर कवि क्या भाव व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर :- कवि शरद ऋतु में चंद्रमा के अभाव को दिखाकर और वसंत ऋतु में फूल के अभाव को दिखाकर कहना चाहता है कि यदि ठीक समय पर सुख न मिले तो बहुत दुख होता है।

प्रश्न 11.कविता के आधार पर बताइए कि वह बार-बार किसकी किन स्मृतियों में खो जाता है?

उत्तर :-कवि बार-बार अपनी प्रिया के साथ चाँदनी रात में बिताए हुए सुखों की स्मृतियों में खो जाता है।

‘संस्कृति’

प्रश्न 1.निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए---- 1x5=5

संस्कृति और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम । हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके,हमारे गमना-गमन के साधन , हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा है,उन्हें हम उसकी सभ्यता कहें या असभ्यता? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

(क)सभ्यता का जन्म किससे होता है?

(1)असभ्यता से (2) संस्करों से (3)संस्कृति से (4)महानता से

(ख)आत्म-विनाश के साधन का तात्पर्य है-----

(1)हिंसा (2)हथियार (3)क्रोध (4)द्वेष

(ग)संस्कृति का संबंध किससे होता है?

(1कल्याण भावना से। (2) विकास भावना से। (3)ज्ञान से । (4)विनाश से।

(घ)आत्म-विनाश की भावना को आप क्या कहेंगे?

(1)सभ्यता (2)असभ्यता (3)संस्कृति (4)असंस्कृति

(ङ)’गमना-गमन’ - इस संबंध में कौन-सा समास है?

(1)कर्मधारय (2)तत्पुरुष (3)अव्ययीभाव (4)द्वंद्व

प्रश्न 2.लेखक की दृष्टि में ‘सभ्यता’ और ‘संस्कृति’ की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर :- लेखक की दृष्टि में ‘सभ्यता’ और ‘संस्कृति’ शब्दों का प्रयोग बहुत मनमाने ढ़ग से होता रहा है। यहाँ तक कि उनके साथ ‘भौतिक’ और ‘आध्यात्मिक’ जैसे विशेषण जोड़े जाते रहे हैं। इन शब्दों की समझ और अधिक गड़बड़ा जाती है।

प्रश्न 3.किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर:- अपने तन को ढँकने के लिए ,स्वयं को गर्मी,सर्दी और नंगेपन से बचाने के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा।सुई-धागे की खोज से पहले मनुष्य नंगा रहता था। वह जैसे-जैसे वृक्ष की खाल या पत्तों से तन को ढँकता था। किंतु उससे शरीर की ठीक से रक्षा नहीं हो पाती थी। अत: जब उसने सुई-धागे की खोज कर ली तो उसके हाथ बहुत बड़ी तकनीक लग गई। यह तकनीक इतनी कारगर थी कि आज लोग इसका भरपूर उपयोग करते हैं।

प्रश्न 4. :- वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

उत्तर :- लेखक के अनुसार ,वास्तविक संस्कृत व्यक्ति वह है जिसकी बुद्धि और विवेक ने किसी भी नए तथ्य का अनुसंधान और दर्शन किया होगा। जैसे-न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोजा। वह वास्तविक रुप से संस्कृत व्यक्ति था।

प्रश्न 5.आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है ? इस खो के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत क्या रहे होगे?

उत्तर :- आग की खोज मनुष्य की बड़ी आवश्यकता की पूर्ति करती है। वह भोजन पकाने के काम आती है। अत: आदि मनुष्य ने इसे सबसे महत्त्वपूर्ण खोज माना। आज भी इसका महत्त्व सर्वोपरि है। तभी तो हर सांस्कृतिक कार्यक्रम से पहले दियाजलाया जाता है और खेलों में मशाल जलाई जाती है। आज यदि आगन हो तो पूरी सभ्यता ताश के महल की भाँति भरभरा कर गिर जाएगी।

आग की खोज के पीछे भोजन की प्रेरणा तो रही ही होगी ; साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की प्रेरणा भी रही होगी। रात में आग बहुत काम आई होगी। सर्दियों में तो यह अमृत-जैसी सिद्ध हुई होगी। घनघोर ठंडी कालीरात में जब आदिमानवआगसे गर्मी लेता होगा,काली रात में देख पाया होगा और मांस को भूनकर खापाया होगा तो उसे कितना आनंद मिला होगा। अत: उसने अग्नि को देवता माना होगा और उसे सुरक्षित रखने के उपाय खोजे होंगे।

प्रश्न 6.न्यूटन को संस्कृत मानव कहनेके पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं ? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञानकी कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

उत्तर :- लेखक ने संस्कृत मानव की परिभाषा ऐसी दी है कि उसमें न्यूटन जैसे आविष्कारक और चिंतक ही आ पाते हैं। उनके अनुसार ,जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से किसी नए

तथ्य का अनुसंधान और दर्शन कर सकता है ,वही संस्कृत व्यक्ति है। न्यूटन ने भी यही किया। उसे अपनी योग्यता ,प्रेरणा और प्रवृत्ति से विज्ञान के विभिन्न नियमों को जाना और उसे जनता के सामाने रखा। इस कारण वह संस्कृत व्यक्ति हुआ।

अन्य लोग,जो न्यूटन द्वारा खोजे गए सभी सिद्धांतों की जानकारी रखते हैं और अन्य सूक्ष्म सिद्धांत भी जानते हैं,न्यूटनजैसे संस्कृत नहीं हो सकते। कारण? उन्होंने अपनी योग्यता और प्रवृत्ति से ज्ञान का आविष्कार नहीं किया। उन्होंने तो न्यूटन या अन्य वैज्ञानिकों द्वारा खोजे गए सिद्धांतों को जाना-भर।

प्रश्न 7.एक **संतुष्ट मनुष्य को सुसंस्कृत बनने के लिए किस गुण की आवश्यकता है?**

उत्तर :- लेखक के अनुसार ,जिसका पेट भरा है और तन ढँका है ,उसे संस्कृत नहीं कहा जा सकता। संस्कृत होने के लिए आवश्यक है कि वह निठल्ला न बैठे। उसके मन में कुछ नया तथ्य खोजने की प्रेरणा,भावना और प्रवृत्ति हो।

प्रश्न 8.'संस्कृत' पाठ के अनुसार सभ्यता क्या है? इसके अंतर्गत क्या-क्या चीज़ें शामिल हैं?

उत्तर :- इस पाठ के अनुसार ,संस्कृत व्यक्तियों द्वारा खोजे गए साधन और पदार्थ सभ्यता का निर्माण करते हैं। आग,सुई-धागा,हमारे खान-पान,ओढ़ना-बिछाना,आवगमन के साधन,अस्त्र-शस्त्रसब सभ्यता के अंतर्गत आते हैं।

प्रश्न 9.संस्कृत पाठ के आधार पर लिखिए कि मानव-संस्कृति के वास्तविक जन्मदाता कौन हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- मानव-संस्कृति के वास्तविक जन्मदाता वे मनीषी हैं जो सांसारिक भोग की प्रेरणा से नहीं ,अपितु प्रकृति के रहस्यों को जानने की इच्छा से अन्वेषण में लगे रहते हैं। जैसे न्यूटन मानव-संस्कृति का जन्मदाता था।

रचनाकी दृष्टि से वाक्य के भेद

1. रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन भेद होते हैं-

(i) सरल वाक्य। (ii)संयुक्तवाक्य।(iii) मिश्र वाक्य।

सरल वाक्य

जिस वाक्य में एक क्रिया होती है,उसे सरल वाक्य कहते हैं। सरल वाक्य में एक कर्ता तथा एक क्रिया का होना आवश्यक है। उदाहरण -

मोहन स्कूल जाता है।

यहाँ 'मोहन' कर्ता है तथा 'जाता है' क्रिया होने के कारण यह सरल वाक्य है।

सरल वाक्य में कर्ता और क्रिया के अतिरिक्त कर्म, पूरक,क्रियाविशेषण,संप्रदान,अधिकरण ,करण, अपादान घटक हो सकते हैं। यथा -

(क) मोहन हँसता है। (कर्ता-क्रिया)

(ख) राजेश बीमार है। (कर्ता-पूरक-क्रिया)

(ग) पुलिस ने चोर को पीटा। (कर्ता-कर्म -क्रिया)

(घ) माता जी ने शीला को एक साड़ी दी। (कर्म-कर्म-कर्म-क्रिया)

संयुक्त वाक्य

जिस वाक्य में दो या अधिक मुख्य तथा स्वतंत्र उपवाक्य होते हैं , वे संयुक्त वाक्य कहलाते हैं। ये दोनों पूर्ण अर्थ देने में सक्षम होते हैं। ये और ,तथा,फिर,या,अथवा,किंतु,लेखिन,इसलिए आदि योजकों से जिड़े होते हैं। जैसे-

हम लोग पुणे घूमने गए और वहाँ चार दिन रहे।

(i) हम लोग पुणे घूमने गए। (ii) (हम) वहाँ चार दिन रहे।

वह आई तो थी किंतु उसने कुछ कहा नहीं था।

(i)वह आई थी। (ii) उसने कुछ कहा नहीं था।

मिश्र वाक्य

मिश्र वाक्य में एक-से अधिक उपवाक्य होते हैं। उनमें एक उपवाक्य प्रधान होता है तथा अन्य एक-या-अधिक उपवाक्य उस पर आश्रित होते हैं। ये उपवाक्य परस्पर व्यधिकरण योजकों(जैसे कि,यदि,अगर,तो,तथापि, यद्यपि,इसलिए आदि) से जुड़े हुए होते हैं। उदाहरण -

यदि मैं न आया होता तो काम न बनता।

इसमें 'काम न बनता' प्रधान उपवाक्य पर 'यदि मैं न आया होता'। उपवाक्य आश्रित है।

अन्य कुछ उदाहरण

(क) अध्यापक ने बताया **कि** कल स्कूल में छुट्टी होगी।

(ख) जो लड़का कमरे में बैठा है,**वह** मेरा भाई है।

(ग)**जब** मैं छोटा था **तब** साइकिल खूब चलाता था।

(घ)**यदि** इस बार वर्षा न हुई **तो** सारी फसल नष्ट हो जाएगी।

मुख्य उपवाक्य	**योजक**	**आश्रित उपवाक्य**
(क) अध्यापक ने बताया	कि	कल स्कूल में छुट्टी होगी।
(ख) वह मेरा भाई है।	,	जो लड़का कमरे में बैठा है।
(ग)साइकिल खूब चलाता था।	जब,तब	मैं छोटा था।
(घ)सारी फसल नष्ट हो जाएगी।	यदि, तो	इस बार वर्षा नहुई।

आश्रित उपवाक्यों के भेद -

आश्रित उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं-

(क)**संज्ञा उपवाक्य -** जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा-पदबंध के बदले में प्रयुक्त हुआ हो,उसे संज्ञा उपवाक्य कहतें हैं। जैसे -

रहीम बोला कि **मैं कर्नाटक जा रहा हूँ।**

यहाँ 'मैं कर्नाटक जा रहा हूँ' उपवाक्य प्रधान वाक्य 'रहीम बोला' के कर्म के रुप में प्रयुक्त हो रहा है। अत: संज्ञा उपवाक्य है।संज्ञा उपवाक्य से पहले प्राय: 'कि' का प्रयोग होताहै। कभी-कभी यह लुप्त भी हो जाता है। जैसे-

जान पड़ता है **कि माता जी** कुछ **अस्वस्थ हैं।**

इनसे यह न पूछिए **कि ये कौन हैं**?

तुम नहीं आओगे,मैं जानता था।

(क)विशेषण उपवाक्य -जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य के किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताता है, उसे 'विशेषण उपवाक्य' कहते हैं। जैसे-

आपकी वह किताब कहाँ है,**जो आप कल लाए थे।**

यहाँ 'जो आप कल लाए थे'उपवाक्य 'वह किताब' की विशेषता प्रकट कर रहा है,अत: विशेषण उपवाक्य है। हिंदी में 'जो','जिस', जिसे,'जिसको' से आरंभ होने वाले उपवाक्य विशेषण उपवाक्य कहलाते हैं। ये कभी वाक्य के प्रारंभ में आते हैं और कभी अंत में। यथा-

जो पैसे मुझे मिले थे,वे खर्च हो गए। (प्रारंभ में)

वे पैसे खर्च हो गए,जो मुझे मिले थे। (अंत में)

(ख)**क्रियाविशेषण उपवाक्य -**जो उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की क्रिया की कोई विशेषता बताता है,वह क्रियाविशेषण उपवाक्य कहलाता है। इसके पाँच भेद होते हैं-

1. कालवाची उपवाक्य
2. स्थानवाची उपवाक्य
3. रीतिवाची उपवाक्य
4. परिमाणवाची उपवाक्य
5. परिणामवाची उपवाक्य

वाक्य-रूपांतरण

एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलना वाक्य- रचनांतरण/रूपांतरण कहलाता है। रचना की दृष्टि से वाक्य-रचनांतरण की प्रक्रिया निम्नलिखित है-

सरल वाक्य को मिश्रवाक्य अथवा संयुक्त वाक्य में बदलना; मिश्र वाक्य को सरल वाक्य अथवा संयुक्त वाक्य में बदलना तथा संयुक्त वाक्य को सरल और मिश्र वाक्य में बदलना इस कोटि के अंतर्गत आता है। यह ध्यान रखने योग्य है कि वाक्य-रचना बदलनी चाहिए,किंतु अर्थ नहीं बदलना चाहिए।

सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य

1.	उसने घर आकर भोजन किया।	सरल
	वह घर आया और उसने भोजन किया।	संयुक्त
2.	वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।	सरल
	उसे फल खरीदना था इसलिए बाज़ार गय।	संयुक्त
3.	मोहन हिंदी पढ़ने के लिए शास्त्री जी के यहाँ गया।	सरल
	मोहन को हिंदी पढ़ना है इसलिए शास्त्री जी के यहाँ गया।	संयुक्त

सरल वाक्य से मिश्र वाक्य

1.	देश के लिए मर-मिटने वाला सच्चा देशभक्त होता।	सरल
	जो देश के लिए मर मिटता है, वही सच्चा देशभक्त होता है।	मिश्र
2.	शिक्षक के सामने छात्र शांत रहते हैं।	सरल
	जब तक शिक्षक रहते हैं ,छात्र शांत रहते हैं।	मिश्र
3.	मोहन ने मुझे जल्दी भोजन करने के लिए कहा।	सरल
	मोहन ने कहा कि मुझे जल्दी भोजन करना है।	मिश्र

संयुक्त वाक्य से सरल वाक्य

1.	शीला ने एक पुस्तक माँगी और वह उसे मिल गई।	संयुक्त
	शीला ने जो पुस्तक माँगी थी, वह उसे मिल गई।	मिश्र
2.	मज़दूर मेहनत करता है लेकिन उसका लाभ उसे नहीं मिलता।	संयुक्त
	मज़दूर जितनी मेहनत करता है,उसका उसे लाभ नहीं मिलता।	मिश्र
3.	मोहन बहुत खिलाड़ी है,लेकिन फेल नहीं होता।	संयुक्त
	मोहन ऐसा खिलाड़ी है जो कभी फेल नहीं होता।	मिश्र

रस

काव्य (कविता, नाटक आदि) के पढ़ने ,सुनने अथवा देखने से जो अनिर्वचनीय आनंद प्राप्त होता है,वहीं **'रस'** कहा गया है।

रस को साहित्य के आचार्यों ने काव्य की आत्मा माना है। जैसे आत्मा के बिना शरीर निर्जीव और निष्क्रिय होता है ,उसी प्रकार से 'रस' के बिना काव्य भी प्रभावहीन और निर्जीव होता है। आचार्य 'विश्‍वनाथ' ने इसी कारणा 'काव्य' की परिभाषा **'वाक्यं रसात्माकं काव्यम्'** दी है।

रस का अनुभव -'काव्य' के सर्वप्रथम आचार्य भरतमुनि ने रस के प्रकट होने की प्रक्रिया इस प्रकार बतायी है "विभाव ,अनुभाव और संचारी (व्यभिचारी) भावों के संयोग से रस की निषस निष्पत्ति होती है"। **"विभावानुभाव-व्यभिचारि-संयोगाद्रसनिष्पत्ति:"।** रस की संख्या दस मानी जाती है।

रस के अंग

रस के चार अंग हैं- स्थायी भाव,विभाव,अनुभाव,और संचारी भाव ।

(v) **स्थायी भाव**-मनोवैज्ञानिक एवं काव्य-शास्त्रियों ने मानव-मन में स्थायी रुप से निवास करने वाले कुछ भाव या विकार माने हैं। जब इनमें से किसी एक के अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न होती है तो वह मनुष्य के मन पर पूर्णत: छा जाता है। उस समय हम कहा करते हैं कि अमुक मनुष्य क्रोध में है अथवा करुणा से पूर्ण है अथवा घृणा से भरा हुआ है।

स्थायी भावों का परिचय -काव्य के आचार्यों ने स्थायी भाव नौ माने हैं -

2. रति 2. हास 3. शोक 4. क्रोध 5. उत्साह 6. भय 7. जुगुप्सा 8. विस्मय 9. निर्वेद। कुछ विद्वाने वात्सल्य नामक दसवाँ स्थायी भाव भी मान हैं।

(vi)विभाव-स्थायी भाव को जगाने वाले व्यक्ति,वस्तु या परिस्थितियाँ विभाव कहे जाते हैं।

विभाव के दो प्रकार हैं - 1. आलम्बन और 2. उद्दीपन।

- **आलम्बन विभाव** -स्थायी भाव जागृत करने वाले कारण (व्यक्ति,वस्तु,परिस्थिति) आलम्बन होते हैं। यथा लक्ष्मण को देखकर परशुराम को क्रोध तो लक्ष्मण क्रोध का आलम्बन है।

आलम्बन के दो प्रकार हैं -1. आश्रय 2. और विषय।

जिसके मन में स्थायी भाव जागता है और जिस कारण से जागता है ,उसे विषय कहते हैं। परशुराम आश्रय और लक्ष्मण विषय है।

- **उद्दीपन विभाव -** स्थायी भाव को तीव्र करने वाले कारण उद्दीपन कहे जाते हैं। लक्ष्मण का मुस्काना,व्यंग्य-वचन कहना उद्दीपन है।

(vii) **अनुभाव -** आश्रय की चेष्टाएँ अनुभाव कही जाती हैं। उपर्युक्त उदाहरण में परशुराम का क्रोधपूर्ण वचन बोलना ,फरसे को सम्भालना,दाँत पीसना,आँखें लाल करना आदि अनुभाव होंगे।

(viii) **संचारी भाव -**रस के अनुभव होते समय आश्रय के मन में जो भाव बार-बार उत्पन्न होते और मिटते रहते हैं ,वे संचारी या व्यभिचारी भाव कहे जाते हैं। इनकी संख्या तैतीस मानी गयी है।

स्थायी भाव और रस

रति-स्त्री और पुरुष के बीच उत्पन्न होने वाला प्रेम-भाव रति कहा जाता है।

हास -किसी की विकृत वेश-भूषा,वाणी तथा अंग आदि को देखने-सुनने से जो प्रफुल्लता उत्पन्न होती है,वह हास है।

शोक -प्रिय या इच्छित वस्तु के नष्ट होने पर अथवा किसी अनिष्ट की आशंका से मन में जो कष्ट होता है,वह शोक है।

क्रोध -अपराधी,शत्रु तथा किसी के प्रतिकूल आचरण को देखकर उत्पन्न होने वाली उत्तेजना क्रोध है।

उत्साह -कठिन कार्य को सम्पन्न करने के सक्रिय उमंग का नाम उत्साह है।

भय -महान् शारीरिक या मानसिक हानि की सम्भावना से उत्पन्न व्याकुलता भय है।

जुगुप्सा -घृणा उत्पन्न करने वाले दृश्य,वस्तु या व्यक्ति के दर्शन से या सम्बन्ध से उत्पन्न होने वाला विकार जुगुप्सा है।

विस्मय - असाधारणतया अभूतपूर्व वस्तु के,दृश्य के या व्यक्ति के दर्शन से मन का चकित होना ही विस्मय है।

निर्वेद -काम, क्रोध,लोभ,मोह आदि का परित्याग और शान्ति का अनुभव निर्वेद है।

वात्सल्य -संतान के प्रति स्नेह-भाव ही वात्सल्य है।

ये ही स्थायी भाव विभिन्न विभाव ,अनुभाव और संचारी भावों के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होते हैं। विभिन्न स्थायी भावों से उत्पन्न रसों के नाम क्रमश: इस प्रकार हैं -

6. रति - श्रृंगार रस
7. हास - हास्य रस
8. शोक - करुण रस
9. क्रोध - रौद्र रस
10.उत्साह - वीर रस

6. भय - भयानक रस
7. जुगुप्सा - वीभत्स रस
8. विस्मय - अद्‌भुत रस
9. निर्वेद - शांत रस
10. वात्सल्य - त्सल रस

11.श्रृंगार रस -

जहाँ काव्य में रति नामक स्थायी भाव ,विभाव,अनुभाव और संचारी भावों से पुष्ट होकर रस में परिणत होता है,वहाँ श्रृंगार रस होता है।

श्रृंगार रस के दो पक्ष होते हैं -**संयोग श्रृंगार** और **वियोग श्रृंगार**। जहाँ नायक और नायिका के मिलन का वर्णन हो ,वहाँ संयोग श्रृंगार और जहाँ दोनों के वियोग का वर्णन हो वहाँ वियोग श्रृंगार कहा जाता है।

1. उदाहरण : - संयोग श्रृंगार

कंज नयनि,मज्जनु किएँ,बैठी ब्यौरति बार।
कच- अँगुरी-बिच दीठि दै,कितवति नंदकुमार। **(बिहारी)**

यहाँ राधा और कृष्ण के प्रेम का वर्णन है। दोनों साथ हैं ,अत: संयोग श्रृंगार की योजना है। कमल जैसे नेत्रवाली राधा स्नान करके बाल काढ़ रही हैं परंतु बाल और अँगुली के बीच से श्रीकृष्ण के सुंदर रुप को देखती जा रही हैं। यहाँ कृष्ण **आलम्बन** हैं। राधा **आश्रय**हैं। कृष्ण का रुप **उद्दीपन** है तथा बालों की ओट से देखना आदि कायिक **अनुभाव** हैं। लज्जा,औत्सुक्य आदि **संचारी** हैं। अत: यहाँ संयोग श्रृंगार का वर्णन है।

2. उदाहरण :- वियोग श्रृंगार

सुनि-सुनि ऊधव की अकह कहानी कान,
कोऊ थहरानी,कोऊ थानहिं थिरानी हैं।
x x x
कोऊ स्याम-स्याम कै बहकि बिललानी,
कोऊ कोमल करेजौ थामि सहमि सुखानी हैं।

यहाँ गोपियों के श्रीकृष्ण से वियोग की स्थिति का वर्णन है। श्रीकृष्ण **आलम्बन** हैं,**आश्रय** हैं। ऊधव की अकह कहानी **उद्दीपन** है। काँपना,श्याम-श्याम पुकारना,व्याकुल होना, हृदय को थाम लेना आदि **अनुभाव** हैंऔर जड़ता,प्रलाप,उन्माद आदि **संचारीभाव** हैं। इस प्रकार यहाँ वियोग श्रृंगार का वर्णन है।

12.हास्य रस

जहाँ कवि किसी की विचित्र वेश-भूषा,चेष्टा तथा कथन का वर्णन करके 'हास' नामक स्थायी भाव जगाता है और विभाव आदि से पुष्ट कर देता है वहाँ हास्य रस कहा जाता है।

उदाहरण - सिर घोर मोर पर,चुटिया थी लहराती।
थी तोंद लटक कर घुटनों को छू जाती।
जब मटक मटक कर चले,हँसी थी भारी।
हो गये देखकर,लोट-पोट नर नारी॥

यहाँ विचित्र स्वरुप वाले किसी पात्र का वर्णन है।यह पात्र **आलम्बन** है। दर्शक **आश्रय** हैं। मटक-मटककर चलना **उद्दीपन** है। हँसना,लोटपोट होना **अनुभाव** हैं तथा हर्ष,औत्सुक्य आदि **संचारी भाव** हैं। इस प्रकार यहाँ हास्य रस की व्यंजना हुई है।

13.करुण रस

जहाँ 'शोक' नामक स्थायी भाव,विभाव आदि से संयुक्त होकर रस-दशा को प्राप्त होता है,वहाँ करुण रस खाजाता है।

जैसे : - सोक विकल सब रोबहिं रानी। रुप,सील ,बल,तेज बखानी।
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। परहिं भूमि तल बारहिं बारा।।

यहाँ महाराज दशरथ के मरण पर रानियों के शोक का वर्णन है ; अत: **स्थायी भाव** शोक है। **आलम्बन** मृत दशरथ है। **आश्रय** रानियाँ हैं। रोना ,राजा के बल ,प्रताप आदि का वर्णन करना,बार-बार भूमि पर गिरना **अनुभाव** हैं। स्मृति ,चिंता,प्रलाप,विषाद आदि संचारी भाव हैं। अत: इन काव्य-पंक्तियों से करुण रस की व्यंजना हुई है।

14.रौद्र रस

जब 'क्रोध' नामक स्थायी भाव,विभावादि से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है तो वहाँ रौद्र रस मानाजाता है। जैसे : -

भाखे लखन,कुटिल भईं भौंहें। रद-पुट फरकत नयन रिसौंहें॥

यहाँ लक्ष्मण के क्रुद्ध होने का वर्णन है। **स्थायी भाव** क्रोध है। **आलम्बन**जनक के वाक्य हैं। **आश्रय लक्ष्मण** हैं।सभा में उपस्थित राजा ,धनुष का दर्शन आदि **उद्दीपन** हैं। भौंहों का कुटिल

होना,होठों का फड़कना ,नेत्रों का क्रोधपूर्ण होना कायिक **अनुभाव** हैं,आवेश,चपलता,उग्रता आदि संचारी भाव हैं। अत: यहाँ रौद्र रस की व्यंजना हुई है।

15.वीर रस

जब 'उत्साह' नामक स्थायी भाव,विभाव आदि के संयोग से रस-दशा को प्राप्त होता है तो वह वीर रस कहा जाता है। जैसे : -

"जब दहक उठा सीमांत, पुकारा माँ ने शीश चढ़ाने को।
नौजवाँ लहू तब तड़प उठा, हँसते-हँसते बलि जाने को॥
गरजे थे लाखों कण्ठ ,"आज दुश्मन को मजा चखाएँगे।
भारत-धरणी के पानी का,जौहर जग को दिखलाएँगे॥"

यहाँ भारत की सीमा पर आक्रमण होने पर भारतीय युवकों की वीर-भावना का वर्णन है।**आलम्बन** शत्रु है। माँ की पुकार,शत्रुओं का आक्रमण आदि **उद्दीपन** हैं।भारतीय युवक **आश्रय** हैं। गरजना,शत्रुओं को चुनौती देना आदि **अनुभाव** हैं। उग्रता, चपलता, धृति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ वीर रस की व्यंजना हुई है।

16.भयानक रस

जब 'भय' नामक स्थायी भाव,विभाव, अनुभाव आदि के संयोग से रस-दशा को पहुँचाता है तो वह भयानक रस कहा जाता है। जैसे : -

हाट, बाट, कोट, ओट, अटनि, अगार, पौरि, खोरि-खोरि दौरि-दौरि दीनि अति आगि है।
आरत, पुकारत, सम्हारत न कोऊ काहू, व्याकुल जहाँ सो तहाँ लोग चले भागि हैं॥

यहाँ हनुमान द्वारा लंका जलाये जाने से भयभीत हो रहे राक्षसों का वर्णन है। **स्थायी भाव** भय है। **आलम्बन** हनुमान और जलती हुई लंका है। **आश्रय** राक्षस-राक्षसियाँ हैं। हनुमान का विकराल रूप,अग्नि की बढ़ती हुई ज्वालाएँ और उनका दौड़-दौड़कर आग लगाना आदि **उद्दीपन** हैं तथा त्रास ,चिंता, शंक , प्रलाप आदि **संचारी भाव** हैं। इस प्रकार यहाँ भयानक रस की व्यंजना हुई है।

17.वीभत्स रस

जहाँ'जुगुप्सा' नामक स्थायी भाव विभाव,अनुभाव एवं संचारी भाव से पुष्ट होता हुआ रस-दशा को प्राप्त होता है,वहाँ वीभत्स रस होता है। जैसे : -

घर में लाशें,बाहर लाशें,जनपथ पर सड़ती हैं लाशें।
आँखें नृशंस यह दृश्य देख मुँद जातीं,घुटती हैं श्वासें।

यहाँ बंगलादेश में पाकिस्तानी अत्याचार का वर्णन है। **स्थायी भाव** 'जुगुप्सा' (घृणा) है। **आलम्बन** सड़ती हुई लाशें और **आश्रय** जन समुदाय या दर्शन हैं। घृणात्मक दृश्य ही **उद्दीपन** है और आँखें मूँदना,श्वास घुटना आदि अनुभाव हैं। ग्लानि, दैन्य, निर्वेद आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार विभावादि से पुष्ट होता हुआ जुगुप्सा भाव वीभत्स रस में परिणत हो रहा है।

18.अद्भुतरस

जहाँ विस्मय नामक स्थायी भाव विभाव आदि से पुष्ट होकर रस-दशा को प्राप्त होता है ,वहाँ अद्भुत रस माना जाता है। यथा–

इहाँ उहाँ दुइ बालक देखाँ। मति भ्रम मोर कि आन बिसेखा।
तन पुलकित मुख बचन न आवा । नयन मूँदि चरनन सिर नाव॥

यहाँ कौशल्या द्वारा भगवान राम के दो बालरूप देखकर चकित होने का वर्णन है। स्थायी भाव विस्मय है। आलम्बन राम के दो बाल स्वरूप हैं और आश्रय कौशल्या है। शरीर का पुलकित होना ,मुख से वचन न निकलना,नेत्र बंद कर लेना , सिर झुकाना आदि अनुभाव हैं। वितर्क ,जड़ता इत्यादि,संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ अद्भुत रस का परिपाक हो रहा है।

19. शांत रस

जहाँ 'निर्वेद' नामक स्थायीभाव विभाव,अनुभाव आदि से पुष्ट होता हुआ रस- दशा को प्राप्त होता है, वहाँ शांत रस माना जाता है। यथा -

अब लौं नसानी अब न नसैहौं।
राम कृपा भव निसा सिरानी जागे फिर न डसैहौं।
X X X
परबस जानि हाँस्यों इन इंद्रिन निज बस है न हँसैहौं॥
मन मधुकर पन करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौं॥

यहाँ तुलसी अपने हृदय की स्थिरता और संसार की व्यर्थता आदि का वर्णन कर रहे हैं। **स्थायी भाव** निर्वेद है। **आलम्बन** आयु का व्यर्थ जाना है। इंद्रियों द्वारा उपहास **उद्दीपन** है। ज्ञान-प्राप्ति,संसार की असारता एवं मन को राम के चरणों में लगाने आदि के कथन **अनुभाव** हैं। धृति,वितर्क,मति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार यहाँ शांत रस का निरुपण है।

20. वात्सल्य रस

जहाँ 'वात्सल्य' नामक स्थायी भाव विभाव,अनुभाव और संचारी भाव से पुष्ट होकर रसत्व को प्राप्त होता है,वहाँ वत्सल रस होता है। इसके संयोग और वियोग दो भेद माने गये हैं। जैसे :-

3. **संयोग वात्सल्य :-** जसोदा हरि पालने झुलावैं
   हलरावै दुलराइ मल्हावैं जोइ सोइ कछु गावै।
   Xx x
   कबहुँ पलक हरि मूँद लेत हैं,कबहुँ अधर फरकावैं।
   सोवत जानि मौन हौ रहि करि करि सैन बतावैं।

X X X

जो सुख सूर अमर मुनि दुर्लभ,सो नँद भामिनि पावैं॥

यहाँ यशोदा का शिशु कृष्ण के प्रति प्रेम वर्णित है। **स्थायी भाव** वात्सल्य है। **आलम्बन** शिशु कृष्ण हैं। **आश्रय** यशोदा हैं। **उद्दीपन** कृष्ण की चेष्टाएँ हैं यथा पलक मूँदना ,अधर फड़काना आदि। हिलाना,दुलार करना,गाना,संकेत करना आदि **अनुभाव** हैं। हर्ष आदि **संचारी भाव** हैं।इस प्रकार यहाँसंयोग वत्सल रस की सफल योजना हुई है।

4. **वियोग वात्सल्य :-** जसोदा बार-बार यौं भाखैं।

है कोउ ब्रज में हितूं हमारौ चलत गुपालहिं राखै ॥

X X X

कमल नयन गुन टेरत-टेरत अधर बदन कुम्हिलानी।

'सूर' कहाँ लगि प्रगटि जनाऊँ दुखित नंद जू की रानी॥

यहाँ कृष्ण -बलराम के मथुरा-गमन पर यशोदा के वियोग-दुख: का वर्णन है। **आलम्बन** कृष्ण का मथुरा गमन है। **आश्रय** यशोदा हैं। श्रीकृष्ण की लीला आदि का स्मरण **उद्दीपन** है। गुण-कथन,अधर-बदन का कुम्हलाना आदि अनुभाव हैं। चिंता ,वितर्क,स्मृति आदि संचारी भाव हैं। इस प्रकार वियोग वात्सल्य की सफल व्यंजना हुई है।

अतिलघूत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. रस की निष्पत्ति किनके संयोग से होती है?

उत्तर :- विभाव,अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

प्रश्न 2. काव्य की आत्मा किसे माना गया है?

उत्तर :- रस को काव्य की आत्मा माना गया है।

प्रश्न 3. अनुभाव किसे कहते हैं?

उत्तर :- आश्रय की चेष्टाओं को अनुभाव कहा जाता है।

प्रश्न 4. किसी की वेशभूषा,वाणी,अंग-विकार या चेष्टाओं को देखकर प्रफुल्लित होने पर किस रस की व्यंजना होती है?

उत्तर :- हास्य रस की व्यंजना होती है।

प्रश्न 5. रोना,छाती पीटना,पछाड़ खाकर गिरना आदि अनुभावों से कौन-सा रस व्यंजित होता है?

उत्तर :- उक्त अनुभावों से 'करुण रस' व्यंजित होता है।

प्रश्न 6. चकित,थकित,विस्फारित दृग से देखाँब्रज नर-नारी ने।

इंद्रमान- मर्दित कर गिरिको धारण किया मुरारी ने।

उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :-रस-अद्भुत,**स्थायी भाव-** आश्चर्य।

प्रश्न 7.काहे री नलिनी तू कुम्हिलानी,तेरे ही नालि सरोवर पानी।

जल में उत्पति जल में बास,जल में नलिनी तोर निवास।
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :-रस – शांत, स्थायी भाव - निर्वेद ।

प्रश्न 8.जसोदा हरि पालने झुलावै।
हलरावै, दुलरई, मल्हावै, जोइ-सोइ कछु गावै।
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर:- रस – वासल्य, स्थायी भाव - वत्सल ।

प्रश्न 9. कंज नयनि मज्जनु किएँ, बैठी ब्यौरति बार।
कच- अँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार॥
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- रस – संयोग श्रृंगार, स्थायी भाव - रति ।

प्रश्न 10. अधीरता देख जगत की आप, शून्य भरता समीर निःश्वास।
डालता पातों पर चुपचाप,ओस के आँसू नीलाकाश ॥

उत्तर :- रस – करूण , स्थायी भाव - शोक ।

प्रश्न 11.पच्छी पर छीने ऐसे परे परछीने वीर, तेरी बरछीने हैं खलन के।
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- रस – वीर रस , स्थायी भाव - उत्साह ।

प्रश्न 12.घोट मोट सिर,भूगोल-सा पेट, चाल में भूचाल, मुख किचन का हो गेट।
हाल में फूट गया हँसईका गुब्बारा, कहने लगे दर्शक दुबार॥
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- रस – हास्य , स्थायी भाव - हास्य ।

प्रश्न 13. भाखे लखन, कुटिल भई भौंहें। रद-पुट फरकत नयन रिसौंहें।
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- रस – रौंद्र , स्थायी भाव - क्रोध ।

प्रश्न 14. घर में लाशें, बाहर लाशें, सड़ती लाशें, चुनती लाशें।
दुर्गंध से घुटती हैं साँसें, इंसान हुआ लाशें, लाशें ॥
उक्त पंक्तियों में निहित रस तथा उसके स्थायी भाव का नामोल्लेख कीजिए।

उत्तर :- रस – वीभत्स , स्थायी भाव - जुगुप्सा ।

16. नौबताखाते में इबादत - यतीन्द्र मिश्र

निम्नलिखित गधांश में से पूछे गए प्रश्नों से उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(अ) सचमुच हैरान करती है काशी पक्का महल जैसे मलाई बरफ गया , संगीत साहित्य और अदब की बहुत सारी परम्पराएं लुप्त हो गईं | एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की शांति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है | काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक दूसरे के पूरक रहे हैं | उसी तरह मुहर्रम ताजिया और होली अबीर , गुलाल की गंगा जमुना संस्कृति भी एक दूसरे के पूरक रहे हैं | अभी जल्दी ही वहुत कुछ इतिहास बन चुका है | अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा | फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में है | काशी आनदंकानन है | सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसे लय और सुर की तमीज सिखानेवाला नायब हीरा रहा है जो हमेशा से दो कौमो को एक होने ब आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा |

1. इस गधांश में किस संगीत वादक का जिक्र है :
   (क) उस्ताद बिस्मिल्ला खान (ख) पंडित जसराज
   (ग) उस्ताद इंशा अल्ला खां (घ) भीमसेन

2. बाबा विश्वनाथ की नगरी मानी जाती है |
   (क) मथुरा (ख) वृन्दावन
   (ग) काशी (घ) द्वारिका
3. गंगा, यमुना संस्कृत का क्या आशय है |
   (क) बेमेल संस्कृति (ख) निज संस्कृति
   (ग) उच्च संस्कृति (घ) मिली-जुली संस्कृति

4. काशी में मरण को कैसा माना गया है ?
   (क) मंगल (ख) अमंगल
   (ग) धनदायक (घ) अपवित्र
5. उस्ताद बिस्मिल्ला खान को किसके समान बताया गया है ?
   (क) सुनहरे क्षितिज के समां (ख) नायाब हीरे के समान
   (ग) चमकती किरण के समान (घ) सुन्दर रोशनी के सामान

उत्तर - 1.(क) 2.(ग) 3.(घ) 4.(ख)

(ब) काशी संस्कृति की पाठशाला है | शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित | काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य विचारधारा है , बड़े रैदास जी हैं , मौजुबुदीन खान हैं इन रसिको से उपकृत होने वाला अपार जनसमूह है |
यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हाँ इनके अपने उत्सव हैं |अपना सेहरा बनाना और अपना नौहा | आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से विश्वनाथ को विशालाक्षी से बिस्मिल्ला खाँ को गंगा}kj से अलग करके नहीं देख सकते |

1. काशी किसकी पाठशाला हैं ?
   (क)संस्कृति की (ख) शिक्षा की
   (ग) विज्ञानी की (घ) राजनीति की
2. शास्त्रो में काशी किस नाम से प्रसिद्द हैं ?
   (क)आनंद कानन (ख) अभ्यारण्य
   (ग) नंदन कानन (घ) वृन्दावन
3. काशी में कितने सालो का इतिहास है ?
   (क) सकड़ों (ख) हजारो
   (ग) अज्ञानी (घ) करोड़ो
4. काशी का जनसमूह कैसा है ?
   (क)रसिको से उपकृत (ख) रसहीन
   (ग) अज्ञानी (घ) नास्तिक
5. बिस्मिल्ला खान को किससे अलग करके नहीं देखा जा सकता हैं ?
   (क)गंगा द्वार से (ख) भक्ति से
   (ग) धर्म से (घ) चैती से

   उत्तर - 1.(क) 2.(क) 3.(ख) 4.(क) 5.(क)

(स) अमीरुद्दीन की उम्र अभी 14 साल है | बिस्मिल्ला खान की उम्र अभी 14 साल है | वही काशी है | वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ विस्मिल्ला खाँको नौबतखाने रियाज के लिए जाना पड़ता है | मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का | वह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता हैं | इस रस्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है | इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल बनाव कभी ठुमरी , कभी अप्पे, कभी दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुंचते रहते हैं | रसूलन बाई और बुलीं बाई जब जाती हैं तब अमीरुद्दीन को ख़ुशी मिलती है | अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खान साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्ही गयिका बहिनों को सुनकर मिली है |

एक प्रकार से उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलन बाई और बतुलन बाई ने उकेरी है |

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खान के बचपन का क्या नाम था ?
   (क) जलालुद्दीन (ख) अमीरुद्दीन
   (ग) अजहरुद्दीन (घ) सोहारबुद्दीन

2. उस्ताब बिस्मिल्ला खान किस मंदिर में रियाज के लिए जाते थे ?
   (क) बालाजी का मंदिर (ख) भैरवजी का मंदिर
   (ग) वैश्नवानी का मंदिर (घ) सूर्य का मंदिर

3. बालाजी का मंदिर जाने का रास्ता किसके यहाँ से होकर गुजरता था ?
   (क) बतूलन बाई एवं झूलन बाई (ख) रसूलन बाई और बतूलन बाई
   (ग) उतरन बाई एवं जोहराबाई (घ) सूलनबाई ई और बतूलन बाई

4. रसूलन बाई एवं बतूलन बाई कौन थी ?
   (क) फिल्मी नायिका (ख) नृत्यांगना
   (ग) गायिका (घ) साध्वी

5. अमीरुद्दीन अपने जीवन में संगत का प्रथम प्रेरक किसको मानते हैं ?
   (क) उस्ताद अब्दुल अहमद को (ख) रसूलन बाई एवं बतूलन बाई
   (ख) जोहराबाई को (घ) अफ्लाबाई एवं जफलाबाई को

उत्तर - 1. (ख) 2. (क) 3.(ख) 4.(ग) 5.(ख)

(द) शहनाई के इसी मंगल ध्वनि के नायक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर मांग रहे थे | सच्चे सुर की नेमत | अस्सी बरस की पांचो वक्तो बालगी नमाज इसी सुर को जाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती थी | लाखो सजदें इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुद के आगे झुकाते थे | वे नमाज के बाज सजदे में गिद्गिद्जते थे | मेरे मालिक सुर बख्श दे | सुर में वह तासीर पैदा कर की आँखों से सच्चे मोती ती तरह अनगढ़ आंसू निकल आए|

1. शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक थे :
   (क) सादिक हुसैन (ख) अलीबख्श
   (ग) शमसुद्दीन (घ) बिस्मिल्ला खान

2. पाँचों वक्त की नमाज किसे पाने में खर्च हो जाती थी ?

(क) तान (ख) सुर

(ख) ध्वनि (घ) आवाज

3. नायक शहनाईवादक किसके सामने झुककर सच्चे सुर की इबादत करते थे ?

(क) पीर (ख) खुदा

(ग) उस्ताद (घ) अब्बा

4. बिस्मिल्ला खाँ नमाज के बक्त सजदे में गिड़ूगिडाते हुए क्या मानते थे ?

(क) मिठास भरी आवाज (ख) सुर

(ग) सोज (घ) तान

5. सुरों के प्रभाव से बिस्मिल्ला खाँ आँखों से कैसे आंसू निकलते की प्रार्थना करते थे ?

(क) अनगढ़ (ख) मोटे मोटे

(ग) मोती की तरह (घ) वर्षा की बूंदों की तरह

उत्तर 1.(घ) 2.(ख) 3.(ख) 4.(ख) 5.(ग)

लघु उत्तरीय प्रश्न:

1. **शहनाई और डुमरांव एक दूसरो के लिए उपयोगी कैसे हैं ?**

उत्तर - शहनाई बजने के लिए रीड का प्रयोग किया जाता हैं | रीड 'नरकट " नामक एक घास से बनाई जाती है | जो मुख्य रूप से सोंन नदी के किनारे पाई जाती है | इसी के कारण शहनाई जैसे बाजा बजता है |

2. **संगीत में सम का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए की बिस्मिल्ला खाँ को सम की समझ कब और कैसे आ गई थी ?**

उत्तर - संगीत में सम का आशय है संगीत का वह स्थान जहाँ लय की समाप्ति और ताल का आरम्भ होता हैं | विस्मिल्ला खाँ में सम की समझ बचपन में ही आ गई थी | जब वह अपने मामा अलीबख्श खाँ को शहनाई बजाते हुए कम पर आते सुनता तो धड़ से पत्थर जमीन पर मारकर दाद देता हैं |

3. **कशी को संस्कृति की पाठशाला क्यों कहा जाता हैं ?**

उत्तर - काशी संस्कृति की पाठशाला है | यहाँ भारतीय शास्त्रों का ज्ञान है | कला शिरोमणि यहाँ रहते हैं | यह हनुमान और विश्वनाथ की नगरी है | यहाँ का इतिहास बहुत पुराना है , यहाँ प्रकांड ज्ञान धर्म गुरु और कला प्रेमियो का निवास हैं |

4. **बिस्मिल्ला खान दो कौमो में भाईचारे की प्रेरणा कैसे देते है ?**

उत्तर - बिस्मिल्ला खान जाति से मुसलमान थे और धर्म की दृष्टि से इस्लाम धर्म को भजने वाले पांच वक्त नमाज पढ़ते वाले सच्चे मुसलमान | मुहर्रम से उनका विशेष जुड़ाव था | वे बिना किसी भेदभाव के हिन्दू मुसलमान , दोनों के उत्सवो में मंगल ध्वनि बजाते थे | उनके मन में बालाजी के प्रति विशेष श्रद्धा थी | वे काशी के बाहर होने पर भी विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते और शहनाई बजाते थे | इस प्रकार वे दो कौमों को एक होने और आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते हैं |

5. **बिस्मिल्ला खान से व्यक्तित्व की कौन कौन सी विशेषताओ ने आपकों प्रभावित किया ?**

उत्तर -हमें बिस्मिल्ला खान के व्यक्तित्व की सादगी, फकीरी स्वभाव स्वाभिमान तथा कला के प्रति उनकी अनन्य भक्ति और समर्पण ने प्रभावित किया है | वे अपने जीवन में अपने मजहब के प्रति अत्यधिक समर्पित होते हुए भी किसी धर्म और जाति की संकीर्णताओ में नहीं बँधे | सच्चे मुसलमान होते हुए भी काशी के बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति श्रद्दा रखना उनका व्यक्तित्व की अन्यतम विशेषता हैं | भारत रत्न जैसी सम्माननीय उपाधि मिलने के बाद भी उनके आगन्तुको से मिलते थे | यह उनके व्यक्तित्व की सादगी और फकीराना स्वभाव का ही परिचय है|

6. **काशी में सब सुछ एकाकार कैसे हो गया हैं ?**

उत्तर - काशी में संगीत भक्ति से, भक्ति कलाकार से, कजरी चैती से, विश्वनाथ विशाल्क्षी से और बिस्मिल्ला खान गंगाद्वार से मिलकर एक हो गए हैं | उन्हें अलग अलग करके देखना संभव नहीं है |

7. **शहनाई की दुनिया में डुमराव को क्यों किया जाता हैं ?**

उत्तर - डुमराव गाँव की सोन नदी के किनारों पर पी जानेवाली बनावट नरकट घास के शहनाई की रीड बनती हैं | प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराव गाँव ही है | बिस्मिल्ला खान के परदादा उस्ताद सलार हुसैन खान के ही निवासी थे | इन्ही कारणों से शहनाई की दुनियां में डुमराव को याद किया जाता है |

8. **सुषिर वाघों से क्या अभिप्राय है ?**

उत्तर - सुषिर वाधो से अभिप्राय है - फूंककर बजे जाने वाले वाद्य | जैसे -शाहनी ,बिन बाँसुरी आदि|

9. **शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि क्यों दी गई होगी ?**

उत्तर - शहनाई को सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि देने के कारण निम्नलिखित कारणों से कहा गया है -

अपना सानी न रखने के कारण |

10 बिस्मिल्ला खान को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया हैं ?

उत्तर - बिस्मिल्ला खान को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक निम्नलिखित कारणों से कहा गया है -

अपना सानी न रखने के कारण |

मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करवाने वाले होने के कारण |

11. बिस्मिल्ला खान की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर - ईश्वर में आस्था कला प्रेमी भावुक

सदा जीवन उच्च विचार वाले सगीत प्रेमी लगनशील, मानव प्रेमी

7.कन्यादान-ऋतुराज

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. माँ ने कहा पानी मे झांककर
   अपने चेहरे पर मत रीझना
   अपने चेहरे पर मत रीझना |आग रोटियाँ सेकने के लिए है
   जलने के लिए नहीं
   वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमो की तरह
   बंधन है स्त्री - जीवन के
   माँ ने कहा लड़की होना
   पर लड़की जैसे दिखाई मत देना |

1. लड़की होने से क्या आशय हैं ?

उत्तर - लड़की होने से आशय है लड़की जैसे गुणों का होना मन से सरल, भोली, समर्पणशील होना |

2. माँ ने यह क्यों कहा कि " आग रोटियाँ सेकने के लिए हैं जलने के लिए नहीं ?

उत्तर - माँ ने यह कह क्योंकि उसके मन में वह पुरानी घटनाएँ मौजूद रही होंगी, जिनमे घर की बहुओ को जलाकर मार डाला गया था | इसलिए वह अपनी वह अपनी बेटी को समझा दे रही है |

3. लड़की जैसी दिखाई मत देना का क्या आशय हैं ?

उत्तर - लड़की जैसी दिखाई मत देना का आशय हैं कि अपने ऊपर किए जाने वाले अत्याचार को मत सहना | अपना शोषण मत होने देना |

4. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए :

उत्तर - भाषा खड़ी बोली हिन्दी है तथा तत्सम शब्दावली हैं |

2. कितना प्रमाणिक था उसका दुख
   लडकी को दान में देते वक्त
   जैसे वही उसकी अंतिम पूंजी हो
   लड़की अभी सयानी नहीं थी
   अभी इतनी भोली सरल थी
   कि उसे सुख का आभास तो होता था
   लेकिन दुःख बांचना नहीं आता था
   पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की कुछ

तुर्कों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

1. लड़की अभी सयानी नहीं थी से क्या तात्पर्य हैं?
उत्तर- कवि कहना चाहता है कि लड़की अभी भोली तथा सरल है | उसे दुनिया के छल प्रपंचो की जानकारी नहीं हैं |
2. लड़की को दुःख बाँचना नहीं आता था - का क्या तात्पर्य है ?
उत्तर - लड़की को दुःख बांचना नहीं आता था | तात्पर्य है कि लड़की जीवन की आनेवाली जिम्मेदारियों और कष्टों से भली भांति परिचित नहीं थी |
3. पाठिका थी वह धुँधंला प्रकाश से कवि क्या कहना चाहता है ?
उत्तर - कवि कहना चाहता है कि उसे उसके आगामी जीवन का एक धुँधंला सा अहसास था कि उसका जीवन अब कैसा होने वाला है किन्तु बह सभी बातो से परिचित नही थी | उसे केवल आने वाले सुख का अहसास था |

लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. माँ ने बेटी को क्या क्या सीख दी ?

उत्तर -माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीख दी -
कभी अपनी सुन्दरता और प्रशंसा पर मत रीझना
गहनों और कपड़ों के बदले अपनी आजदी मत खोना
त्यागी , सरल भोली , स्नेही होना पर अत्याचार न सहना |

2. माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना ?
उत्तर -माँ चाहती थी कि उसकी बेटी लड़की होने पर बहू होने का हर फर्ज निभाएँ , पर साथ- साथ यह थी चाहती थी कि उसकी बेटी कोई अत्याचार न सहे और कोई उसका फायदा न उठाए | इसलिए उसने कहा कि लड़की पर जैसे मत दिखाई देना |
3. कुछ तुको और कुछ लयबद्ध पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर इसका तात्पर्य है कि लयबद्ध बेटी अभी केवल सहज भाव को ही समझ पाती है | स्नेह में पली बढ़ी बेटी को अभी दुखों को सहन करने की सामर्थ्य नहीं है |

4. कन्यादान देते वक्त माँ के दुःख को प्रामाणिक क्यों कहा गया है ?

उत्तर - कन्यादान देते वाक्य माँ के सुख को प्रामाणिक कहा गया है क्योंकि एक नारी होने के नाते अपने घर छोड़ने का दुःख वह सबसे अच्छी तरह जानती हैं | वह जानती है कि उसकी लड़की के जीवन में कैसे -कैसे मोड़ आने वाले हैं |

5. वैवाहिक जीवन की त्रासदी क्या है ? नव विवाहित को ऐसा कब लगने लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओ का बंधन मात्र है ?

उत्तर - विवाह से पूर्व लड़की अनेक कल्पनाओं को संजोए रहती है | वर्त्तमान के अभावो में रहकर वह अपेक्षा करती रहती है कि विवाहोपरांत जीवन में परिवर्तन आएगा | अपनी सभी अपेक्षाओं की पूर्ति होगी | यह धैर्य बनाए रखती है और माँ के घर अभाओं में रह रही बेटी विवाह के बाद सुख की ऊँची - ऊँची कल्पना की कामना करते हैं | विवाह के बाद उसकी कामनाओ पर पानी फिरता दिखाई देता हैं तो उसे जीवन त्रासदियो से भरा प्रतीत होने लगता हैं | यही उसके वैवाहिक जीवन की त्रासदी है | उसकी अपेक्षाओं के अनुसार वैवाहिक जीवन नहीं होता है और पारिवारिक, सामाजिक मर्यादाओ के बंधन में इतना जकड़ दिया जाता है कि पितृगृह में स्नेह से पल रही लड़की घुटन का अनुभव करने लगती है | उस समय ऐसा लगता हैं कि सम्पूर्ण परिवार की मर्यादा नव विवाहिता की मर्यादा पालन में है | परिवार का प्रत्येक जन उसे ही सीख देती दिखाई देती है | तब लगता है कि वैवाहिक जीवन मर्यादाओ का बंधन मात्र है |

10. संगतकार- मंगलेश डबराल

काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्न के उत्तर लिखिए -

1. गायक जब अंतरे की जटिल में तानो के जंगल में
   खो चुका होता हैं
   या अपने ही सरगम को लांघकर
   चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूता हुआ समाज
जैसे उसे यद् दिलाता हो उसका बचपन
जब वह नौसिखिया था |

1. पद में अनहद का अर्थ स्पष्ट कीजिए |

उत्तर - अनहद का अर्थ हैसीमा से परे असीम या दिव्य लोक जहाँ स्वगिर्क आनंद की अनुभूति हो |

.2. अंतरे को तानो को जंगल क्यों कहा गया है ?

उत्तर- अंतरे की तानो को जंगल कहा गया है क्योंकि गाते वक्त गायक अंतरे में ही उलझकर रह जाता है और स्थायी को भूल जाता है |

3. स्थायी का अर्थ होता है ?

उत्तर - स्थायी का अर्थ है किसी भी गाने की मुख्य पंक्ति या टेक जो गीत को गाते वक्त बीच में दोहराई जाती है |

जाती है |

4. संगतकार क्या कार्य करता हैं ?

उत्तर - जब मुख्य गायक अपने गीत में ही डूब जाता है जब संगतकार उसे वापस मूल स्वर में ले आता है और उसे भटकने नहीं देता |

2. कभी - कभी वह यो ही दे देता है उसका साथ
 यह बताने के लिए से वह अकेला नहीं है
 और यह की फिर से गया जा सकता है
 जाया जा चुका राज
 और उसकी आवाज में जो एक हिचक साफ सुनाई देती है
 या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है उसे विफलता नहीं
 उसकी मनुष्यता समझी जानी चाहिए |

1. संगतकार को अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की कोशिश को उसकी मनुष्यता क्यों समझा जाना चाहिए |

उत्तर- क्योंकि संगतकार स्वयं को पीछे रखकर तथा गुमनाम रहकर मुख्य गायक को आगे बढ़ने का काम कर रहा है | जितनी भी प्रशंसा होगी वह मुख्य गायक को मिलेगी और संगतकार को कोई जानेगा तक नहीं | फिर भी वह अपने स्वर को नीचा रखता है |

2. संगतकार मुख्य गायक का साथ क्यों देता है ?

उत्तर- संगतकार मुख्य गायक को भटकने से बचने के लिए तथा उसका उत्साह बढ़ने के लिए उसका साथ देता है |

3. पद की भाषा पर टिप्पणी कीजिए |

उत्तर - भाषा सरल खड़ी बोली हिन्दी है |

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संगतकार के माध्यम से कवि किन प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि सहायक कलाकारों के महत्व की ओर संकेत कर रहा है | ये सहायक कलाकार खुद को रखकर मुख्य कलाकार को आगे बढ़ने में योगदान देते हैं | यह बात जीवन के हर क्षेत्र में लागू होता है |

2. संगतकार की आवाज में एक हिचक क्यों सुनाई देती है ?

उत्तर- संगतकार की आबाज में एक हिचक साफ सुनाई देती हैं क्योंकि वह जान बूझकर अपनी आबाज को मुख्य गायक से ऊपर नहीं उठाने देता क्योंकि उसका काम मुख्य कलाकार को सहारा प्रदान करना है | अपनी कला का प्रदर्शन करना नहीं |

3.सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं ?

उत्तर - सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान लड़खड़ाते ब्यक्ति को उसके सहयोगी विषम परिस्थिति में उसके साथ रहने का विश्वास देकर उसका आत्मबल बनाए रखने का भरसक प्रयास करते हैं |

4.संगतकार कविता में कवि क्या सन्देश देना चाहता हैं ?

उत्तर- कवि की संगतकार के प्रति सहानुभूति हैं | उसकी दृष्टि में संगतकार मुख्या गायक के समान ही सराहनीय है | मुख्य गायक की सफलता में संगतकार का श्रेय कम करके नहीं देखना चाहिये | यदपि मुख्य गायक के बिना संगतकार का अस्तित्व नहीं है| किन्तु मुख्य गायक की सफलता अधिकांशत: संगतकार के सफल सहयोग पर निर्भर है | मुख्य गायक के निराश होने पर विश्वास लड़खड़ाने पर स्वर बिगड़ने पर, उसके तारसप्तक में चलें जाने पर संगतकार ही उसे संभालता है | संगतकार के बिना मुख्य गायक की सफलता संदिग्ध रही है | अत: मुख्य गायक की सफलता में दोनों ही समान रूप से सम्माननीय और प्रशंसनीय है|

5 . दुलारी और टुन्नू से प्रेम पीछे उनका कलाकार मन और उनकी कला थी | यह प्रेम दुलारी को देश प्रेम तक कैसे पहुँचते हैं ?

उत्तर- टुन्नू 16-17 वर्ष का युवक था | तो दुलारी ढलते यौवन की प्रौढ़ा थी | टुन्नू घंटे आकर दुलारी के पास बैठता और उसकी बातें सुनता | वह केवल दुलारी की कला का प्रेमी था | उसे दुलारी की आयु राग या रूप से कुछ लेना देना न था | दुलारी भी टुन्नू की कला को पहचान कर उसका मान करने लगी थी | यह परस्पर सम्मान का भाव ही प्रेम में बदल गया | कहने को तो दुलारी ने होली पर गाँधी आश्रम से धोती लाने बाले टुन्नू को फटकार कर भगा दिया लेकिन टुन्नू के जाने के बाद उसे टुन्नू का बदला वेश उसका कुरता और टोपी का ध्यान आया तो उसे समझने में देर न लगी कि टुन्नू स्वतंत्र आन्दोलन में शामिल हो गया है |

3. एही ठैयां झुलनी हेरानी हो राम ! का प्रतीकार्थ समझइए |

उत्तर- एही ठैयां झुलनी हेरानी हो राम | लोकभाषा में रचित एक गीत के मुखड़े का शब्दिक भाव हैं इसी स्थान पर मेरी नाक् की लौंग खो गई है | इसका प्रतीकार्थ बड़ा गहरा है | नाक् में पहना जाने वाला लौंग सुहाग का प्रतीक है | दुलारी एक गौनहारिन है | वह किसके नाम का लौंग अपनी नाक् में पहने | लेकिन मन रूपी नाक् में उसने टुन्नू के नाम का लौंग जहाँ वह गा रही हैं | वही टुन्नू की हत्या की गई है | अतः दुलारी के कहने का भाव है - यही वह जगह है जहाँ वही मेरा सुहाग लुट गया है |

4. एही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा कहानी के शीषर्क के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- एही ठैयां झुलनी हेरानी हो रामा, कहानी के शीर्षक का सामान्य अर्थ है - हे राम इसी स्थान पर मेरी झुलनी खो गई है | झुलनी सुहाग का प्रतीक है | कहानी की नायिका दुलारी टुन्नू को अपना सुहाग मानती है किन्तु टुन्नू को देश प्रेमजनित टुन्नू के कार्य में सहभागी होने पर अली सगीर से हाथो शहीद होना पड़ता है |

5. स्वाधीनता संग्राम के सेनानी विदेशी वस्त्रों की होली जला कर क्या सिद्द करना चाहते थे ?

उत्तर -स्वाधीनता संग्राम के सेनानी विदेशी सरकार के प्रति विद्रोह का प्रदर्शन करना चाहते थे | वे विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहते थे | अंग्रेजी शासकों के अत्याचार का दमन करना चाहते थे |

6. टुन्नू के द्वारा लिये गए उपहार को दुलारी ने क्यों ठुकरा दिया ?

उत्तर- टुन्नू अभी उम्र में बहुत छोटा था |वह वह समाज की ऊँच नीच नही समझ सकता था | दुलारी ने साड़ी को उपेक्षा से फ़ेंक दिया और टुन्नू को खूब खरी खोटी सुनाई | वह नहीं चाहते थी की टुन्नू अपने प्रेम प्रयोग को आगे बढ़ाए क्योंकि इससे उसकी बदनामी होगी |

7.दुलारी का चरित्र चित्रण कीजिए |

उत्तर- दुलारी का चरित्र चित्रण कुशल गायिका निर्भीक व् स्वाभिमानी , देशप्रेमी भावुक हृदय सच्ची प्रेमिका |

(पूरक पाठ्य पुस्तक)
मैं क्यों लिखता हूँ ? - अज्ञेय

1. लेखक क्यों लिखता है ?
उत्तर- लेखक को लगता है कि लिखकर ही वह अपने मन की स्थिति तथा विवशता को जान पाता है जिस कारण से लिखता है उससे मुक्त होने का सुगम मार्ग भी लिखना ही है |

2. सभी लेखक कृतिकार **क्यों नहीं होते ?**
उत्तर- सभी लेखक कृतिकार नहीं हो सकते | मात्र अपनी भावनाओ को प्रकट करने से ही कोई अभिव्यकित कृति नहीं हो जाती | कृतिकार के सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने पर ही अभिव्यक्ति कृति वन जाती है |

3. अनुभुती के स्तर की विवशता की क्या विशेषता होती हैं ?
उत्तर - अनुभूति के स्तर की विवशता तार्किकता पर निर्भर होती है | अनुभव जो घटित होता है और अनुभूति संवेदना और कल्पना के सहारे उस सत्य से जुड़कर आत्मसात कर लेती हैं | अनुभूति ही लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करती हैं |

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. हिरोशिमा की घटना विज्ञानं का भयानकतम दुरूपयोग है आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरूपयोग कहाँ -कहाँ हुआ हैं और किस तरह से हो रहा हैं ?
उत्तर - आजकल विज्ञानं का दुरूपयोग अनेक जानलेवा कामो के लिए किया जा रहा है | आज आतंकवादी संसार भर में मनचाहे विस्फोट कर रहे हैं | कहीं अमरीकी टावरों को गिराया जा रहा है | कहीं मुंबई बम विस्फोट किए जा रहे हैं | कही गाड़ियों में आग लगाई जा रही है | कही शक्तिशाली देश दूसरे देशों को दबाने के लिए उस पर आक्रमण कर रहे हैं | अमरीका ने इराक पर आक्रमण किया तथा वहां के जनजीवन को तहस नहस कर डाला | विज्ञान के दुरूपयोग से चिकित्सक बच्चों का गर्भ में भ्रूण परीक्षण कर रहे हैं | इससे जनसँख्या का संतुलन बिगड़ रहा है | प्रदूषण बढ़ रहा हैं |

2. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अन्तः व बाह्य दोनों दबावों का परिणाम है | यह आप कैसे कह सकते हैं ?
उत्तर -हिरोशिमा पर लिखी लेखक की कविता को आंतरिक दबाब का परिणाम कह सकते है इसके लिए उन्हें न तो किसी संपादक ने आग्रह किया न किसी प्रकाशक ने तकाजा किया | न ही उन्होंने इसे किसी आर्थिक विवशता के लिए लिखा | इसे उन्होंने शुद्ध रूप से मन की अनुभूति से प्रेरित होकर लिखाँ| जब पत्थर पर पिघले मानव को देखकर उनके मन में

अनुभूति जाग गई तो कविता स्वयं बन गई इसलिए हम ऐसी कविता को आंतरिक दवाव का परिणाम कह सकते हैं | किसी बाहरी दबाब का नही |

3.लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा भीतरी अनुभूति उनके लेखन में अधिक मदद करती हैं क्यों ?

उत्तर- लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखक भीतरी विवशता से पैदा होता है | यह विवशता मन से अन्दर से उपजी अनुभूति से जगती है, बाहर की घटनाओ को देखकर नही जागते हैं | जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और इसमें अभिब्यक्ति होने की पीड़ा नहीं अकुलाती तब तक बह कुछ लिख नहीं पाता |

4.क्या बाह्य दबाब केवल लेखन से जुड़े रचनाकारों को ही प्रभावित करते हैं या अन्य दूसरे क्षेत्र से लोगो को भी प्रभावित करते हैं , क्यों ?

उत्तर -बाह्य दबाबो का प्रभाव प्रत्येक प्रकार के कलाकार पर समान रूप से होता है | हर प्रकार के कलाकार समाज में या मूर्तिकार यदि उसे एक जीत मिल जाती हैं तो वह अपना क्षेत्र नहीं छोड़ पता | उसे प्रशंसकों दर्शको खरीददारों के दबाव के कारण अपना रचना कार्य करते रहना पड़ता है | आर्थिक दबाब भी प्रत्येक क्षेत्र के कलाकारो को प्रभावित करते हैं |

5. हिरोशिमा के विस्फोट में भोक्ता किस पदार्थ से प्रभावित हुए ?

उत्तर -रेडियम पदार्थ से |

6. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरूपयोग है | आपकी दृष्टि से विज्ञान का दुरूपयोग कहाँ कहाँ और किस तरह हो रहा हो ?

उत्तर-विज्ञान का दुरूपयोग-

चिकित्सा के क्षेत्र में अल्ट्रासाउंड का दुरूपयोग |

पैदावार बढ़ने के लिए फसलो पर कीटनाशक तथा टीकों का प्रयोग |

ग्लोबल वार्मिंग |कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कर फल व् सब्जियों को दूषित करना |

पत्र लेखन

औपचारिक पत्र

प्रश्न - आपके नगर की एक प्रसिद्ध डेयरी में दूध तथा दूध से निर्मित पदार्थो में मिलावट की जाती है | नगर के स्वास्थ्य अथिकारी को पत्र द्वारा जानकारी देते हुए उचित कार्यवाही के लिए अनुरोध कीजिए |

सेवा में,
स्वास्थ्य अधिकारी ,
दिल्ली नगर निगम
रजौरी गार्डेन , नई दिल्ली |
विषय : दुध एवं दुग्ध पदार्थो में मिलावट सम्बन्धी जानकारी विषयक |

महोदय ,

मै आपका ध्यान रघुवर क्षेत्र में चल रही गुप्त डेयरी द्वारा मिलावट के अनैतिक धंधे की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ | इस डेयरी में दूध वितरित होता है तथा दूध से बने पदार्थ पनीर , दही , खोया आदि बनाकर बेचे जाते हैं | इन पदार्थो में भारी मिलावट की जाती हैं | यह डेयरी लोगो के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ कर रही है | आपसे विनम्र अनुरोध हैं कि इस डेयरी पर आवश्यक क़ानूनी कार्यवाही की जाए, जिससे यहाँ मिलावट पर रोक लगाई जा सके |

धन्यवाद
भवदीय
रमेश
संयोजक,
जन चेतना मंच , रघुवीर नागर ,
नई दिल्ली |
दिनांक ....

आवेदन पत्र

एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली में लिपिक पदों के रिक्त स्थनों को भरने के लिए रोजगार समाचार में विज्ञापन आया है उसका हवाला देते हुए सचिव के नाम आवेदन पत्र लिखिए |

सेवा में,
सचिव महोदय ,
एन.सी.ई.आर.टी
नई दिल्ली |

विषय - लिपिक पद की नियुक्ति हेतु आवेदन पत्र |
महोदय,
निवेदन है की साप्ताहिक पत्र रोजगार समाचार दिनांक 21/11/88 के विज्ञापन के अनुसार लिपिक पद हेतु आवेदन पत्र प्रेषित हैं |

नाम : शशांक शर्मा
पिता का नाम : श्री वि, के , शर्मा
जन्म तिथि : बी -365 , प्रेम नगर

शैक्षणिक योग्यता:

कक्षा	विद्यालय	बोर्ड	उतीर्ण	प्राप्तांक	विषय
10^{TH}	रा.स.सही.उ.	सी.बी.एस.ई	2001	305/500	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी
12^{TH}	सी.बी.एस.ई	सी.बी.	2003	295/500	हिन्दी, गणित, अंग्रेजी

विशेष:

1. मुझे टंकण में विशेष कुशलता प्राप्त हैं
2. प्रकाशन विभाग में कार्य करने का लगभग दस माह का अनुभव प्राप्त है जिसे में संलग्न कर रहा हूँ |

अतः अपेक्षा करता हूँ कि साक्षत्कार हेतु अवसर प्रदान करने कि कृपा करें |
सधन्यवाद
भवदीय

शशांक शर्मा

दिनांक 18/11/20

1. कक्षा दस का प्रमाण पत्र
2. कक्षा बारह का प्रमाण पत्र
3. अनुभव प्रमाण पत्र
4. चरित्र प्रमाण पत्र

संपादक को पत्र

प्रश्न - किसी प्रख्यात समाचार पत्र के संपादक के नाम पत्र लिखकर रेल आरक्षण व्यवस्था में हुए सुधार की प्रशंसा कीजिए |

उत्तर-

संपादक,
नवभारत टाइम्स
नई दिल्ली
दिनांक ....

विषय : रेल आरक्षण की नई व्यवस्थ

महोदय,

मैं आपके लोकप्रिय दैनिक समाचार पत्र के माध्यम से रेल आरक्षण में आए सुधार की प्रशंसा करना चाहता हूँ ताकि इसका लाभ सभी यात्री उठा सकें |

रेलवे ने ई-टिकटिंग व्यवस्था लागू कर घर बैठे कंप्यूटर पर रेल टिकटों का आरक्षण करना आरम्भ कर दिया है | इससे आरक्षण कार्यलय जाने और लम्बी लाइनों के झंझट से राहत मिली है तथा काला बाजारी को भी विराम मिलेगा |

धन्यबाद सहित |
भवदीय
अभय सिंह
संयोजक , साहिबाबाद|

अनौपचारिक पत्र

प्रश्न - छात्रावास में रहने वाले छोटे भाई को एक पत्र लिखिए जिसमे योग एवं प्राणायाम का महत्व बताया गया हो |

ए-32//6 , नविन नगर,
दिल्ली |

दिनांक ....

प्रिय अनुज,
शुभ आशीर्वाद |
तुम्हारा पत्र मिला | पत्र से प्रतीत होता ही छात्रवास में रहकर तुम कुछ अस्वस्थ से रहने लगे हो | इसका उपाय यह है कि तुम प्रतिदिन योग और प्राणायाम का अभ्यास करो | योग से शरीर और मन दोनो स्वस्थ रहते हैं | प्राणायाम प्राणवायु को सुचारू रूप से पूरे शरीर में संचारित करता है | तुम टी.वी पर बाबा रामदेव का योग कार्यक्रम देखकर इस क्रिया को प्राय: 5-6 बजे के समय में किया करो, जिससे तुम्हारा स्वस्थय अच्छा रहेगा और तुम इसे अपने जीवन का दैनिक हिस्सा बनालो |
मैं आशा करता हूँ कि तुम पूर्णतः स्वस्थ हो जाओगे |

तुम्हारा शुभ चिन्तक
रमेश वर्मा

निबंध –लेखन

संकेत बिंदुओं पर आधारित किसी एक विषय पर लगभग200-250 शब्दों में निबंध लेखन |

1. मेरे जीवन का लक्ष्य

   विचार बिंदु :

   ⇨ **लक्ष्य की आवश्यकता**

   ⇨ **मेरे जीवन का लक्ष्य**

   ⇨ **प्रेरणा का श्रोत**

   ⇨ **सेवा भाव**

   ⇨ **लक्ष्य प्राप्ति की तैयारी**

2. **राष्ट्रीय एकता**

   विचार बिंदु :

   ⇨ **भारत में विभिन्नता**

   ⇨ **अनेकता में एकता**

   ⇨ **राष्ट्रीय एकता के बाधक तत्त्व**

   ⇨ **समाधान**

3. **जीवन में कंप्यूटर की उपयोगिता**

   विचार बिंदु :-

   ⇨ वर्तमान युग - कम्प्यूटर युग

   ⇨ कम्प्यूटर की उपयोगिता

   ⇨ स्वचालित गणना प्रणाली

   ⇨ कार्यालय तथा इन्टरनेट में सहायक

   ⇨ नवीनतम उपकरणों में उपयोगिता

4. **विज्ञान :- वरदान या अभिशाप**

विचार बिंदु :-

- ⇨ **विज्ञान के दो रूप**
- ⇨ **विज्ञान वरदान के रूप में**
- ⇨ **विज्ञान अभिशाप के रूप में **
- ⇨ **निष्कर्ष**

5. **वन रहेंगे - हम रहेंगे**

विचार बिंदु :-

- ⇨ **प्रकृति जीवनदायिनी**
- ⇨ **वनों का महत्व**
- ⇨ **जल- संतुलन में सहायक**
- ⇨ **प्रदूषण पर नियंत्रण**
- ⇨ **जीवों का संरक्षण**
- ⇨ **संरक्षण की आवश्कता**

6. **आतंकवाद**

विचार बिन्दु:-

- ⇨ **भारत में आतंकवाद**
- ⇨ **अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद**
- ⇨ **आतंकवाद फैलने के कारण**
- ⇨ **समाधान**

सार लेखन

सार लेखन क्या है ?

'सार' शब्द का अर्थ है - तत्व या निचोड़ | अर्थात किसी गधांश को इस प्रकार संक्षेप में लिखना , जिससे कि उसका मूल भाव या मूल विचार छूटने न पाए तथा कम महत्वपूर्ण अंश को छोड़ दिया जाए |

अच्छा सार - लेखन क्या है ?

सार लेखन करते समय निम्नलिखित बातों का धयान रखना चहिए-

1. दिए गए गधांश को सवधानीपूर्वक पढना चाहिए ताकि उसके भाव समझ में आ गाए |

2. जो अंश वाक्यांश अथवा महत्वपूर्ण उन्हें रेखांकित कर लेना चाहिए लगे उन्हें रेखांकित कर लेना चाहिए |

3.सार लेखन करते समय गधांश मे आए मुहावरे, सूक्तियो और कहावतो को छोड़ देना चाहिए |

4. सार लेखन में पुनरुक्ति नही करनी चाहिए |

1. **मूल गद्यांश**

राजनीति की अपेक्षा धर्म और संस्कृति मनुष्य के ह्रदय के अधिक निकट हैं| यदपि राजनीति का संबंध भौतिक सुख सुविधाओ से है फिर भी जनसाधारण जितना धर्म से प्रभावित होता है , उतना राजनीति से नहीं | हमारे भारतीय धर्मो में भेद होते हुए भी उनमे में सांस्कृतिक एकता है , जो उनके अविरोध की परिचायक हैं | यही त्याग एवं तप और मध्य मार्ग की गरिमामयी भावना हिन्दू नौद्दा , जैन और सिख संप्रदायों ने स्वीकार किया |कलयुगो काले प्रथम चरणों बौद्धवतार कहकर प्रत्येक धार्मिक संकल्प में हमें उनका स्मरण करना चाहिए

<u>धर्म और संस्कृति</u>

राजनीति का संबंध जीवन व सुख सुविधाओं से पूर्ण होने के बाबजूद सामान्य जन धर्म से अधिक प्रभावित होता हैं | भारत में अनेक धर्म है, पर सबकी आत्मा त्याग तप एवं मध्यम मार्ग है | बुद्ध को तो भगवान का अवतार मानकर पूजा जाता हैं |

2. मूल गद्यांश

साहित्य के विस्तार में रूचि का परिष्कार है | ये तो प्रत्येक व्यक्ति की रूचि मान्यताओ पर निर्भर हैं, जिसमे उसके संस्कार और भाव कार्यशील होते हैं किन्तु जो रूचि देशकाल की सीमाओ से मुक्त हो जाती हैं और जिससे मानव अपने उदात्त रूप का निर्धारण करना है, वही रूचि साहित्य को स्वस्थ बनाती है |इस रूचि में कला का निवास है, वह सौंदर्य प्रेरित हैं | अन्तः जिस अनुपात में रूचि अपने समक्ष सौंदर्य का मापदंड निर्धारित कराती हैं , उस अनुपात में वह ग्राह्य होती है |

रूचि और साहित्य

मान्यता संस्कार और भाव रूचि के मूल में होते हैं | सार्वभौम उदार रूचि ही साहित्य का निर्माण करते हैं | सौन्दर्य प्रेरित रूचि में कला का निवास होता है | आत्मा परिष्कार करने वाली रूचि ही साहित्य को व्यापकता प्रदान करती है |

1. आदर्श-प्रश्न-पत्र हल सहित

संकलित परीक्षा -2, सत्र- 2015-16

HINDI(course –A)

(पाठ्यक्रम-'अ')

कक्षा- दसवीं **विषय – हिंदी**

निर्धारित समय - 3 घंटे **अधिकतम अंक -90**

निर्देश :- (i) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं– क,ख,ग,और घ।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नोंके उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथा संभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए :|

खंड-'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिये सही विकल्प चुनकर लिखिए: - 1X5=5

आशा से भरकर जीवन को देखो तो निराश और नकारात्मक दिखाई देने वाले जीवन का मार्ग साफ और गतिशील दिखाई देना आरंभ हो जाएगा।इसके लिए तुम्हें क्या करना होगा?इसका उत्तर है- तुम्हें केवल अनंत धैर्य ,विश्वास और आशा से अपनी मंज़िल की ओर देखना होगा।तुम्हें यह भी ध्यान रखना होगा कि जो आज नहीं हुआ,वह कल होगा। कल नहीं तो परसों अवश्य होगा।तुम्हारे प्रयत्न निष्फल नहीं जाएँगे।प्रतीक्षा और आशा जीवन-पथ के दो ऊँचे प्रकाशस्तंभ हैं।चीज़ों को ,परिस्थितियों को,अपने आस-पास के व्यक्तियों को उनके अँधेरे हिस्सों की तरफ से मत देखो।वहाँ से मत देखो जहाँ से चीज़ें और स्थितियाँ कष्टपूर्ण और प्रतिकूल प्रतीत होती हों।हर किसी के उज्ज्वल और प्रकाशमान पक्ष को खोजो।घने काँटों के बीच खिले छोटे-से फूल को प्रेम के साथ देखने से काँटे दिखाई ही नहीं देंगे।विश्वास और आस्था लो और उसे समाज के हर वर्ग में बाँटो।इसमें किसी प्रकार की कंजूसी मत करो।जिन्हें आशा,विश्वास,सहायता,सहयोग और सांत्वना की आवश्यकता है ,उन्हें बिना किसी स्वार्थ और द्वेष की भावना के इन्हें बाँट दो।अब तुम देखोगे कि समाज के बीच आशा और विश्वास में वृद्धिहोरही है।

(i) निराश और नकारात्मक दिखाई देने वाले जीवन का मार्ग साफ और गतिशील दिखाई देना तब आरंभ हो जाएगा,जब जीवन को देखेंगे :

(क) खुशी से भरकर (ख) आशा से भरकर

(ग) मेहनत करने के बाद (घ) परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद

(ii) चीज़ों को,परिस्थितियों को,अपने आस-पास के व्यक्तियों को मत देखो :

(क) ऊँचाई की ओर से (ख) बहुत नीचे से

(ग) उनके अँधेरे हिस्सों की तरफ से (घ) ढलान से फिसलने के बाद

(iii) 'इसमें किसी प्रकारकी कंजूसी मत करो :

(क) विश्वास और आस्था को समाज के हर वर्ग में बाँटने में (ख) विश्वास को संभालने में

(ग) आस्था का सम्मान करने में (घ) विश्वास को ऊँचा स्थान देने में

(iv) जीवन-पथ के दो ऊँचे प्रकाश स्तंभ हैं :

(क) जीवन और मृत्यु (ख) प्रतीक्षा और आशा

(ग) अंधकार और प्रकाश (घ) ऊँचाई और निचाई

(v) उपरोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है :

(क) जीवन का महत्त्व (ख) विश्वास का महत्त्व

(ग) जीवन में आशा का महत्त्व (घ) जीवन और आशा

2. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिये सही विकल्प चुनकर लिखिए: - 1X5=5

अच्छा नागरिक बनने के लिए भारत प्राचीन विचारकों ने कुछ नियमों का प्रावधान किया है इन नियमों में वाणी और व्यवहार की शुद्धि , कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह , शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव , सहयोग और सेवा की भावना आदि नियम बहुत महत्त्वपूर्ण माने गए हैं । ये सभी नियम यदि एक व्यक्ति के चारित्रिक गुणों के रूप में भी अनिवार्य माने जाएँ, तो उसका अपना जीवन भी सुखी और आनंदमय हो सकता है। इन सभी गुणों का विकास एक व्यक्ति में यदि उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए, तो वह अपने देश का श्रेष्ठ नागरिक बन सकता है। इन गुणों के कारण वह अपने परिवार , आस-पड़ोस, विद्यालय में अपने सहपाठियों एवं अध्यापकों के प्रति यथोचित व्यवहार कर सकेगा। वाणी एवं व्यवहार की मधुरता सभी के लिए सुखदायक होती है , समाज में हार्दिक सद्भाव की वृद्धि करती है,किंतु अहंकारहीन व्यक्ति ही स्निग्ध वाणी और शिष्ट व्यवहार का प्रयोग कर सकता है।अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी होता है ,जिसका परिणाम यह होता है कि ऐसे आदमी के व्यवहार से समाज में शांति और सौहार्द का वातावरण नहीं बनता।

(i) वाणी और व्यवहार की शुद्धि, कर्त्तव्य और अधिकार का समुचित निर्वाह, शुद्धतम पारस्परिक सद्भाव,सहयोग और सेवा की भावना आदि को बताया गया है : -

(क) अच्छा नागरिक बनने का नियम (ख) जीवन की सीख

(ग) जीवन जीने के सिद्धांत (घ) जीवन शिक्षा

(ii) एक व्यक्ति तभी अपने देश का श्रेष्ट नागरिक बन सकता हैजब :

(क) बालक को स्वास्थ्य का महत्त्व बताया जाए (ख) सभी गुणों का विकास उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए

(ग) बालक को अच्छी शिक्षा दी जाए (घ) बालक को झूठ आदि बोलने से रोका जाए

(iii) वाणी और व्यवहार की मधुरता होती है :

(क) सभी के लिए दुःखदायक (ख) सभी के लिए परेशानी का कारण

(ग) आर्थिक सुरक्षा का कारण (घ) सभी के लिए सुखदायक

(iv) अहंकारी और दंभी व्यक्ति सदा होता है -

(क) शिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी (ख) अव्यवहारिक और अविश्वासी

(ग) अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी (घ) अशुद्ध और अव्यवहारी

(v) उपयोक्त गद्यांश का उचित शीर्षक है :

(क) देश और नागरिक (ख) नागरिकों के कर्त्तव्य

(ग) कर्त्तव्य और अधिकार (घ) नागरिक और हम

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिये सही विकल्प चुनकर लिखिए: - **1X5=5**

कहतीहै सारी दुनिया जिसे किस्मत
नाम है उसका हकीकत में मेहनत
जो रचते हैं,खुद अपनी किस्मत, वे कहे जाते हैं साहसी
जो करते हैं , ईश्वर से शिकायत, वे कहे जाते हैं ,आलसी ।
जो रुक गया , मिट गया उसका नामो-निशाँ
जो चलता रहा , अपनी मंजिल वो पा गया
खुशी के हकदार हैं वही , जिन्होंने दु:ख को सहा
छोड़ के दामन फूलों का , काँटों की राह को चुना ।
निराशा का अंधकार मिटाकर, आशा के दीप जलाओ
छोड़ भाग्य की दुहाई , अपनी किस्मत स्वयं बनाओ ।

(i) किस्मत का वास्तविक अर्थ क्या है?

(क) रहमत (ख) सहमत

(ग) मेहनत (घ) हिमाकत

(ii) अपनी किस्मत रचने वालों को कवि क्या कहता है?

(क) रचयिता (ख) मेहनती

(ग) आलसी (घ) साहसी

(iii) कवि किसका अंधकार मिटाना चाहता है?

(क) आशा का (ख) भाषा का

(ग) निराशा का (घ) धर्म का

(iv) व्यक्ति की किस्मत किसे छोड़ने के बाद बनती है?

(क) भाग्य की दुहाई (ख) धर्म की दुहाई

(ग) कर्मकी दुहाई (घ) भाषा की दुहाई

(v) सच्चीखुशी किसे मिलनी चाहिए?

(क) दु:ख सहने वालों को (ख) दु:ख देने वालों को

(ग) सुख लेने वालों को (घ) निर्लिप्त रहने वालों को

4. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिये सही विकल्प चुनकर लिखिए: - 1X5=5

हारा हूँ सौ बार
गुनाहों से लड़-लड़कर
लेकिन बारंबार लड़ा हूँ
मैं उठ-उठकर
इससे मेरा हर गुनाह भी मुझसे हारा
मैंने अपने जीवन को इस तरह उबारा

डूबा हूँ हर रोज़

किनारे तक आ-आकर

लेकिन मैं हर रोज़ उगा हूँ जैसे दिनकर

इससे मेरी असफलता भी मुझसे हारी

मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी

(i) कवि गुनाहों से सौ बार हारा हैलेकिन वह लड़ा है :

(क) गिर-गिरकर (ख) उठ-उठकर

(ग) भाग-भागकर (घ) छिप-छिपकर

(ii) कवि ने अपनी असफलताओं को पराजित किया है :

(क) गुनाहों से लड़कर (ख) घायल हो कर

(ग) विजय की कामना करके (घ) अनाचार का सामना करके

(iii) डूबा हूँ हर रोज़ किनारे तक आ-आकर का अर्थ है कि कवि :

(क) प्रतिदिन किनारे आकर डूब गया है (ख) वह तैरना नहीं जानता

(ग) सफलताओं के समीप आकर भी असफल हुआ (घ) असफलताओं से नहीं घबराता

(iv) 'मैंने अपनी सुंदरता इस तरह सँवारी पंक्ति द्वारा कवि के व्यक्तित्व की इस विशेषता का पता चलता है कि उसने विजय प्राप्त की है :

(क) अपनी सुंदरता को नष्ट करके (ख) अपनी सुंदरता का ध्यान रखकर

(ग) अपनी सुंदरता को सँवारकर (घ) हार न मानकर,लगातार संघर्ष करते हुए

(v) 'दिनकर' शब्द का अर्थ है

(क) सूर्य (ख) चंद्रमा

(ग) दिन (घ) रात

खंड-'ख'

5. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए। 1X4=4

(i) विमला <u>कविता</u> लिखती है।

(ii) <u>अरे वाह !</u>तुम भी क्रिकेट खेल सकते हो।

(iii) यह बालक अत्यंत <u>चतुर</u> है।

(iv) <u>ऐवरेस्ट</u> संसार का सबसे ऊँचा पर्वत शिखर है।

6. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। 1X3=3

(i) वह अंग्रेजी पढ़ता है और चला जाता है। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ii) सोने की चिड़िया कहलाने वाला यह वही भारत है।(मिश्र वाक्य में परिवर्तित कीजिए)

(iii) जो कमाएगा, वह खाएगा। (रचना के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

7. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। 1X4=4

(i) 'क्या वह पत्र तुमने लिखा है।' (कर्मवाच्य में परिवर्तित कीजिए।)

(ii) पंकज से पत्र लिखा गया। (कर्तृवाच्य में परिवर्तित कीजिए।)

(iii) दिलीप दौड़ा। (भाववाच्य में परिवर्तित कीजिए)

(iv) माता जी गीता पढ़ती हैं। वाच्य का प्रकार बताइए)

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। 1X4=4

(i) उद्दीपन विभाव किसे कहते हैं?

(ii) स्थायी भाव कौन-कौन से हैं?

(iii) निम्न पंक्तियों में निहित रस स्पष्ट कीजिए।

" सौमित्र को घननाद का रव अल्प भी न सहा गया ।
निज शत्रु को देखे बिना उनसे तनिक न रहा गया ।
रघुवीर से आदेश ले युद्धार्थ वे सजने लगे ।
रणबाद्य भी निर्दोष, करके धूम से बजने लगे ।
सानंद लड़ने के लिए तैयार जल्दी हो गये।
उठने लगे उनके हृदय में युद्ध-भाव नये-नये।"

(iv) निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित रस स्पष्ट कीजिए।

"हाहाकार घर में हुआ नया
निशि का अटूट वह मौन व्रत टूट गया।
किंतु यह सारा हाल,
जानकी न जान सकी,देखकर सोती हुई।
जागी जब प्रात: काल
हेतु कुछ जाने बिना, शंकित-सी होती हुई
'मां-मां' कह रो उठी तुरंत वह ।"

खंड-'ग'

9. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों केउत्तर लिखिए: - 1X5=5

आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परम्परागत 'पड़ोस-कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है। मेरी कम-से-कम एक दर्जन आरंम्भिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के है, जहाँ मैंने अपनी किशोरावस्था गुज़ार अपनी युवावस्था का आरंभ किया था । एक-दो को छोड़कर उनमें से कोई भी पात्र मेरे परिवार का नहीं है । बस इनको देखते-सुनते,

इनके बीच ही मैं बड़ी हुई थी लेकिन इनकी छाप मेरे मन पर कितनी गहरी थी ,इस बात का अहसास तो मुझे कहानियाँ लिखते समय हुआ ।

(i) परंपरागत 'पड़ोस-कल्चर' का क्या अर्थ है ?

(ii) महानगरों ने हमारे जीवन को कैसे प्रभावित किया है?

(iii) लेखिका के मन में किनकी गहरी छाप थी?

(iv) लेखिका को कहानी लिखते हुए क्या अहसास हुआ?

(v) लेखिका की आरंभिक कहानियों के अधिकांश पात्र कैसे हैं और क्यों?

अथवा

अमीरुद्दीन की उम्र अभी 14 साल है। मसलन बिस्मिल्ला खाँ की उम्र अभी 14 साल है। वही काशी है। वही पुराना बालाजी का मंदिर जहाँ बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज़ के लिए जाना पड़ता है । मगर एक रास्ता है बालाजी मंदिर तक जाने का । यह रास्ता रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से हो कर जाता है । इस रास्ते से अमीरुद्दीन को जाना अच्छा लगता है । इस रास्ते न जाने कितने तरह के बोल-बनाव कभी ठुमरी,कभी टप्पे,कभी दादरा के मार्फत ड्योढ़ी तक पहुँचते रहते है । रसूलन और बतूलन जब गाती है तब अमीरुद् दीन को खुशी मिलती है । अपने ढेरों साक्षात्कारों में बिस्मिला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंभिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली है।

(i) बिस्मिल्ला खाँ रियाज़ करने कहाँ जाते थे?

(ii) बालाजी मंदिर तक जाने का कौन- सा रास्ता अमीरुद्दीन को बहुत पसंद था?

(iii) अमीरुद्दीन को यह रास्ता क्यों पसंद था?

(iv) अमीरुद्दीन अपने संगीत जीवन का प्रथम प्रेरक किसे मानते हैं?

(v) अपने साक्षात्कारों में खाँ साहब ने क्या स्वीकार किया है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए - **2X5=10**

(i) जिन व्यक्तियों ने स्त्री शिक्षा का विरोध किया था,उन्होंने अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिए कौन–कौन से तर्क दिए है?' स्त्री शिक्षाके विरोधी कुतर्को का खंडन'पाठ के आधार पर बताइए।

(ii) 'एक कहानी यह भी' पाठ के आधार पर बताइए कि युवावस्था में लेखिका को किस बात ने उन्मादित कर दिया था?

(iii) वेदों का संदर्भ दे कर लेखक ने किस विरोधा भास की बात कही है?' स्त्री शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के आधार पर बताइए।

(iv) ' नौबतखाने में इबादत'पाठ के आधार पर लिखिए कि अपने मजहब के अतिरिक्त काशी के प्रति बिस्मिल्ला खाँ की कौन सी भावना प्रदर्शित होती है?

(v) 'संस्कृति' पाठ के आधार पर बताइए कि वास्तविक अर्थो में संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जा सकता है?

11. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : - 1X5=5

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटूबादी बालकु बधजोगू॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब येहु मरनिहार भा साँचा॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगे अपराधी गुरुद्रोही।
उतर देत छोड़ौं बिनु मारे। केवल कौसिक सील तुम्हारे॥

न त येहि काटि कुठार कठोरे। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरे॥
गाधिसूनु कह हृदय हसि मुनिहि हरियरे सूझ।
अयमय खाँड़ न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ॥

(i) पहली पंक्ति में लक्ष्मण ने परशुराम से क्या कहा?

(ii) विश्वामित्र ने परशुराम से ऐसा क्यों कहा कि उन्हें लक्ष्मण का अपराध क्षमा कर देना चाहिए ?

(iii) विश्वामित्र ने परशुराम के बारे में मन- ही- मन क्या सोचा?

(iv) परशुराम ने सभा में उपस्थित लोगों के सामने लक्ष्मण के अपराध को किस प्रकार अक्षम्य बताया ?

(v) प्रस्तुत काव्यांश की भाषा कौन्सी है?

अथवा

कितना प्रामाणिक था उसका दु:ख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दु:ख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुँधले प्रकाश की
कुछ तुकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

(i) लड़की अभी कैसी नहीं थी? 1

(ii) 'लड़की अभी सयानी नहीं थी।' पंक्ति में माँ की अंतर्वेदना किस प्रकार व्यक्त हुई है? 2

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने क्या भाव व्यक्त किया है? 2

12. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए - 2X5=10

(i) परशुराम ने 'कौशिक कहकर किसे संबोधित किया है? उनका कौशिक को सम्बान्धित करने का क्या कारण हो सकता है?

(ii) 'छाया मत छूना'कविता में 'तन सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी पंक्ति में कवि का संबंध किससे है और क्यों?

(iii) संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाहता है?

(iv) 'माँ ने कहा लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना''कन्यादान' कविता के आधार पर कवि इस कथन द्वारा स्त्रियों के लिए क्या संदेश देना चाहता है?

(v) शिव धनुष टूटने का समाचार पाकर परशुराम ने जनक के दरबार में धनुष तोड़ने वाले को किस प्रकार धमकाया?

13. 'साना-साना हाथ जोड़ि के आधार पर बताइए कि लेखिका को इस बात का एहसास किस प्रकार हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है? 5

अथवा

'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ के आधार पर बताइए कि एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आप क्या योगदान दे सकते हैं?

खंड-'घ'

14. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में एक निबंध लिखिए - 10

(i) छात्रों में बढ़ता असंतोष

- प्रस्तावना
- छात्र जीवन में बदलाव
- छात्र असंतोष के कारण
- छात्र असंतोष को दूर करने के उपाय
- उपसंहार

(ii) अनुशासन : हमारी आवश्यकता

- भूमिका
- अनुशासन का महत्त्व
- अनुशासन की आवश्यकता
- अनुशासन की प्रवृत्ति का विकास करना

- उपसंहार

ii) परिवर्तन : प्रकृति का नियम

- भूमिका
- संसार की परिवर्तनशीलता
- उदाहरण सहित विवेचना
- परिवर्तन का महत्त्व
- उपसंहार

15. 'पेय जल की बढ़ती समस्या' को लेकर जल अधिकारी को पत्र लिखिए। 5

अथवा

परीक्षा में असफल होने पर मित्र को सांत्वना देते हुए एक पत्र लिखिए।

16. निम्नलिखित गद्यांश का अपने शब्दों में सार-लेखन कीजिए : 5

साहित्य हमारे मन-मस्तिष्क को स्वस्थ-सुंदर बनाए रखने के लिए भावों और विचारों को संतुलित भोजन प्रदान करता है। किसी देश के नागरिक का मन-मस्तिष्क यदि स्वस्थ और निरोगी है, तो फिर उसे कभी कोई पराधीन नहीं बना सकता है। किसी भी क्षेत्र में नीचा नहीं दिखा सकता। अत : स्पष्ट है कि स्वतंत्र राष्ट्र और समाज के हर नागरिक को साहित्य की खुराक हमेशा मिलती रहनी चाहिए। ध्यान रहेजिस प्रकार भोजन का अर्थ केवल पेट भरना नहीं है, उसी प्रकार साहित्य के अध्ययन और सृजन का अर्थ भी केवल पढ़ना एवं मनोरंजन प्राप्त करना ही नहीं है। जिस प्रकार सड़ा ,गला और बासी भोजन शरीर को अस्वस्थ और रोगी बनाकर समाप्त कर डालता है। उसी प्रकार अश्लील और मात्र भावनाओं को भड़काए रखने वाला घटिया साहित्य जीवन और समाज के तन-मन को रोगी बना कर नष्ट कर देता है। अत: स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक संतुलित भोजन के समान अच्छे साहित्य की रचना और अध्ययन करके ही जीवन और समाज की उचित

रक्षा की जा सकती है। साहित्य का वास्तविक मान ,मूल्य और उसका महत्त्व भी तभी बना रह सकता है।

अथवा

जीवन में सफलता का सर्वप्रथम रहस्य आत्मविश्वास है। किसी विशेष कार्यकलाप के लिए व्यक्ति की क्षमताओं में आत्मविश्वास की कमी असफलता का प्रथम लक्षण है। कोई व्यक्ति जो अपनी सफलता के बारे में आश्वस्त है, सफलता के रास्ते में आई असफलताओं से हतोत्साहित नहीं होता। जैसा'हैनरी फोर्ड'ने कहा था,यदि आप सोचते है कि आप कर सकते है तो आप कर सकते हैं । यदि आप यह सोचते हैं कि आप नहीं कर सकते तो नहीं कर सकते।'। लेकिन एक मज़बूत आत्मविश्वास बनाए रखना लोगों के लिए मुश्किल होता है, क्योंकि कई परेशानियाँ व दबाव उनके रास्ते में आती हैं जो उसे मार्ग से भटका देती हैं। समुचित विचार और नियोजन जीवन की आवश्यकताओं का सामना करने के लिए साहस जुटाने में लोगों की मदद करते हैं। कोई भी व्यक्ति जो विपत्ति के समय दैवीय मदद की इच्छा या आकांक्षा करता है , कमज़ोर दिमाग और चरित्र वाला व्यक्ति होता है। ऐसे असफल लोग अपने खराब प्रदर्शन के लिए कमज़ोर पहल की बजाय अपने भाग्य को दोष देते है। इसके विपरीत, आत्मविश्वासी व्यक्ति हतोत्साहित नहीं होते और प्रयास करने में लगे रहते हैं और बड़ी आसानी से सफलता प्राप्त करते हैं।

उत्तर : - **खंड-'क'**

प्रश्न सं.			उत्तर संकेत /मूल्य बिंदु	अंक
1.	(i)	(ख)	आशा से भरकर	1X5=5
	(ii)	(ग)	उनके अँधेरे हिस्सों की तरफ से	
	(iii)	(क)	विश्वास और आस्था को समाज के हर वर्ग में बाँटने में	
	(iv)	(ख)	प्रतीक्षा और आशा	
	(v)	(ग)	जीवन में आशा का महत्त्व	
2.	(i)	(क)	अच्छा नागरिक बनने का नियम	1X5=5
	(ii)	(ख)	सभी गुणों का विकास उसकी बाल्यावस्था से ही किया जाए	
	(iii)	(घ)	सभी के लिए सुखदायक	
	(iv)	(ग)	अशिष्ट वाणी और व्यवहार का अभ्यासी	
	(v)	(क)	देश और नागरिक	
3.	(i)	(ग)	मेहनत	1X5=5
	(ii)	(घ)	साहसी	
	(iii)	(ग)	निराशा का	
	(iv)	(क)	भाग्य की दुहाई	
	(v)	(क)	दु:ख सहने वालों को	
4.	(i)	(ख)	उठ-उठकर	1X5=5
	(ii)	(क)	गुनाहों से लड़कर	
	(iii)	(ग)	सफलताओं के समीप आकर भी असफल हुआ	
	(iv)	(घ)	हार न मानकर,लगातार संघर्ष करते हुए	
	(v)	(क)	सूर्य	
5.	(i)	कविता :जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, कर्म कारक ,'लिखती है' क्रिया का कर्म है ।		1X4=4
	(ii)	अरे वाह ! : विस्मयादिबोधक, आश्चर्य सूचक ।		
	(iii)	चतुर : गुणवाचकविशेषण , पुल्लिंग, एकवचन ,'बालक' विशेष्य का विशेषण है ।		
	(iv)	ऐवरेस्ट : व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक 'है' क्रिया का कर्ता है ।		
6.	(i)	संयुक्त वाक्य		1X3=3
	(ii)	यह वही भारत है, जो सोने की चिड़िया कहलाता था ।		
	(iii)	मिश्रवाक्य		
7.	(i)	क्या यह पत्र तुम्हारे द्वारा लिखा गया है?		1X4=4

(ii) पंकज ने पत्र लिखा।

(iii) दिलीप से दौड़ा गया।

(iv) कर्तृवाच्य

8. (i) आश्रय के मन में भावों को उद्दीप्त करने वाले विषय की बाहरी चेष्टाओं और बाह्य वातावरण को उद्दीपन विभाव कहते हैं। 1X4=4

(ii) मुख्यत: दस स्थायी भावों को स्वीकार किया गया है। ये निम्नालिखित हैं : - रति, हास , शोक , क्रोध ,उत्साह,भय, जुगुप्सा (घृणा) , विस्मय , निर्वेद (वैराग्य) तथा वत्सल

(iii) प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में शत्रु आलंबन है तथा सौमित्र आश्रय है। घननाद का रव (गर्जन) , रणवाद्यों का बजना आदि उद्दीपन है, सौमित्र का युद्ध के लिए तैयार होना , क्रोधित होना अनुभाव है तथा उत्सुकता एवं हर्ष संचारी भाव है । इस प्रकार , इन काव्य पंक्तियों में 'वीर रस' निहित है।

(iv) उपरोक्त काव्य पंक्तियों में शोक स्थायी भाव के कारण करुण रस की उत्पति हुई है।

9. (i) परंपरागत'पड़ोस-कल्चर' का अर्थ एक ऐसी कल्चर अर्थात् संस्कृति से है जिसमें व्यक्ति के अपने पड़ोसियों से उदार एवं घनिष्ठ संबंध होते हैं। इसमें पड़ोस एक परिवार की तरह कार्य करता है और सुख-दु:ख के क्षणों में परस्पर सहायक होता है। 1X5=5

(ii) महानगरों ने हमारे जीवन काफी प्रभावित किया है। पति –पत्नी दोनों काम पर जाते हैं, उन्हें पड़ोसियों से मुलाकात करनेका समय ही नहीं मिलता बड़े शहरों में लोग 'पड़ोस-कल्चर' से वंचित हैं। लोग अपनी कोठियों एवं फ्लैट में कैद होकर रह गए हैं, वे एक-दूसरे के लिए संवेदनशील नहीं रहे। इस कारण मनुष्य हृदय की उदारता ,विशालता हँसी-ठहाके , उल्लास आदि सब भुला दिए गए हैं।

(iii) लेखिका के मन में बचपन की यादें की गहरी छाप थी।

(iv) लेखिका को कहानी लिखते हुए यह अहसास होता है कि हमारी पड़ोस-कल्चर हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी होती है।

(v) लेखिका की आरंम्भिक कहानियों के अधिकांश पात्र उनके अपने मोहल्ले के लोग हैं। क्योंकि ये सारे उनके अपने जाने-पहचाने थे।

अथवा (i) 14 वर्ष की आयु में अमीरुद्दीन यानी बिस्मिल्ला खाँ पुराने बाला जी के मंदिर में नौबतखाने रियाज़ के लिए जाते थे।

(ii) बालाजी मंदिर तक जाने के लिए अमीरुद्दीन को वह रास्ता बहुत पसंद था जो रसूलन बाई और बतूलन बाई के यहाँ से होकर जाता था।

(iii) अमीरुद्दीन को यह रास्ता बहुत पसंद था क्योंकि इस रास्ते पर रसूलन और बतूलन दोनों बहनों का मधुर गायन सुनने को मिलता था। जिससे अमीरुद्दीन को बहुत खुशी मिलती थी।

(iv) अमीरुद्दीन अपने संगीत जीवन का प्रथम प्रेरक गायिका रसूलन बाई और बतूलन बाई को मानते हैं।

(v) अपने ढेरों साक्षात्कारों में खाँ साहब ने यह स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरंम्भिक दिनों में संगीत के प्रति रुचि रसूलन बाई और बतूलन बाई की गायकी को सुनकर ही हुई।

10. (i) स्त्रियों को शिक्षित करना उनके और गृह-सुख के नाश का कारण मानते हैं।संस्कृत कवियों के नाटकों में कुलीन स्त्रियों के अनपढ़ों की भाषा में बातें कराना इस तथ्य को प्रमाणित करता है।स्त्रियों को शिक्षित करने से अनर्थ हो जाते हैं। 2X5=10

(ii) लेखिका ने स्वाधीनता आंदोलन का वर्णन करते हुए बताया है कि उस समय प्रभात–फेरियाँ, हड़तालें,जुलूस, भाषण हर शहर में हुआ करते थे। सभी लोग इन आंदोलनों से पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ जोड़ना चाहते थे। लेखिका भी एक युवा होने के नाते इन गतिविधियों से जुड़ गई,क्योंकि शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने उसकी रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था।

(iii) वेदों का संदर्भ देकर लेखक ने इस विरोधाभास की बात कही है कि वेदों को प्राय: सभी हिंदू ईश्वर-कृत मानते हैं। ईश्वर ने वेद-मंत्रों की रचना अथवा उनका दर्शन विश्ववरा आदि स्त्रियों से कराया है, जबकि हम उन्हीं स्त्रियों को ककहरा पढ़ाना पाप समझते हैं।

(iv) बिस्मिल्ला खाँ काशी की संस्कृति में रचे-बसे हैं। काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्‌भुत परंपरा है,जिसका निर्वाह काशी का हर व्यक्ति करता है। यह आयोजन पिछले कई बरसों से संकटमोचन मंदिर में होता आया है। यह मंदिर शहर के दक्षिण में लंका पर स्थित है तथा हनुमान जयंती के अवसर पर यहाँ पाँच दिनों तक शास्त्रीय एवं उप शास्त्रीय गायन-वादन के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

इसमें बिस्मिल्ला खाँ अवश्य रहते हैं, क्योंकि अपने मज़हब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी उतनी ही है। वे जब भी काशी के बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मंदिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं। यही नहीं , चाहे थोड़ी देर के लिए ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है।

(v) जो व्यक्ति अपनी बुद्धि और विवेक से समाज को किसी नए तथ्य से अवगत कराता है और अनुसंधान करता है , वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है। ऐसा व्यक्ति नए-नए आविष्कारों को आविष्कृत करता है ,जैसे – न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोजा। वह वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति था।

11. (i) पहली पंक्ति में लक्ष्मण ने परशुराम सेबोले- 'आप तो मानो मृत्यु को हाँक लगा-लगाकर मेरे लिए बुला रहे हो। 1X5=5

(ii) बात बिड़ती देखकर विश्वामित्र ने परशुराम से कहा-परशुराम जी! आप तो साधु हैं। साधुजन बालकों के गुण-दोषों पर अधिक ध्यान नहीं दिया करते। इसलिए इसे क्षमा कर दें।

(iii)

विश्वामित्र परशुराम के बारे में मन-ही-मन यह सोचने लगे कि देखो ,मुनि परशुराम को कैसे हरा-ही-हरा सूझ रहा है। अर्थात् वे अब क्षत्रियों को हराने के कारण राम-लक्ष्मण को भी सामान्य क्षत्रिय मान रहे हैं और उन्हें आसानी-से मार डालने के सपने दिखा रहे हैं । वे यह नहीं जानते कि उनके सामने गन्ने के रस से बनी खाँड़ नहीं बल्कि लोहे का बना हुआ तेज खाँड़ा (तलवार) है। राम-लक्ष्मण सामान्य वीर न होकर बहुत पराक्रमी योद्धा हैं। मुनि जी अज्ञानियों की तरह इनके प्रभाव को समझ नहीं पा रहे हैं।

(iv) परशुराम ने सभा में उपस्थित लोगों के सामने अपने भयंकर फरसे को सुधार कर सीधा कर लिया । वे बोले- अब लोग इस बालक के वध के लिए मुझे दोष न दें। यह कटु वचन कहने के कारण वध के योग्य है। मैं तो इसे बालक समझ कर बहुत बचाता रहा परंतु अब यह सचमुच ही मारने-योग्य हो चुका है।

(v) अवधी भाषा

अथवा (i) 'लड़की अभी सयानी नहीं थी।'

(ii) बेटी को विदा करते समय माँ की अंतर्वेदना इस प्रकार व्यक्त हुई कि उसकी पुत्री में संसार की चालाकी को समझने की समझ नहीं है । उसमें इतनी सरलता तथा भोलापन है कि उसे सुख क्या है यह तो पता है किंतु दु:ख किसे कहते हैं, यह नहीं पता ।

(iii) प्रस्तुत पंक्तियों में माँ अपनी बेटी को स्त्री के परंपरागत आदर्श रुप से हटकर सीख दे रही है। इस में कोरी भावुकता नहीं बल्कि माँ के संचित अनुभवों की पीड़ा की प्रामाणिक अभिव्यक्ति हुई है। जब माँ ने अपनी बेटी के विवाह के समय उसे विदा किया तो उसे लगा कि वह अपनी अंतिम पूँजी किसी को सौंप रही है ।

12. (i) परशुराम ने 'कौशिक' कहकर ऋषि विश्वामित्र को संबोधित किया है, क्योंकि विश्वामित्र राम एवं लक्ष्माण के गुरु थे और केवल वे ही लक्ष्मण को कटु वचन बोलने से मना कर सकते थे। इसके अतिरिक्त विश्वामित्र , परशुराम तथा लक्ष्मण दोनों के स्वभाव से भली-भाँति परिचित थे। 2X5=10

(ii) 'तन-सुगंध शेष रही ,बीत गई यामिनी 'में कवि का संबंध उसके जीवन की सुखद मधुमयी उस रात्रि से है, जो अतीत बन चुकी है,तथा अब केवल उसकी सुगंध (स्मृति) मात्र शेष रह गई है। यही कारण है कि कवि को मधुमयी रात्रि की यादें दु:खी करती है ।

(iii) संगतकार के माध्यम से कवि उन व्यक्तियों की ओर संकेत कर रहा है , जो किसी भी घटना या प्रसंग में किसी भी काल में मुख्य नायक का साथ देते हैं । उसे सफल बनाने के लिए स्वयं पृष्ट भूमि में रहते हैं । वे सहायक कलाकार स्वयं को महत्व न देकर मुख्य कलाकार के महत्व को बढ़ाने में अपनी शक्ति लगा देते हैं ।

(iv) इस कथन द्वारा कवि स्त्रियों को संदेश देना चाहता है कि उनकी कोमलता ही उनकी सबसे बड़ी कमजोरी समझी जाती है । ससुराल में रह कर लड़की की तरह मर्यादा भरा आचरण करना चाहिए,लेकिन एक सामान्य,कमजोर लड़की की तरह किसी के अत्याचार सह कर दुर्बल नहीं बनना चाहिए । उसे हमेंशा

अपने प्रति होने वाले अत्याचार एवं शोषण का साहसपूर्वक विरोध करना चाहिए, ताकि उसे कभी कमजोर न समझा जा सके ।

(v) परशुराम शिव भक्त थे । इसलिए उन्होंने शिव धनुष तोड़ने वाले को धमकाते हुए कहा कि जिस किसी ने भगवान शिव के इस धनुष को तोड़ा है ,वह सहस्रबाहु के समान ही मेरा शत्रु है । यदि शिव के धनुष को तोड़ने वाला इस सभा से अलग नहीं हुआ ,तो सभा में उपस्थित सभी राजा मेरे हाथों मारे जाएँगें ।

13. जब धुंध छँट गई तो लेखिका ने देखा कि चारो ओर जन्नत बिखरी पड़ी है। **1X5=5**
जहाँ तक देखा , खूबसूरती-ही-खूबसूरती है । यह सब देखकर लेखिका को आश्चर्य हुआ कि क्षणभर में इस ब्रह्मांड में कितना कुछ घटित हो जाता है- सतत प्रवाहमान झरने और नीचे अत्यंत वेग से गिरती तिस्ता नदी । सामने से उठती हुई धुंध तथा ऊपर की ओर मंडराते हुए आवारा बादल । धीमी हवा में हिलोरें लेते हुए प्रियता और रुडोडेंड्रो के फूल , जो मन को मोह रहे थे । यह सब देखकर लेखिका को अनुभव हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है ।

अथवा

एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में हम निम्नलिखित भूमिका निभा सकते हैं । विज्ञान द्वारा प्रदत्त उपलब्धियों का प्रयोग मानव जाति के उत्थान के लिए करें विद्युत शक्ति का प्रयोग उचित तरीके से करने पर बल दें । मुद्रण-यंत्रों की उपयोगिता समाचार-पत्रों व पुस्तकों को छापने के लिए करें । इसका अनुचित प्रयोग नहीं होने दें ।
चिकित्सा क्षेत्र में हुई विज्ञान की नई खोजों के माध्यम से इलाज सबको मिले इसे सुनिश्चित किया जाए । कृषि सुधार व उद्योग-धंधों की उन्नति में सहायक पद्धति व उपकरणों से नागरिकों को अवगत कराएँ ।

14. निबंध लेखन: **2X5=10**

- विषय वस्तु
- प्रस्तुति
- संकेत बिंदुओं के आधार पर विषय का पल्लवन
- भाषायी शुद्धता
- विचारोंकी स्पष्टता

15. पत्र लेखन : **1X5=5**

- प्रारंभ एवं समापन की औपचारिताएँ
- विषयवस्तु
- भाषायी शुद्धता
- प्रस्तुति
- विचारोंकी स्पष्टता

16. सार-लेखन :शीर्षक : साहित्य की उपयोगिता 1X5=5

जिस प्रकार शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक संतुलित भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन–मस्तिष्क को स्वस्थ एवं सुंदर बनाए रखने के लिए अच्छे साहित्य की खुराक अनिवार्य है साहित्य अध्ययन और सृजन का उद्देश्य पढ़ने और मनोरंजन करने तक सीमित नहीं है। इसका उद्देश्य तो समाज और राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक का उचित मार्गदर्शन करना है ।

अथवा

शीर्षक : आत्मविश्वास का महत्त्व

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति में आत्मविश्वास होना परम आवश्यक है। आत्मविश्वास से भरा हुआ व्यक्ति कठिन परिस्थितियों से हतोत्साहित नहीं होता। वह निरंतर प्रयासरत रहता है और अंतत: आसानी से सफलता प्राप्त कर लेता है । आत्मविश्वास की कमी जीवन में असफलता और खराब प्रदर्शन का कारण बनती है ।

2. आदर्श-प्रश्न-पत्र हल सहित

संकलित

मूल्यांकन - 2, 2015-16
कक्षा -दसवीं
हिन्दी (पाठ्यक्रम -"अ")

समय -3 घंटे **पूर्णांक - 90**

निर्देश-----
इस प्रश्न के चार खण्ड हैं ----क,ख,ग,घ।
चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड- 'क' अपठितबोध

(1)निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों से चुनें 1x5=5

बांस का प्रयोग अनेक कामों के लिए किया जाता है। इसे घर बनाने, बर्तन और औजार के लिए इस्तेमाल किया जाता है तथा ईंधन के रूप में जलाने के काम में भी लाया जा सकता है। बांस की चीज़ें तब से बन रही हैं, जब से इंसान ने हाथ से कलात्मक चीज़ें बनानी शुरु की। बांस की खपच्चियों से चटाइयां, टोपियां, बर्तन, उपष्कर आदि अनेक चीज़ें बनाई जाती हैं। यहां तक कि असम में बांस की खप्पच्चियों को इस तरह बांधा जाता है कि वह एक शंकु की शक्ल ले लेता है। जुलाई से अक्टूबर के महीनों में घमासान बारिश होने के समय वहां के लोगों के पास बहुत खाली समय होता है। यही समय जंगल से बांस इकट्ठा करने का होता है। प्राय: एक से तीन वर्ष की उम्र वाले बांसो को काटा जाता है। बूढे बांस सख्त होने से टूट जाते हैं । बांस की खपच्चियों से क्या बनाना है, के अनुसार तैयार की जाती है। इस कला को सीखने के लिए काफ़ी समय लगता है।

क. बांस की उपयोगिता नहीं है-

(1)मकान, बर्तन, औजार आदि बनाने के लिए।
(2)ईंधन आदि के लिए।
(3)चटाइयां,टोपियां,टोकरियां,उपष्कर, आदि बनाने के लिए।
(4)खेत में हल चलाने और पौधों की घास निकालने के लिए।

(ख)खपच्चियों को किस तरह बांधा जाता है?

(1)गोल आकार में।

(2) चपटे आकार में।

(3)शंकु के आकार में।

(4)लंबे आकार में।

(ग)जंगलों में बांस एकत्रित करने का सही समय कब होता है?

(1)जुलाई से अक्टूबर

(2)अक्टूबर से दिसंबर

(3)नवंबर से जनवरी

(4)जनवरी से मार्च

(घ)लोग बरसातों में बांस एकत्रित करते हैं,क्योंकि-

(1)बांस भीग कर जल्दी टूट जाते हैं।

(2)लोग इस समय खाली होते हैं।

(3)बांस हरे-भरे होते हैं।

(4)इस समय प्राय: बाढ़ आ जाती है।

(ङ)खपच्चियां बनाने के लिए किस प्रकार के बांस को चुना जाता है?

(1)एक से तीन साल की आयु वाले

(2)दो से पांच साल की आयु वाले

(3)चार से सात साल की आयु वाले

(4)दस साल की आयु वाले

(2)निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर उस के नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों से चुनें1x5=5

आज कल यह एक सर्वस्वीकृत मान्यता है कि खिलौनों का बच्चों की कल्पना और सोच-समझ से सीधा ताल्लुक होता है। खिलौनों से खेलने या उन्हें बनाते वक्त बच्चे अपने परिवेश का पुनर्निर्माण तथा अनुकरण करते हैं। अनुकरण से आशय कोरीन कल से नहीं, चमन, काट-छांट तथा पुनर्योजन की संपूर्ण कलात्मक प्रक्रिया से है। खिलौने बच्चों के लिए समाज का सूक्ष्मांकन होते हैं और बच्चों द्वारा स्वंय बनाये गए खिलौने जीवन के सामाजिक समीकरणों के प्रतिबिंब होते हैं। गत्ते का सिनेमा, लकड़ी की गाड़ी और रेत के किले बनाते समय बच्चे अपने परिवेश का समीक्षात्मक पुनर्निर्माण करते हैं। बाल जीवन में खिलौनों की यह विशिष्ट स्थिति उन्हें बच्चों की शिक्षा के माध्यम के रूप में बहुत उपयोगी साबित करती है, किन्तु खिलौनों के शिक्षायी उपयोग का विचार शिक्षा के इतिहास में बहुत देर से आया। वास्तव में बच्चों के लिए विशेष रूप से खिलौने बनाने का रिवाज़ स्वयं बहुत पुराना नहीं है। यूरोप में 17वीं सदी के पहले बच्चों के लिए खिलौने बनाए जाने का उल्लेख नहीं मिलता है। बच्चों के खिलौने संभवतः देर से ईजाद किए गए। भारतीय खिलौनों का संपूर्ण इतिहास तब तक लिखाँ जाना संभव नहीं होगा जब तक ऐतिहासिक सामग्री के अलावा साहित्य तथा लोककथाओं का इस दृष्टि से विश्लेषण नहीं कर लिया जाता।

(क) खिलौने बच्चों के शिक्षण में सहायक होते हैं, क्योंकि

(1) खिलौनों का बच्चों की कल्पना और सोच-समझ से ताल्लुक होता है।

(2) खिलौने सुंदर और चमकीले होते हैं।

(3) खिलौने अकेलापन दूर करते हैं।

(4) ये आसानी से उपलब्ध होते हैं।

(ख) बच्चों के द्वारा बनाए खिलौनों के पीछे कौन-सी प्रवृति होती है?

(1) कोरीन कल की

(2) अपनी कल्पना प्रकट करने की।

(3) समय का उपयोग मात्र।

(4) समीक्षात्मक पुनर्निर्माण और अनुकरण की।

(ग) शिक्षा के माध्यम के रूप में खिलौनें के उपयोग का इतिहास कितना पुराना है?

(1) मानव सभ्यता के इतिहास जितना।

(2) लगभग सौ साल पुराना।

(3) लगभग चार सौ साल पुराना।

(4) दो सौ साल पुराना।

(घ) बच्चों द्वारा बनाए गए खिलौने सामाजिक समीकरणों के प्रतिबिंब होते हैं क्योंकि –

(1) ये बच्चों के द्वारा समाज और परिवेश के अवलोकन पर अनुकृत होते हैं।

(2) इसमें उनकी समीक्षा भी मिश्रित रह्ती है।

(3) उनकी कल्पना के लिए आधार पर यही समाज, यही परिवेश प्रदान करता है।

(4) तीनों कथन सही है।

(ङ) 'पुनर्निर्माण' शब्द का अर्थ है-

(1) नया निर्माण।
(2) फ़िर से बनाना।
(3) तोड़कर दूसरा बनाना।
(4) निर्माण पूर्ण होना।

3) निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़कर उसके नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्पों से चुने -1x5=5

जब एक साथ मिलकर खेलते हैं,
एक-दूसरे के दुख - सुख झेलते हैं;
कभी रूठते हैं, मनाते हैं,
और फ़िर गले लगाकर मुस्कराते हैं।
जब हम बतियाते हैं -----एक हो जाते हैं।
भाषा-भूषा हमें पास लाते हैं;
पर बिना शब्दों के भी जोड़ते हैं संगीत के स्वर
जिसमें होंठ गुनगुनाते हैं, पांव थिरक जाते हैं।
हम तब भी एक होतेहैं,
जब प्रकृति की गोद में होते हैं।
दीन - दुनिया से परे , चैन की नींद सोते हैं,
और सुनहरे सपनों की दुनिया संजोते हैं।
हम तब भी एक होते हैं,
जब भय से सहम जाते हैं।
अपने मन के दरवाजे बन्द भी कर लें,
पर स्वयं को दूसरे से जुड़ा पाते हैं।
एक होने का यह भाव बड़ा अजीब है,
उसी भाव में यीशु का यश, अल्लाह का ताबीज़ है।
गुरु की वाणी है, राम नाम का बीज है,
यह परंपरा और संस्कृति की चीज़ है।

(क) हम सभी तब मुस्कराते हैं जब-

(1) मिलकर खेलते हैं।
(2) दुख-सुख झेलते हैं।
(3) एक- दूसरे से रूठते हैं।
(4) आपस में गले लगते हैं

ख) भूषा का अर्थ है-

(1) वेष-भूषा।
(2) चारा-भूसा।
(3) सजाव।
(4) शोभा।

ग) संगीत के स्वर बजने पर क्या होता है?

(1) हम सब मन से जुड़ जाते हैं।
(2) होंठ गुनगुनाते और पांव थिरकते हैं।
(3) मन के दरवाज़े खुलते हैं।

(4) कर्तव्य के प्रति सजग होते हैं।

घ) एक होने के भाव अजीब हैं, क्योंकि-

(1) सभी ईश्वरीय शक्तियों की हम पर कृपा है।

(2) हम भारत में रहते हैं।

(3) हम लड़ना नहीं चाहते।

(4) हम सभी कामान करते हैं।

(ङ) 'सुनहरे सपनों की दुनिया संजोते हैं' में अलंकार है-

(1) रूपक

(2) अनुप्रास

(3) श्लेष

(4) यमक

4) निम्नलिखित का व्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों से चुनकर लिखिए-1x5=5

अंत में तुम से प्रिये मैं आज भी कुछ मांगता हूं।
है कठिन देना मगर निष्ठुर हृदय हो मांगता हूं॥
तुम अमर सौभाग्य की बिंदिया सदा माथे सजाना।
हांथ में चूड़ी पहन कर पांव में मेंहदी रचाना॥
तुम नहीं वैधव्य की प्रति मूर्तिया कि साधिका हो।
तुम अगर बलिदान कीपुस्तक की पावन भूमिका हो॥
बर्फ़ की ये चोटियां यूं तो बहुत शीतल लगी थीं।
पर उष्णता से प्यार की वेहिम-शिला गलने लगी थीं॥
तुम अकेली हो नहीं इस धैर्य को खोने न देना।
भर उठे दु:ख से हृदय पर आंख को रोने न देना॥
सप्त पद की प्रक्रिया से तुम मेरी अर्धांगिनी हो।
सात जन्मों तक बजे जो तुम अमर वहरागिनी हो॥
इसलिए अधिकार तुम से बिन बताए ले रहा हूं।
मांग का सिंदूर तेरा मातृभूमि को दे रहा हूं॥

(क) यह कविता किस की भावना व्यक्त कर रही है?

(1) युद्धरत सैनिक का ।

(2) शत्रु को ललकारते पति की।

(3) युद्धरत सैनिक पति की।

(4) शहीद होते सैनिक पति की।

(ख) 'निष्ठुर' का अर्थ है-

(1) निष्काम
(2) कठोर
(3) नि:शंक
(4) निर्जीव

ग) युद्धरत पति, पत्नी से कह रहा है-
(1) परिवार का ध्यान रखने के लिए।
(2) सदा सुखी रहने के लिए।
(3) सुहागन बने रहने के लिए।
(4) सौभाग्यपूर्ण जीवन बिताने के लिए।

घ) 'सप्त-पद की प्रक्रिया' से कवि का आशय है-
(1) विवाह के सात फ़ेरे
(2) सात प्रतिज्ञाओं से बंधा संबंध
(3) सात-कदम का साथ
(4) सात-जन्म का संबंध

ङ) 'मांग का सिंदूर' प्रतीक है-
(1) पति होने का।
(2) माथे के सिंदूर का।
(3) जीवन का।
(4) देश भक्ति का।

खण्ड-'ख' (व्याकरणबोध)

5) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए--------- 1x3=3
(क) वह कौन - सा क्षेत्र है जहां महिलाओं ने अपना कदम नहीं रखा। (वाक्य भेद बताइए)
(ख) मैना पिंजरे में है और वह फ़ल खाती है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)
(ग) एक से ठने मोहन को पढ़ा-लिखाकर नौकरी भी दिलवाई। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

6) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए------1x4=4
(क) पक्षी रात में सोते हैं। (भाव वाच्य में बदलिए)
(ख) हम से इतना नहीं सहा जाता। (वाच्य भेद बताइए)
(ग) तुम से यह वज़न नहीं उठाया जाएगा। (कर्तृ वाच्य में बदलिए)
(घ) मुझे मोबाईल से सूचना मिली| (कर्म वाच्य में बदलिए)

7) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए-------1x4=4
(क) **कोई** आकर मेरी सहायता करे।

(ख) यह पानी **<u>गरम</u>** है।

(ग) इस गन्ने में **<u>मिठास</u>** नहीं है।

(घ) हम हिमाचल घूमने के लिए शिमला **<u>गए थे</u>।**

8) निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस की पहचान कर उनके भेद लिखिए---------1x4=4

(क) बढ़त देखि जल-समबचन बोले रघकुल भानु।

(ख) मधुपगुन-गुनगुना कर कह जाता
कौन कहानी यह अपनी
मुरझा कर गिर रहीं पतियां
देखो कितनी आज घनी।

(ग) मिला कहां वह सुख जिसका,
मैं स्वप्न देखकर जाग गया।

घ) मां ने कहा लड़की होना,
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

खण्ड–'ग'(साहित्यबोध)

9) निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए तथा संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए--------1x5=5

और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम । हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमना-गमन के साधन , हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति? और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा है, उन्हें हम उसकी सभ्यता कहें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

(क) सभ्यता का जन्म किससे होता है?

(1) असभ्यता से (2) संस्करों से (3) संस्कृति से (4) महानता से

(ख) आत्म-विनाश के साधन का तात्पर्य है-----

(1) हिंसा (2) हथियार (3) क्रोध (4) द्वेष

(ग) संस्कृति का संबंध किससे होता है?

(1) कल्याण भावना से।

(2) विकास भावना से।

(3) ज्ञान से ।

(4) विनाश से।

(घ) आत्म-विनाश की भावना को आप क्या कहेंगे?

(1) सभ्यता (2) असभ्यता (3) संस्कृति (4) असंस्कृति

(ङ) 'गमना-गमन' - इस संबंध में कौन-सा समास है?

(1) कर्मधारय

(2) तत्पुरुष

(3) अव्ययीभाव

(4) द्वंद्व

अथवा

पढ़ने-लिखने में स्वयं को ई बात ऐसी नहीं जिससे अनर्थ हो सके। अनर्थ का बीज उसमें हरगिज नहीं। अनर्थ पुरुषों से भी होते हैं। अपढ़ो और पढ़े-लिखों, दोनों से। अनर्थ, दुराचार, और पापाचार के कारण और ही होते हैं और वे व्यक्ति-विशेष का चाल-चलन देखकर जान भी सकते हैं। अतएव स्त्रियों को अवश्य पढ़न चाहिए। जो लोग यह कहते हैं कि पुराने जमाने में यहां स्त्रियां न पढ़ती थीं अथवा उन्हें पढ़ने की मुमानियत थी, वे या तो इतिहास से अभिज्ञता नहीं रखते या जान-बुझ कर लोगों को धोखा देते हैं। समाज की दृष्टि में ऐसे लोग दंडनीय हैं। क्योंकि स्त्रियों को निरक्षर रखने का उपदेश देना समाज का अपकार और अपराध करना है - समाज की उन्नति में बाधा डालना।

(क) यह पद्यांश किस पाठ से लिया गया है?

(1) संस्कृति

(2) नौबतखाने में इबादत

(3) स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खण्डन

(4) एक कहानी यह भी

(ख) इस पाठ का वर्ण्य विषय क्या है?

(1) बच्चों की पढ़ाई

(2) पुरुषों की पढ़ाई

(3)वृद्धों की पढ़ाई

(4) स्त्रियों की शिक्षा

(ग) 'दुराचार' शब्द का विलोम बताइए

(1) अनाचार

(2) अत्याचार

(3) सदाचार

(4) मिथ्याचार

(घ) 'अभिज्ञता' शब्द का अर्थ है -

(1) अनजान

(2) जानकारी रखना

(3) अपरिचय

(4) जानकारी ना रखना

(ङ) कौन-सा उपदेश समाज का अपकार और अपराध करना है?

(1) स्त्रियों को निरक्षर रखना।

(2) उनकी शिक्षा की बाधाओं को दूर करना

(3) स्त्रियों को पढ़ाना।

(4) स्त्रियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना।

10) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए:-

2x5=10

(क) लेखिका ने बचपन में कौन-कौन से खेल खेले और किसके साथ खेले?

(ख) अपने जमाने में पड़ोस कल्चर ने लेखिका मन्नु भंडारी के कर्म को किस सीमा तक प्रभावित किया है ? स्पष्ट कीजिए।

(ग) द्विवेदी जी ने सीता और शकुंतला के कटु वचनों को उचित ठहराया है? 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का 'खंडन' पाठ के आधार पर लिखिए।

(घ) मानव सभ्यता के इतिहास में सबसे बड़े आविष्कार लेखक ने किन्हें माना है?

(ङ) 'नौबत खाने में इबादत' पाठ के आधार पर लिखिए कि काशी में कौन-कौन सी दो बातें एक-दूसरे की पूरक रही है?

11) निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1x5=5

तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला
प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ
आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ
तभी मुख्य गायक को ढांढ़स बंधाता
कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर
कभी-कभी वह योंही दे देता है उसका साथ
यह बताने के लिए कि वह अकेला नहीं है
और यह कि फ़िर से गाया जा सकता है

(क) तारसप्तक किसे कहते हैं?

(ख) मुख्य गायक का उत्साह अस्त होने की स्थिति में किस दौर से गुजरना पड़ता है?

(ग) मुख्य गायक की आवाज़ निरुत्साहित होने पर किस प्रकार की हो जाती है;

(घ) 'आवाज में राख जैसा कुछ गिरता हुआ' में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) संगतकार योंहीसाथ देता है, क्यों?

अथवा

कितना प्रेमाणिक था उस का दुख
लड़की को दान देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूंजी हो
लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास तो होता था
लेकिन दुख बांचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की
कुछ तुक और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की

(क) वाक्यांश में किसके दुख को प्रमाणिक कहा गया है?

(ख) कन्यादान करते हुए मां को बेटी अपनी अंतिम पूंजी क्यों लग रही थी?

(ग) लड़की अभी सयानी नहीं थी, पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

(घ) काव्यांश के कवि का नाम लिखिए।

(ङ) काव्यांश की भाषा क्या है?

12) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

2x5=10

(क) परशुराम की बातें सुनकर विश्वामित्र मन-हीमन क्या सोच रहे थे? 'राम-लक्ष्मण-परशुरामसंवाद' के आधार पर बताइए।

(ख) 'छाया मत छूना' कविता का कवि जीवन में क्या चाहता था? उसकी चाह पूरी न होने पर वह अपने मन को क्या कह रहा है और क्यों?

(ग) स्त्री जीवन में वस्त्र और आभूषणों का क्या महत्व है? 'कन्यादान' कविता के संदर्भ में उत्तर दीजिए।

(घ) मुख्य गायक एवं संगतकार के मध्य जुड़ी कड़ी अगर टूट जाए तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं? स्पष्ट कीजिए।

(ङ) राम एवं विश्वामित्र की स्वभावगत विशेषताएं 'राम-लक्ष्मण-परशुरामसंवाद' के आधार पर बताइए।

(13) आज विज्ञान का दुरुपयोग किस रूप में हमारे सामने आ रहा है? यह मानव जाति के लिए कितना घातक है? 'मैं क्यों लिखता हूं'? पाठ के आधार पर उत्तरदी जिए।

5

खण्ड-'घ' (रचना कौशल)

14) दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए

10

(क)भ्रष्टाचार

- भ्रष्टाचार क्या है
- विभिन्न रूप व कारण
- सरकार का नियंत्रण व झूठे दावे
- समाधान के उपाय
- विरोध और जागृति

(ख) नैतिक पतन: देश का पतन

- नैतिकता
- मानव की श्रेष्ठता की कसौट
- समाज की उन्नति की आधार शिला
- नैतिक पतन के दुष्परिणाम एवं वर्तमान स्थिति
- समाधान

(ग) विद्यार्थी के जीवन में इंटरनेट की भूमिका

- इंटरनेट क्या है?
- इंटरनेट का विस्तार
- फ़ायदे एवं नुकसान
- अश्लीलता एवं किशोर मन
- अनिवार्यता के रूप में इंटरनेट
- निष्कर्ष

15) अपने मोहल्ले में बढ़ते हुए अपराधों की रोकथाम के लिए अपने क्षेत्र के थानाध्यक्ष को एक पत्र लिखिए

5

अथवा

फ़ैशन में समय और धन का अपव्यय करने वाली अपनी छोटी बहन को प्रेरणाप्रद पत्र लिखिए।

16) दिए गए गद्यांश का सार लिखिए:

5

प्रत्येक नागरिक के कुछ कर्तव्य और कुछ अधिकार होते हैं। नागरिकों का सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि वे अपने देश की सुरक्षा एवं शांति के लिए सदा प्रयत्नशील रहें। इसका अर्थ यह है कि यदि देश पर कोइ विदेशी आक्रमण हो या देश में आंतरिक उपद्रव हो, तो उस समय वेदु विधा में पड़े बिना सरकार की सहायता करें क्यों कि सरकार ही विदेशी आक्रमण का सामना और आंतरिक उपद्रव का दमन कर सकती है। प्रजातंत्र में सरकार जनता की अपनी चुनी हुई होती है, इसलिए हर प्रकार से उन्हें सरकार का हाथ मजबूत करने का प्रयत्न करना चाहिए।

सरकार का काम धन से चलता है। यह धन सरकार को विभिन्न करों से प्राप्त होता है, इसलिए हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह सरकार द्वारा लगाए गए करों को इमांनदारी से और प्रसन्न्ता से चुकएं। कर देने में बेइमानी करना सरकार को और देश को नुकसान पहुंचाना है। संसार में ऐसा कोई देश या- समाज नहीं है, जहां भले लोगों के साथ-साथ दुष्ट और समाज-विरोधी लोग ना रहते हों। इन समाज-विरोधी तत्वों का दमन करना पुलिस तथा सरकार का काम है। परंतु अकेली पुलिस तब तक अपना काम सफ़लता पूर्वक नहीं कर सकती, जब तक उसे नागरिकों का पूरा सहयोग प्राप्त न हो। अत: समाज-विरोधी तत्वों का दमन करने में पुलिस को सहायता देना हर एक नागरिक का कर्तव्य है।

उत्तर - निर्देशिका **पूर्णांक -90**

खण्ड -क (अपठित बोध)

1) क - (4) ख -(3) ग–(1) घ - (2) ङ - (1) 1X5=5
2) क - (1) ख -(4) ग - (3) घ -(4) ङ - (2) 1X5=5
3) क - (4) ख - (1) ग - (1) घ - (4) ङ - (2) 1X5=5
4) क - (4) ख - (2) ग - (4) घ - (1) ङ - (1) 1X5=5

खण्ड -ख (व्याकरण बोध)

5) (क) - मिश्र वाक्य (ख)- जो मैना पिंजरे में है वह फ़ल खा रही है । 1x3=3
(ग) - एक सेठ ने मोहन को पढ़ाया-लिखाया और उसे नौकरी भी दिलवाई
6) (क) - पक्षियों से रात को सोया जाता है। (ख) भाव वाच्च 1x4=4
(ग) - तुम यह भार नहीं उठा पाओगे। (घ) मुझे मोबइल से सूचित किया गया।
7) (क) - अनिश्चय वाचक सर्वनाम , एक वचन , पुल्लिंग , कर्ता कारक 1x4=4
(ख) - गुणवाचकविशेषण , एकवचन , पुल्लिंग , विशेष्य ‘पानी’
(ग) - भाववाचकसंज्ञा , एकवचन , पुल्लिंग , कर्ताकारक
(घ) - सकर्मक क्रिया , बहुवचन , भूतकाल , पुल्लिंग
8) (क) - शांतरस (ख) करुणरस (ग) वियोग श्रृंगार रस (घ) वात्सल्य रस 1x4=4

खण्ड---ग - (साहित्य बोध)

9) (क)- (3) (ख)- (2) (ग)- (1) (घ)- (4) (ङ)- (4) 1x5=5

अथवा

(क)- (1) (ख)- (4) (ग)- (3) (घ)- (2) (ङ)- (1)

10) क - लेखिका बचपन में लंगड़ी टांग, गुड्डे-गुड़ियों का ब्याह, काली टीलों, पकड़म-पकड़ाई जैसे खेल खेलती थी। उसने पतंग और गुल्ली-डंडा भाइयों के साथ खेला और शेष सहेलियों तथा बड़ी बहन सुशीला के साथ भी कई खेल खेले। उन्हें खेलने के लिए केवल पड़ोस तक जाने की अनुमति थी।

2x5=5

ख - अपने जमाने के पड़ोस कल्चर ने लेखिका मन्नुभंडारी के कर्म को काफ़ी हद तक प्रभावित किया। लेखिका ने अपनी आरंभिक कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले से लिए। इतने वर्षों बाद भी वेस भी पात्र अपनी भाषा तथा भाव-भंगिमा के साथ उपस्थित हुए। 'महाभोज' उपन्यास में लेखिका के मोहल्ले के 'दासाहव' का परिस्थितियां पाते ही जीवंत हो उठना इसका प्रमाण है।

ग - सीता और शकुंतला ने अपने परित्याग को अन्याय समझा और ऐसे कटुवचन कहे। अन्याय का विरोध करने के लिए ऐसे वचनों का मुख से निकलना स्वाभाविक ही है। हर व्यक्ति का स्वाभिमान है। न यह पढ़ने-लिखने का परिणाम है, गंवारपन का और न अकुलीनता का। इसलिए दिवेदीजी ने सीता और शकुंतला के कटुवचनों को उचित ठहराया है।

घ - लेखक ने आग और सुई-धागे के अविष्कार को सबसे बड़ा माना है क्योंकि आग ने खाद्यानों को खाने योग्य बनाया और सुई-धागे ने वस्त्र जगत में क्रांति की, जिससे मनुष्य तन ढकने लगा।

ङ - विश्वनाथ तथा बिस्मिल्लाखां एक दूसरे के पूरक हैं। मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर गुलाल की गंगा जमुना संस्कृति एक-दूसरे के पूरक हैं।

11) क) संगीत में ध्वनि की उंचाई और निचाई के आधार पर तीन सप्त कमाने जाते हैं। यदि साधारण ध्वनि है तो उसे 'मध्यसप्तक' कहते हैं। यदि ध्वनि मध्यसप्तक से ऊपर है तो उसे 'तारसप्तक' कहते हैं।

ख) मुख्य गायक का उत्साह अस्त होने की स्थिति में प्रेरणा साथ छोड़ देती है। आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ प्रतीत होता है।

1x5=5

ग) मुख्य गायक की आवाज़ निरुत्साहित होने पर बैठ जाती है। उसकी आवाज़ भर्रा जाती है।

घ) उपमा अलंकार

ङ) संगतकारयों ही साथ इसलिए देता है कि मुख्य गायक को यह न लगे कि वह अकेला है। वही गाया जा चुका राग फ़िर से गाया-जा सकता है।

12) क) परशुरामजी की बातें सुनकर विश्वामित्र मन-ही-मन सोच रहे थे कि मुनि को हरा ही हरा सूझ रहा है, किंतु यह लौहमयी (फ़ौलादी) खांड है, गन्ने की खांड नहीं। मुनि अब भी नासमझ बने हुए हैं। इनके प्रभाव को नहीं समझ रहे। अर्थात परशुराम श्रीराम - लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिए बालक समझ रहे थे। वे उनकी असीम शक्ति - ववीरता से अपरिचित थे।

ख) कवि जीवन मे यश, वैभव, मान- सम्मान तथा पूंजी चाहता था। उसकी चाह पूरी न होने पर वह अपने को कह रहा है कि ये सब मृग तृष्णा के समान हैं। इनके पीछे भागना व्यर्थ है और अब तुम यथार्थ का पुजन करो, क्योंकि विगत समय को याद करके दुख-दुगना हो जाएगा।

ग) स्त्री जीवन में वस्त्र और आभूषण आवश्यक अंग बन गए हैं। स्त्रियां प्राय: इनके प्रति आकर्षित हो जाती हैं परंतु ये सभी जीवन के बंधन हैं, मोह - माया के जाल में फ़साने वाले हैं वास्तविकता तो यह है कि ये सब आकर्षण मात्र भ्रम हैं।

घ) मुख्य गायक एव संगतकार के मध्य की कड़ी अगर टूट जाए तो उस के कारण गायन भली-भांति पूर्ण नहीं हो पाएगा। जब मुख्य गायक सुरों से भटके गाया उसका गला बैठैने लगेगा तो स्थायी को संभालने वाला कोइ नहीं होगा।

ङ) राम अत्यंत विनम्र स्वभाव के थे। वे बड़ों की आज्ञा का पालन करते थे। वे सदैव उनका आदर करते थे। राम अत्यधिक धैर्यवान और मृदुभाषी थे। विश्वामित्रजी संयमि तथा धैर्यवान थे। परशुरामजी के क्रोधित होने पर भी शांत रहे और मन-ही मन हंसते भी रहे।

13) आज विज्ञान का दुरुपयोग निम्न रूप में हमारे सामने आ रहा है -

(1) विज्ञान द्वारा प्रदत सुख-साधनों से मानव भोगवादी व अकर्मण्य होता जा रहा है।

(2) विनाशकारी हथियार बनाए जा रहे हैं।

(3) आतंकवादी हिंसा में विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा है।

(4) आंतरिक रूप से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को आतंकित व भयभीत रखने की तैयारी कर रहा है।

(5) विज्ञान के कारण ही प्रदूषण बढ़ रहा है।

(6) वैज्ञानिक परीक्षणों से लिंग-निर्धारण कर भ्रूण-हत्या की जा रही है।

खण्ड --- 'घ' (रचनाकौशल)

14) विषय के प्रतिपादन में सामयिक संदर्भों के आकलन, मौलिक विचारशीलता और भाषा सामर्थ्य का विवेकानुसार मूल्यांकन्।

15) पत्र-प्रारूप और विषय-उपस्थापन

16) सार का शीर्षक - आदर्श नागरिक

सार:- प्रजातांत्रिक देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि आंतरिक अथवा बाहय संकट के समय अपनी सरकार को पूर्ण सहयोग देकर उसे शक्तिशाली बनाएं। सरकार कर से प्राप्त धन पर ही निर्भर करती है। नागरिकों को चाहिए कि वे राष्ट्र - हित के लिए स्वेच्छा तथा ईमानदारी से कर चुकाएं। समाज-विरोधी तत्वों के दमन में पुलिस की सहायता करना भी आदर्श नागरिक का ही कार्य है।

समाप्त